आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जुलाई, 2016
वर्ष : 74 ★ अंक : 07 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जुलाई, 2016 ★ आषाढ़, 2073

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

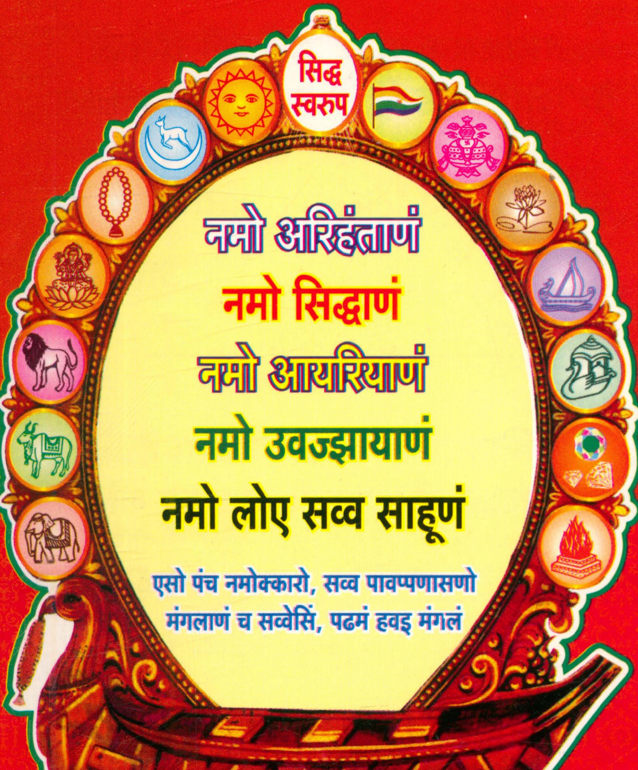

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

\- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

\- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

\- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

ACHARYA SRI KAILASSAGAR... GYANMANDIR

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : editorjinvani@gmail.com
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रज़िस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

इइ एस धम्मे अक्खाए,
कविलेणं च विसुद्धपण्णेणं।
तरिहिंति जे उ काहिंति,
तेहिं आराहिया दुवे लोगा।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.20

यही धर्म था कहा कपिल ने,
निर्मल प्रज्ञा-धारक ने।
जो धर्म करे, वे भवसिन्धु तरें,
दुय लोक आराधे उस नर ने।।

जुलाई, 2016
वीर निर्वाण संवत्, 2542
आषाढ़, 2073

वर्ष 74 अंक 7

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	प्रतिसंलीनता	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-सम्पादक	9
विचार-वारिधि-	ज्ञान-बिन्दु	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	11
प्रवचन-	पापों का परित्याग ही आत्म-सेवा है	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	12
	वचन से अधिक खतरनाक हैं मन के दुष्परिणाम	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	15
	नमो लोए सव्वसाहूणं : अमृत शिक्षा (2)	-महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.	18
प्रासंगिक -	बालक के साथ ज्यादती कहाँ ?	-श्री मनोहरलाल जैन	17
	स्वच्छ भारत अभियान में शौचालय : एक चिन्तन	-श्री अरुण मेहता	34
आरोग्य-	जीवनशैली और आरोग्य	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	20
अध्यात्म-	मन के जीते जीत	-श्री दुलीचन्द जैन	21
तत्त्व-चर्चा-	जिज्ञासा-समाधान	-संकलित	27
युवा-स्तम्भ -	अनुमोदना और रोगप्रतिरोधक क्षमता	-डॉ. श्वेता जैन	30
नारी-स्तम्भ -	दूसरे से तुलना न करें	-श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा	32
काव्य-	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (22)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	37
धारावाहिक -	लग्न की वेला (20)	-आचार्यश्री उमेशमुनिजी 'अणु'	39
बाल-स्तम्भ -	अंधानुकरण से बचें	-व्याख्यानी श्री ज्ञानमुनिजी म.सा.	41
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	45
युवक-परिषद्-	शिविर रिपोर्ट	-श्री नमन मेहता	47
	छात्रवृत्ति योजना	-संकलित	122
चातुर्मास-सूची-	रत्नसंघ के संत-सतियों की चातुर्मास सूची	-संकलित	57
विचार-	विचारणीय बिन्दु	-श्री पीरचन्द चोरडिया	123
कविता/गीत-	विचार क्रान्ति	-डॉ. रमेश मयंक	31
	लक्ष्य रहे सदा वीतरागता का	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	33
	धर्म का मर्म	-सुश्री रक्षिता मेहता	56
अनुभव-	स्वाध्याय एवं सत्संग हैं कल्याणमित्र	-श्रीमती आशा धीरेन्द्र बांठिया	70
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	71
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	116

सम्पादकीय

प्रतिसंलीनता

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

कषायों पर विजय प्राप्त करने के लिए तप एक बहुत बड़ा साधन है। अनशन, ऊनोदरी, भिक्षाचर्या, रस परित्याग, कायक्लेश एवं प्रतिसंलीनता नामक बाह्यतप में भी यह साधना की जाती है तो प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान एवं व्युत्सर्ग में भी कषाय-विजय की साधना सम्पन्न होती है। प्रतिसंलीनता भी कषाय-विजय की साधना में महत्त्वपूर्ण साधन है। प्रतिसंलीनता का तात्पर्य है इन्द्रिय, मन आदि को बाह्य विषयों एवं पाप से विमुख कर आत्मविशुद्धि में लगाना। इन्द्रिय एवं मन का विषयों में लीन होना अनुभव में आता है तथा इसका दुःखद परिणाम भी भोगने को मिलता है। इस दुःखद परिणाम से बचने के लिए इन्हें विषय-कषाय से हटाकर आत्मसाधना में लगाना अपेक्षित है। औपपातिकसूत्र में प्रतिसंलीनता के चार प्रकार प्रतिपादित हैं- 1. इन्द्रिय प्रतिसंलीनता, 2. कषाय प्रतिसंलीनता, 3. योग प्रतिसंलीनता, 4. विविक्त शय्यासन सेवनता।

इन्द्रियाँ प्रायः बाह्य विषयों के ग्रहण एवं सेवन में लगी रहती हैं, इन्हें बाह्य विषयों में भटकने से रोकना अथवा विषयों के प्रति राग-द्वेष का निग्रह करना **इन्द्रिय प्रतिसंलीनता** है। इन्द्रियाँ पाँच प्रकार की हैं, अतः इनकी प्रतिसंलीनता भी पाँच प्रकार की कही गई है- '**इंदियपडिसंलीणया पंचविहा पण्णत्ता। तं जहा-1 सोइंदियविसयप्पयारनिरोहो वा, सोइंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, 2 चक्खिंदियविसयप्पयारनिरोहो वा, चक्खिंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, 3 घाणिंदियविसयप्पयारनिरोहो वा, घाणिंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, 4 जिब्भिंदियविसयप्पयारनिरोहो वा, जिब्भिंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, 5 फासिंदियविसयप्प-यारनिरोहो वा, फासिंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोस-निग्गहो वा, से तं इंदियपडिसंलीणया।** औपपातिकसूत्र में प्रतिपादित इन्द्रियप्रतिसंलीनता का यह निरूपण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें इन्द्रियों का विषयों में विचरण करने के निरोध के साथ विषयों के प्रति होने वाले रागद्वेष के निग्रह को प्रतिसंलीनता कहा गया है। इसके अनुसार इन्द्रिय-प्रतिसंलीनता के पाँच भेदों का संक्षिप्त स्वरूप इस प्रकार हैं- **1. श्रोत्रेन्द्रिय विषय-प्रचार निरोध-** श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में भटकने का निरोध अथवा श्रोत्रेन्द्रिय के विषय रूप मधुर-शब्दों के प्रति राग एवं कटु शब्दों के प्रति होने वाले द्वेष पर निग्रह करना। **2. चक्षुरिन्द्रिय**

विषय-प्रचार-निरोध अथवा चक्षुरिन्द्रिय विषय के रूप में प्राप्त मनोज्ञ या प्रिय पदार्थों के प्रति राग तथा अमनोज्ञ या अप्रिय पदार्थों के प्रति द्वेष का निग्रह। 3. **घ्राणेन्द्रिय विषय-प्रचार-निरोध** अथवा घ्राणेन्द्रिय के विषय के रूप में प्राप्त सुगन्धयुक्त पदार्थों के प्रति राग एवं दुर्गन्धयुक्त पदार्थों के प्रति द्वेष का निग्रह। 4. **रसनेन्द्रिय विषय-प्रचार-निरोध** अथवा रसनेन्द्रिय के विषयरूप स्वादिष्ट पदार्थों के प्रति राग एवं स्वादहीन पदार्थों के प्रति द्वेष का निग्रह। 5. **स्पर्शनेन्द्रिय विषय-प्रचार- निरोध** अथवा स्पर्शनेन्द्रिय के विषयरूप अनुकूल पदार्थों के प्रति राग एवं प्रतिकूल पदार्थों के प्रति द्वेष का निग्रह। इस प्रकार इन्द्रिय प्रतिसंलीनता में दो कार्य किए जाते हैं एक तो ज्ञानपूर्वक मन के द्वारा इन्द्रियों को निगृहीत किया जाता है। दूसरा इन्द्रियों के विषयों के अनुकूल लगने पर उनके प्रति राग करने से बचा जाता है तथा प्रतिकूल लगने पर द्वेष करने से बचा जाता है।

जो इन्द्रियाँ विषयों के प्रति लीन बनी हुई थीं, उन्हें प्रतिसंलीनता तप के द्वारा विषयों के प्रति आकर्षण से विमुख बनाया जाता है। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि इन्द्रियों से सुनना, देखना, सूँघना आदि बन्द कर दिया जाता है। वस्तुतः इन्द्रियों से इन विषयों के ग्रहण में रुचि का नाश किया जाता है। यदि विषयों को ग्रहण भी किया जाता है तो उनके अनुकूल होने पर राग एवं प्रतिकूल होने पर द्वेष को नियन्त्रित किया जाता है। यही इन्द्रिय प्रतिसंलीनता तप है। राग-द्वेष से पूर्ण रहितता तो यहाँ नहीं होती है, किन्तु सजगता रखते हुए राग एवं द्वेष से बचा जाता है।

प्रतिसंलीनता का दूसरा भेद **कषाय प्रतिसंलीनता** है। इसमें कषायों का निरोध किया जाता है अथवा उन्हें विफल करने का प्रयत्न किया जाता है। कषाय प्रतिसंलीनता के चार प्रकार हैं-

1. **क्रोध प्रतिसंलीनता-** इसमें क्रोध का उदय होने पर उसका निरोध किया जाता है अथवा उदय प्राप्त क्रोध को विफल बनाया जाता है। यह साधना का एक प्रयोगात्मक स्वरूप है। यह तभी संभव है जब साधक क्रोध के क्षणों में भी सजगता का अनुभव करे तथा क्रोध को विफल करने के उपायों का प्रयोग करने में सक्षम हो।
2. **मान प्रतिसंलीनता-** मान कषाय का उदय होने पर उसका निरोध करना अथवा उदय प्राप्त मान को विफल करना मान कषाय प्रतिसंलीनता है। मनुष्य प्रायः अभिमान के नशे में रहता है। उसे यह भी ज्ञात नहीं होता कि उस पर मान कषाय हावी है। यह प्रतिसंलीनता तप मान कषाय को जीतने का मार्ग प्रशस्त करता है, इसमें भी सजगता एवं मान को विफल करने के उपायों का प्रायोगिक बोध आवश्यक है।

3. **माया प्रतिसंलीनता–** माया का उदय होने पर उसका निरोध करना एवं उदय प्राप्त माया को निष्फल करना माया प्रतिसंलीनता तप है।

4. **लोभप्रतिसंलीनता–** लोभ कषाय का उदय होने पर उसका निरोध करना अथवा उदय प्राप्त लोभ को निष्फल करना लोभ प्रतिसंलीनता तप है। माया एवं लोभ कषाय को जीतने के लिए भी सजगता एवं उपायों का प्रायोगिक ज्ञान अपेक्षित है।

कषाय-विजय को साधना का प्रमुख लक्ष्य माना जाता है, जिसमें कषाय प्रतिसंलीनता सहायक है। जब-जब हमें क्रोध, मान, माया एवं लोभ कषाय के उदय का अनुभव हो तो उसे विफल बनाने का प्रयत्न करना चाहिए अथवा इस तरह सजग होकर जीना चाहिए कि इनका उदय हमारे अहित का कारण न बने एवं उत्पत्ति क्षण में इनके निरोध का पुरुषार्थ प्रारम्भ हो जाए।

योग प्रतिसंलीनता प्रतिसंलीनता का तीसरा भेद है। मन-वचन-काया की प्रवृत्ति को योग कहा जाता है। अतः योगप्रतिसंलीनता के भी तीन प्रकार हैं- **1. मनोयोग प्रतिसंलीनता–** इसमें अकुशल मन का निरोध किया जाता है तथा कुशल मन को प्रकट किया जाता है। कुशल मन से तात्पर्य है शुभ मनोयोग। अहिंसा, सत्य, अचौर्य आदि में मन का लगना शुभ मनोयोग है, यही कुशलमन है तथा इसके विपरीत प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान आदि में मन का लगना अकुशल मनोयोग है। साधक व्यक्ति प्रतिसंलीनता तप के अन्तर्गत अकुशल मन का निरोध करने के साथ कुशल मन को पुष्ट करता है। **2. वचनयोग प्रतिसंलीनता–** अकुशल वचन का निरोध एवं कुशल वचन का प्रकटीकरण वचनयोग प्रतिसंलीनता तप है। इसमें मिथ्या भाषण, कटु एवं कर्कश वचन, क्रोध एवं मान से संवलित वचन, माया एवं लोभ से युक्त वचन का परिहार किया जाता है। सत्य, मधुर एवं हितकर वचनों का प्रयोग किया जाता है। **3. काययोग प्रतिसंलीनता–** कच्छप की भाँति अपने हाथ-पैर आदि अंगों को सुस्थिर कर इन्द्रियों का गोपन करते हुए सारे शरीर की बाह्य प्रवृत्तियों को साधना में स्थिर कर लेना काययोग प्रतिसंलीनता है। काया के द्वारा कुचेष्टाएँ भी होती हैं तो सत् प्रयत्न भी। कुचेष्टाओं का त्याग कर सत्प्रयत्न करना काय योग की प्रतिसंलीनता है।

हमें तीन प्रमुख साधन मिले हुए हैं- मन, वचन एवं काया। इनका प्रयोग बुरे एवं अच्छे दोनों कार्यों में हो सकता है। इनका सुप्रणिधान भी होता है एवं दुष्प्रणिधान भी। मन में असत् एवं मलिन चिन्तन भी होता है तो सर्वहितकारी चिन्तन भी। इनमें से हमें प्रथम को छोड़कर द्वितीय प्रकार के चिन्तन को अपनाना चाहिए। इसी प्रकार वचन एवं काया का प्रयोग भी

विवेकपूर्वक सम्हलकर करना चाहिए।

विविक्त-शयनासन-सेवनता प्रतिसंलीनता का चतुर्थ प्रकार है। शय्या, आसन आदि उपकरण जब स्त्री, पशु आदि से पृथक् होकर सेवन किये जाते हैं तो इसे विविक्त शयनासन सेवनता कहा जाता है। उत्तराध्ययन सूत्र में बाह्य तप के भेदों में छठे भेद का नाम संलीनता बताकर मात्र विविक्त शय्यासन को ही संलीनता तप के रूप में प्रतिपादित किया गया है। इसका तात्पर्य है कि यह एक महत्त्वपूर्ण तप है। उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन में प्रश्न किया गया कि विविक्त शय्यासन से क्या लाभ होता है? उत्तर में कहा गया- **''विवित्त-सयणासणयाए णं चरित्त-गुत्तिं जणयइ। चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगंतरए मोक्खभाव-पडिवन्ने अट्ठविह-कम्मगंठिं निज्जरेइ।''** विविक्त शयनासनता से साधक का चारित्र सुरक्षित रहता है। चारित्ररक्षित जीव विविक्त आहारी, दृढ़ चरित्री एवं एकान्त में रत होकर मोक्षभाव को प्राप्त करता है तथा ज्ञानावरणादि अष्टविध कर्मों की निर्जरा करता है। विविक्त शयनासन का आगमों में भिन्न-भिन्न प्रकार से कथन हुआ है। उत्तराध्ययन में श्मशान, शून्यागार, वृक्षमूल आदि स्थानों पर रहने को विविक्त शयनासन सेवनता माना गया है। औपपातिकसूत्र में आराम, उद्यान, देवकुल, सभा स्थान, प्याऊ, पणितगृह, पणितशाला, स्त्री, पशु, नपुंसक के संसर्ग से रहित बस्तियों में संयमी पुरुषों द्वारा ग्राह्य निर्जीव प्रासुक स्थान में रहना विविक्त शयनासन बताया गया है। प्रभु महावीर ऐसे एकान्त निर्जन स्थानों में रहकर घण्टों ध्यान-साधना में निमग्न रहते थे। पीठ-फलक आदि का उपयोग किए बिना वे साधना करते थे, अब इनका उपयोग भी आगमसम्मत है। वस्तुतः बाह्य सम्बन्धों से अपने को पृथक् करने पर आत्मसाधना में लीन हुआ जा सकता है। जो बाह्य सम्बन्धों में रचा-पचा है वह आत्मसाधना नहीं कर पाता है।

एकान्त का भी साधना की दृष्टि से विशेष महत्त्व है। एकान्त की पाठशाला में मौन का पाठ पढ़कर भी कोई सत्य के रहस्य को जान सकता है। बाह्य हाहाकार एवं विषयों की विद्यमानता में चित्त को स्थिर कर कषाय-विजय की साधना में आगे बढ़ना कठिन होता है, इसलिए विषय-कषायों एवं काम-वासना के निमित्तों से भी दूर रहना आवश्यक होता है।

पूर्व में बांधे गए पापकर्मों को निर्जरित करने का महत्त्वपूर्ण साधन है- तप। करोड़ों भवों के संचित कर्म भी तप के द्वारा निर्जरित किए जा सकते हैं- **'भवकोडिसंचियं कम्मं, तवसा णिज्जरिज्जइ।'** तप के सभी भेद कर्म-निर्जरा में सहायक हैं। इनके द्वारा अपने को साधा जाता है। इन्द्रिय एवं मन को नियन्त्रित किया जाता है। प्रतिसंलीनता तप का भी उस कड़ी में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रतिसंलीनता साधना का एक महत्त्वपूर्ण सोपान है जिसे अपनाकर कोई भी आत्मसाधना के सोपानों पर आगे बढ़ सकता है। ❖

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

से किं तं आमोयरियाओ? दुविहा पण्णत्ता। जं जहा- 1. दव्वोमोयरिया य 2. भावोमोयरिया य। से किं तं दव्वोमोयरिया? दुविहा पण्णत्ता। तंजहा- 1. उवगरणदव्वोमोयरिया य 2. भत्तपाणदव्वोमोयरिया य।

से किं तं उवगरणदव्वोमोयरिया? उवगरणदव्वोमोयरिया तिविहा पण्णत्ता। तंजहा- 1. एगे वत्थे 2. एगे पाए, 3. चियत्तोवकरणसाइज्जणया, से तं उवगरणदव्वोमोयरिया। से किं तं भत्तपाणदव्वोमोयरिया? भत्तपाणदव्वो-मोयरिया अणेगविहा पण्णत्ता। तं जहा- अट्ठकुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाणे अप्पाहारे..... एत्तो एगेण वि घासेण ऊणयं आहारं माहारेमाणे समणे णिग्गंथे णो पकामरसभोइत्ति वत्तव्वं सिया। से तं भत्तपाणदव्वोमोयरिया, से तं दव्वोमोयरिया।

से किं तं- भावोमोयरिया? भावोमोयरिया अणेगविहा पण्णत्ता। तं जहा- अप्पकोहे, अप्पमाणे, अप्पमाए, अप्पलोहे, अप्पसद्दे, अप्पझंझे। से तं भावोमोयरिया, से तं ओमोयरिया। -औपपातिक सूत्र, तपनिरूपण

अर्थ- अवमोदरिका क्या है? उसके दो प्रकार हैं, यथा- 1. द्रव्य अवमोदरिका, 2. भाव अवमोदरिका। 1. द्रव्य अवमोदरिका क्या है? वह दो प्रकार की कही गई है, यथा- 1. उपकरण द्रव्य अवमोदरिका, 2. भक्तपान द्रव्य अवमोदरिका।

उपकरण द्रव्य अवमोदरिका क्या है? उपकरण द्रव्य अवमोदरिका तीन प्रकार की कही गई है, यथा- 1. एक वस्त्र, 2. एक पात्र, 3. चयनित उपकरण। यह द्रव्य उपकरण अवमोदरिका है।

भक्तपान द्रव्य अवमोदरिका क्या है? भक्तपान द्रव्य अवमोदरिका अनेक प्रकार की कही गई है, यथा- कुक्कुटी के अण्डे के प्रमाण/ परिमाण वाले आठ कवल आहार ग्रहण करना (अल्पाहार) अवमोदरिका है, इतने ही परिमाण वाले बारह कवल आहार ग्रहण करना अपार्ध अवमोदरिका है, सोलह कवल आहार ग्रहण करना अर्ध अवमोदरिका है, चौबीस कवल आहार ग्रहण करना चौथाई अवमोदरिका है, इकत्तीस कवल आहार ग्रहण करना किंचित् न्यून अवमोदरिका है। मुर्गी के अण्डे के परिमाण जितने 32 ग्रास भोजन प्रमाण प्राप्त पूर्ण आहार है। उससे एक ग्रास भी कम आहार करने वाला श्रमण निर्ग्रंथ अधिक आहार करने वाला नहीं माना गया है। भाव अवमोदरिका क्या है? भाव अवमोदरिका

अनेक प्रकार की कही गई है, यथा- अल्पक्रोध, अल्पमान, अल्प माया, अल्प लोभ, अल्प शब्द, अल्प झंझा। यह भाव अवमोदरिका है। यह अवमोदरिका का निरूपण है।

विवेचन- बाह्य तप के छह प्रकारों (अनशन, अवमौदर्य/ऊनोदरी, भिक्षाचर्या, रस परित्याग, कायक्लेश एवं प्रतिसंलीनता) में अवमौदर्य का दूसरा स्थान है। महत्त्व की अपेक्षा से यह अनशन से भी बढ़कर है। अवमौदर्य अथवा ऊनोदरी शब्द का अभिप्राय है उदर में जितनी भूख है, उससे कम आहार ग्रहण करना। औपपातिकसूत्र के अनुसार अवमौदर्य का इससे भी व्यापक अर्थ है, ऐसा वहाँ निरूपित अवमौदर्य के भेदों से स्पष्ट होता है।

औपपातिक सूत्र में अवमौदर्य के दो प्रकार निरूपित हैं- 1. द्रव्य अवमौदर्य, 2. भाव अवमौदर्य। द्रव्य अवमौदर्य के दो प्रकार हैं- 1. उपकरण द्रव्य अवमौदर्य, 2. भक्तपान द्रव्य अवमौदर्य। अवमौदर्य शब्द प्रायः भक्तपान अर्थात् आहार-पानी का भूख से कम ग्रहण करना अर्थ किया जाता है। यह प्रसिद्ध अर्थ है। किन्तु यहाँ उपकरणों का सेवन/ग्रहण भी आवश्यकता से कम करने को उपकरण अवमौदर्य कहा गया है। जीवन में संयम एवं अपरिग्रह की साधना इसी प्रकार आगे बढ़ती है। जीवन में भोजन के अतिरिक्त वस्त्र, भवन, पात्र, शय्या आदि अनेक उपकरणों एवं उपधियों की आवश्यकता होती है। इनके प्रयोग में भी निरन्तर न्यूनता लाना उपकरण अवमौदर्य है। साधु-साध्वी की दृष्टि से औपपातिक सूत्र में उपकरण अवमौदर्य के तीन प्रकार कहे गए हैं- 1. एक पात्र रखना, 2. एक वस्त्र रखना एवं 3. चयनित उपकरण रखना।

भक्तपान अवमौदर्य के अनेक प्रकार कहे गए हैं, यथा- आठ कवल (ग्रास) आहार ग्रहण करना, बारह कवल आहार ग्रहण करना, सोलह कवल आहार सेवन करना, चौबीस कवल आहार ग्रहण करना, इकत्तीस कवल आहार ग्रहण करना आदि। सामान्यतः पुरुष का आहार 32 कवल एवं स्त्री का 28 कवल माना गया है। उससे कम आहार लेना अवमोदरिका/अवमौदर्य/ऊनोदरी तप है। यहाँ पर यह स्पष्ट करना होगा कि जब 32 कवल आहार की भी भूख न हो एवं 16 कवल में भी पूरा पेट भर जाए तो उसे अवमोदरिका तप नहीं कहा जा सकेगा। भूख एवं शरीर की आवश्यकता से कम भोजन ग्रहण करना ही अवमोदरिका है। सम्भव है 32 कवल का विधान सम्पूर्ण दिवस में एक बार भोजन करने की अपेक्षा से किया गया हो, क्योंकि वहाँ कवल को कुक्कुटी (मुर्गी) के अण्डे के आकार जितने ग्रास को एक कवल कहा गया है। हम प्रायः इससे छोटा ग्रास ही ग्रहण करते हैं। भूख से कम खाने के कई लाभ हैं- 1. शरीर में आलस्य एवं प्रमाद का न आना, 2. स्वास्थ्य का ठीक रहना, 3. आहार का व्यर्थ न जाना, 4. संयम का पालन निर्विघ्न रूप से होना आदि। अति आहार से रोग उत्पन्न होते हैं, किन्तु कम खाने से नहीं। **(शेषांश पृष्ठ 29 पर)**

विचार-वारिधि

ज्ञान-बिन्दु

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- जीवन-रथ को कुमार्ग से बचाकर सन्मार्ग पर चलाने के लिए और अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए योग्य गुरु की अनिवार्य आवश्यकता है।
- अनुकूल निमित्त मिलने पर जीवन बड़ी तेजी के साथ आध्यात्मिकता में बदल जाता है।
- जिस प्रकार खाने से ही भूख मिटती है, भोजन देखने या भोज्य-पदार्थों का नाम सुनने से नहीं; इसी प्रकार धर्म को जीवन में उतारने से, जीवन के समग्र व्यवहारों को धर्ममय बनाने से ही वास्तविक शान्ति प्राप्त हो सकती है।
- ज्ञानी पुरुष का पौद्गलिक पदार्थों के प्रति मोह नहीं होता।
- जो लोग आहार के सम्बन्ध में असंयमी होते हैं, उत्तेजक भोजन करते हैं, उनके चित्त में काम-भोग की अभिलाषा तीव्र रहती है। वास्तव में आहार-विहार के साथ ब्रह्मचर्य का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- मनुष्य के मन की निर्बलता जब उसे नीचे गिराने लगती है तब व्रत की शक्ति ही उसे बचाने में समर्थ होती है।
- व्रत अंगीकार नहीं करने वाला किसी भी समय गिर सकता है। उसका जीवन बिना पाल की तलाई जैसा है, किन्तु व्रती का जीवन उज्ज्वल होता है।
- एक मनुष्य अगर अपने जीवन को सुधार लेता है तो दूसरों पर उसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता।
- पुद्गल एवं पौद्गलिक पदार्थों की ओर जितनी अधिक आसक्ति एवं रति होगी, उतना ही आन्तरिक शक्ति का भान कम होगा।
- सम्यग्दृष्टि जीव में दर्शनमोहनीय का उदय न होने से तथा चारित्रमोहनीय की भी तीव्रतम शक्ति (अनन्तानुबन्धी कषाय) का उदय न रहने से मूर्च्छा-ममता में उतनी सघनता नहीं होती जितनी मिथ्यादृष्टि में होती है।
- जब तक परिग्रह पर नियन्त्रण नहीं किया जाता और उसकी कोई सीमा निर्धारित नहीं की जाती तब तक हिंसा आदि पापों का घटना प्रायः असंभव है।
- जब तक मनुष्य इच्छाओं को सीमित नहीं कर लेता तब तक वह शान्ति नहीं पा सकता और जब तक चित्त में शान्ति नहीं, तब तक सुख की संभाव कैसे की जा सकती है?

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

पापों का परित्याग ही आत्म-सेवा है

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा अपने आचार्यपद रजत साधना वर्ष की पूर्णाहुति पर अजमेर (राज.) में ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी 27 मई 2016 को फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व कार्याध्यक्ष एवं कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा किया गया है।**-सम्पादक**

आज पुण्यशालियों के बीच मेरे बोलने का अवसर आया है। तीर्थंकरों की भाषा में कहूँ, आगम की भाषा में कहूँ तो जन्म-मरण की अनेक गतियाँ या घाटियाँ पार करने पर प्रबल पुण्य से यह मानव जन्म हमें मिला। दुर्लभ मानव-भव मिलने के बाद आर्यक्षेत्र मिलना और भी दुर्लभ है। परिपूर्ण इन्द्रियाँ मिलना भी अत्यन्त दुर्लभ है। उसके पश्चात् धर्म-श्रवण दुर्लभ है। उस पर श्रद्धा करना और अन्त में उस श्रद्धा के आधार पर प्रबल पुरुषार्थ करना उत्तरोत्तर दुर्लभ है। आपको इन दुर्लभताओं में से अनेक की प्राप्ति हुई है। इसलिए मैं पुण्यशाली शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ। आपमें से कई पुण्यशाली ऐसे हैं जो अपने उन माता-पिता की सेवा में तन-मन-धन से सब काम छोड़कर लगे हैं जो माता-पिता चलने-फिरने में असमर्थ हैं या फिर जो कौमा में काफी दिनों से पहुँच चुके हैं, ऐसे माँ-बाप की सेवा करके वे अपने ऊपर उनके ऋणों से उऋण होने का स्तुत्य कार्य करते हैं। एक माँ ऐसी भी देखी जो 27 वर्षों से अपने पुत्र की सार-सम्भाल कर रही है। माँ को यह मालूम है कि यह खुद असहाय है, बुढ़ापे में मेरी सेवा नहीं कर सकेगा फिर भी वह अपना कर्त्तव्य समझ कर सेवा कर रही है। मैंने ऐसे लोग भी देखे हैं जिनके बच्चों का सहज विकास नहीं हुआ है। वे या तो शरीर से विकलांग हैं या उनके मस्तिष्क का बचपन से ही विकास नहीं हुआ है, जिससे न तो वे कोई अपना काम ही कर सकते हैं, न दूसरों का ही। कहने का तात्पर्य यह है कि वे कोई काम के नहीं रह गये हैं, फिर भी उन बच्चों के माँ-बाप वर्षों तक, कभी-कभी तो 25 वर्षों से अधिक समय से, बिना किसी अपेक्षा के उन बच्चों की देखभाल या सेवा कर रहे हैं। उनकी सेवा वृत्ति बहुत अच्छी है।

प्राकृत भाषा में रचित वैराग्य शतक हमें प्रेरित कर रहा है-

''अह दुक्खिआइँ तह, भुक्खियाइँ जह, चिंतिआइँ, डिंभाइँ।
तह थोवंपि न अप्पा, विचिंतिओ जीव! किं भणिमो।।''

'हे जीव! तू मोह के वश होकर रात-दिन पर की चिन्ता कर रहा है कि यह मेरा पुत्र है, यह मेरी स्त्री है, ये मेरे स्वजन भूखे-प्यासे हैं। इनको अन्न-वस्त्र न होने का दुःख है। ऐसी अनेक चिन्ताएँ तू रात-दिन करता है, परन्तु तू अपनी आत्मा की चिन्ता नहीं करता कि मैंने अपनी आत्मा का प्रयोजन कितना साधा ताकि मेरी आत्मा इस भव में एवं परभव में सुखी हो। आत्मा के लिए तूने रात-दिन में कितना समय दिया? ऐसा थोड़ा आत्महित का विचार तूने नहीं किया कि तेरी आत्मा की गति क्या होगी, ऐसा विचार तू करता ही नहीं। तूने सबके लिए सोचा, परन्तु अपने लिए अर्थात् अपनी आत्मा के लिए भी कभी सोचा कि यह आत्मा अपने जन्म-मरण के दुःख से कैसे छूटे? जहाँ-जहाँ भी तुमने अनन्तों बार जन्म लिए, सभी जगह तो तुमने केवल पर के लिए ही सोचा, तू पर में रमा रहा। भगवान् कहते हैं- 'तिन्नाणं तारयाणं' अर्थात् पहले स्वयं तिरो, फिर दूसरों को तैरना सिखाओ।

आत्म-सेवा सबसे बड़ी सेवा है। आत्मसेवा का अर्थ है पापों का परित्याग। पापों का परित्याग कर यह आत्मा एक दिन पाप मुक्त होकर जन्म-मरण की व्याधि से पार पा सकती है। आज यह दुर्लभ मानव भव मिला है, यह कहीं यूं ही नहीं बीत जाये। इस जन्म में व्रत-ग्रहण कर पापों का परित्याग करके देखो। अहिंसा धर्म का पालन कर अभयदाता बनकर तो देखो। तुम करुणा करोगे तो सारा जग तुम्हारे साथ मैत्री भाव रखेगा। तुम सत्य का आचरण करोगे, सत्य बोलोगे तो सारा जग तुम्हारा विश्वास करेगा। कोई तुम पर संशय नहीं करेगा।

अपनी आत्मा का कल्याण करने के लिए हे जीव! तू कब तैयार हुआ, शायद कभी नहीं, इसलिए अभी तू चारों गतियों में भटक रहा है। अभी तक तो तुमने नरक के द्वार ही खोले है। इस जन्म में आकर भी क्या यही करोगे? यहाँ आकर भी पाप के सिवाय क्या किया? क्या पाप के बिना तेरा कोई धन्धा नहीं हो सकता? तूने अभी सबके लिए सोचा है, स्वयं के लिए कब सोचेगा? क्या जब आयुष्य समाप्त होकर नीच गति में जायेगा तब? उस समय तो तेरे पास समय ही नहीं बचेगा। जो जानता नहीं है उसे तो मार्ग बताया जा सकता है, लेकिन जो जानता है कि यह पाप है फिर भी उसे छोड़ने को तैयार नहीं, यह बड़ी विचित्र दयनीय स्थिति है।

यहाँ आकर आप सब त्यागियों के गीत गा रहे हो, परन्तु आपके मन में पाप का त्याग करने की भावना क्यों नहीं जाग रही है? यदि आप सब इस लोक और परलोक में सुख पाना चाहते हो तो पाँच बातों का पालन करो- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। ये ऐसे सार्वभौमिक सिद्धान्त हैं, जिन्हें आत्म-कल्याण के लिये दुनिया के सभी धर्मों ने अपना समर्थन दिया है। तुमको भी इसका पता है, फिर भी जानबूझकर क्यों खड्डे में गिर रहे हो। जो समय बीत गया सो बीत गया, उसकी चिन्ता करनी छोड़ो। जो अब बचा है

उसका सदुपयोग कर लो। पाप कर्मों को छोड़कर यदि भावना शुद्ध हो तो जीव थोड़े से समय में भी मुक्ति प्राप्त कर सकता है जैसा कि मरुदेवी माता को भावना के शुद्धतम स्तर पर पहुँचने पर एक अन्तर्मुहुर्त में ही केवलज्ञान हो गया।

आप गुणगान ही करते रहेंगे या स्वयं गुणी भी बनेंगे। आप क्यों नहीं गुणी बन सकते हो? क्यों नहीं व्रत धारण कर सकते हो? आप कोई देवता तो हो नहीं जो व्रत धारण नहीं कर सकते। आप तो मानव भव में हो जिसमें जीव को व्रत धारण की योग्यता होती है। आज ही प्रतिज्ञा करो कि महाव्रती बनेंगे। महाव्रती नहीं तो अणुव्रती बनेंगे और पूरे अणुव्रती नहीं बने तो बारह व्रतों में से एक या अधिक व्रत धारण करेंगे। एक व्रत भी आपको तार सकता है। मेघरथ राजा और सत्यवादी हरिश्चन्द्र का उदाहरण आपके सामने है। उन्होंने एक-एक व्रत का पालन किया और इतना समय बीत जाने पर भी उन्हें याद किया जाता है। आप सच बोलो सारी दुनियाँ आपका विश्वास करेगी। यदि ईमानदारी से चरित्र की रक्षा करके चलते हो तो रजवाड़े में जहाँ पुरुष वर्ग का जाना निषिद्ध है, वहाँ जाने से कोई रोकेगा नहीं। आप दयावान हैं, दूसरों पर दया करोगे तो साँप भी सीने पर होकर निकल जायेगा तो भी भय नहीं फटकेगा। हे मानव! अगर तू अब भी नहीं समझा तो कब समझेगा? पाप सन्ताप बढ़ाने वाले हैं, उनके सेवन से नीच गति का अधिकारी बनेगा। आप स्वयं त्यागी बनेंगे तो तिन्नाणं तारयाणं बन जायेंगे। पर की सेवा करने के साथ निज आत्मा की सेवा करना नहीं भूलना है। पापों का परित्याग निज आत्मा की सेवा है। यह जिनवाणी केवल उपदेश देने के लिए नहीं है। यह ग्रहण की जानी चाहिए।

भक्ति बहुत अच्छी चीज़ है, परन्तु पापों का परित्याग किये बिना भक्ति भी तार नहीं सकती। अगर केवल भक्ति ही तार सकती होती, तो भगवान् महावीर का परम भक्त कौणिक नरक में क्यों जाता? वह नरक में इसलिए गया क्योंकि उसने पापों को छोड़ा नहीं। उसने केवल भगवान् का गुणगान ही किया। आप मेरे चरणों में नहीं, भगवान् के चरणों में जाओ, लेकिन पापों को पहले छोड़ना होगा, तभी कल्याण सम्भव है।

मैंने गुरु कृपा से पाप छोड़े, इसलिए मैं सुखी हूँ और समाधि में हूँ। चूंकि मैं सुखी हूँ और समाधि में हूँ, मैं भी आपको यही रास्ता बताने आया हूँ कि जीव सुखी कैसे बनेगा? आप गुणगान तो कर रहे हो, परन्तु स्वयं खाली हो, अधूरे हो। मेरी प्रेरणा है कि आप भी सुखी बनो और दूसरों को भी सुख पहुँचाओ। यह दम्भ कभी मत पालना कि मैंने दूसरों को कितने प्रत्याख्यान करवा दिये हैं। देखना यह आवश्यक है कि स्वयं ने कितने प्रत्याख्यान किये हैं। अपनी बात समाप्त कर रहा हूँ यह कहकर कि पापों को छोड़ कर सुखी बनो, परिवार को सुखी बनाओ और अपने कल्याण के साथ संघ की दीप्ति को उज्ज्वल करो। ▪

प्रवचन

वचन से अधिक खतरनाक हैं मन के दुष्परिणाम

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा महावीर भवन, अलवर में 29 अक्टूबर, 2015 को फरमाए इस प्रवचनांश का संकलन-सम्पादन श्री ओमप्रकाशजी गुप्ता, राजस्थान टाइम्स, अलवर द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

36 साल पहले किसी ने आपको कोई गलत शब्द कहे। गालियाँ बकी अथवा चुभने वाले तीखे बोल बोले। सामाजिक धरातल पर नीचे दिखाया। अपमानित या बदनाम किया। सारी इज्जत आपकी मिट्टी में मिला दी। क्या वे अपशब्द-गाली-गलौच-बेइज्जती-नीचा दिखाना याद आ रहा है अथवा अभी तक स्मृति में बना हुआ है? यदि याद है अथवा याद करके भीतर में कूढ़ रहे हैं, प्रतिशोध के भाव आ रहे हैं तो यह सबसे खतरनाक स्थिति है। जो हुआ वह तो 36 वर्ष पहले चन्द अशोभनीय वचनों के द्वारा हुआ, परन्तु उनको मन के द्वारा याद रखने की प्रवृत्ति जीवन में बहुत अशुभ कर्म बंध का कारण बनती है। तभी कहा जाता है- वचन से भी अधिक खतरनाक हैं मन के दुष्परिणाम। वचन बहुत वर्षों पूर्व कहे गए, मगर उसके जख्मों का बना रहना ही भव-भव बिगाड़ करता है। अपने इस अज्ञान की अवस्था के कारण इंसान बेवजह इतने अशुभ कर्मों का बंध करता आया है जिसका उसे उनका भान तक नहीं रहता। वह यह मानता ही नहीं कि 36 साल पहले किसी ने उसे गाली दी या नीचा दिखाया, उसे याद रखना और बदला लेने की सोचना पाप कर्म बढ़ाना है।

विड़म्बना का पहलू यही तो है कि कोई इन्सान द्रव्य हिंसा कभी इतनी अधिक नहीं करता जितनी अपने स्वयं के भावों से करता आ रहा है, किन्तु भाव हिंसा को वह पाप ही नहीं मानता। तभी भीतर वैर व द्वेष की गांठ निरन्तर गहरी होती जाती है और उससे उत्पन्न गलत विचार, हिंसक सोच तथा उसे नीचा दिखाने की मानसिकता से अशुभ कर्म का जखीरा लगातार बढ़ता जाता है। ध्यान, सामायिक की साधना, धर्म कथा-स्वाध्यांय इसीलिए जरूरी हैं ताकि उनसे भावों के अशुद्ध परिणामों को तिलांजलि देने का मार्ग सहजता से प्राप्त हो सके। अपने भावों को शुद्ध करना ही संसार की सबसे श्रेष्ठ साधना है। जिसके भाव बिगड़ गए, बिगड़ रहे हैं, बिगाड़ने की तैयारी है, वह पापों से कभी मुक्त नहीं हो पाता। ध्यान रखना- भीतर में नफरत-घृणा-द्वेष और बदला लेने के भाव यदि कायम बने रहे तो, अगले भवों में भी दुःखों से कभी छुटकारा संभव नहीं है। प्रकृति के सिद्धान्त एवं

कुदरत के परिणामों को जो नहीं मानता, वही तो संसार में अनन्त काल से 84 लाख जीव योनियों में घूमता हुआ दर-दर की ठोकरें खाता है। अतः मन के परिणामों को संभालें और उन्हें दुरुस्त करने में जुटें। आगम की वाणी इस दिशा में सम्बल देने में सक्षम है।

प्रकृति के शाश्वत नियमों को ठुकराने वाले को फिर प्रकृति भी ठोकर ही मारती है। व्यक्ति अपनी दुर्दशा का शिकार एवं जिम्मेवार खुद ही होता है। दूषित, संकीर्ण और अज्ञान से युक्त मन को परिष्कृत करने की दिशा में यदि अपनी नासमझी-हठधर्मी व हेकड़ी जैसी प्रवृत्ति को त्यागकर सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र के प्रति जागरूक व भीतर से उत्सुक बनने की तरफ कदम नहीं बढ़ाए, तो पता नहीं आगे फिर मौका मिले भी या नहीं। चूंकि मनुष्य पर्याय दुबारा मिलना निश्चित नहीं है। अतः जब तक मन के परिणाम खराब बने हुए रहते हैं, तब तक शुभ प्रवृत्तियों का उदय संभव नहीं हो पाता। मन ही समूचे पाप-कर्मों को संचय करने का मुख्य करण है और बिगड़े व बेलगाम मन को नियंत्रित व पावन बनाने की साधना उसे पवित्र कर सकती है।

मन को पावन बनाने का सबसे आसान तरीका यही है कि हम विकथाओं से बचें और धर्म कथाओं में अपने चित्त को लगाएँ। संसार की तेरी-मेरी और विकथाओं ने ही तो मन को गंदा बनाया है। उसी से फिर राग-द्वेष-घृणा-स्वार्थ की मानसिकता निरन्तर बढ़ती जाती है और जीव फिर दुर्दशा का शिकार होता आया है। धर्म का मकसद कोई कर्मकांड नहीं, सिर्फ अपनी आत्म-शुद्धि ही उसका परम ध्येय है। आत्म-शुद्धि बिना निर्मल मन के कभी नहीं हो पाती। जब मन पवित्र बनता है, तो चित्त से अपने आप शुद्धता का अमृत छलकने लगता है। कर्मों के ढ़ेर क्षय होना फिर बहुत सरल व सहज हो जाता है, लेकिन हमारे भीतर पहले भावों की शुद्धि, कर्मों की निर्जरा, मुक्ति की चाहत की टीस तो पैदा हो। अपनी सोच में सरलता-विनम्रता-सहजता और सहन करने की क्षमता के साथ क्षमा के भाव तो उत्पन्न हों। शरीर से ममत्व हटे और मन के परिणामों को सुन्दर बनाने में रोम-रोम के भीतर उत्साह जगे। सरलता से युक्त मन वाला ही अपने दोषों को देख पाता है। वहीं जिसका मन कुटिलता और विषमता से भरा रहता है, वह कर्मों की ठोकरें खाने को मजबूर है। जिस प्रकार इन्सान अपने शरीर को तंदुरुस्त-नीरोग-स्वस्थ-हृष्ट-पुष्ट व सुन्दर-सुडौल बनाने के प्रति सचेत रहने का प्रयत्न करता है, उतना ही मन को नीरोगी बनाने में भी प्रयत्नशील हो। मन यदि दूषित है, द्वेष व नफरत की गन्दगी से युक्त है, तो हम निश्चित ही घोर पाप कर्मों का संचय बढ़ा रहे हैं।

मन ही बन्धन एवं मुक्ति का साधन है। इसे मैला रखने पर यह दुःख उत्पन्न करता है तथा इसे निर्मल बनाने पर सुख का अनुभव होता है। जो अपने मन की दिशा को ज्ञान के साथ अच्छाई की ओर मोड़ लेते हैं, दूसरे के वचनों का बुरा नहीं मानते हैं वे ही दुःख को विदा कर

पाते हैं। कर्म सिद्धान्त तो खुद को खुद आईना दिखाता है। आप अच्छा बनें या न बनें, यह किसी परमात्मा पर निर्भर नहीं वरन् आप पर ही निर्भर करता है। आत्मा और परमात्मा का ज्ञान बांटने वाले साधु-संत-साध्वी सिर्फ राह बता सकते हैं, मगर चलना खुद को ही होता है। अपने अन्तर के सामर्थ्य को जगाने वाले मन के परिणामों की राह को जो सही दिशा में मोड़ देते हैं और वे ही एक दिन परम सुखी हो पाते हैं। ■

बालक के साथ ज्यादती कहाँ?

श्री मनोहरलाल जैन

मुनिश्री ने युवक की जिज्ञासा को देखकर भगवान महावीर का चरित्र पढ़ने को दिया। पुस्तक पढ़ने के पश्चात् अन्यान्य जिज्ञासाओं के साथ युवक ने मुनिश्री से एक जिज्ञासा यह भी प्रकट की कि भगवान ने तो स्वयं तीस वर्ष की उम्र में दीक्षा ली, किन्तु एक बालक अतिमुक्त कुमार को मात्र आठ वर्ष की उम्र में दीक्षा कैसे दे दी?

मुनिश्री ने फरमाया-"लगता है पुस्तक को ध्यान से नहीं पढ़ा गया। भगवान ने स्वयं अन्य मुनिजनों से कहा था कि अतिमुक्त कुमार चरम शरीरी हैं, उनकी आशातना मत करो। चरम शरीरी का तात्पर्य होता है वे इसी भव में मोक्ष जायेंगे। जब उसी भव में मोक्ष में जाना है तो वे संसार में रहकर पहले कर्म बांधे तथा उसके बाद बंधे कर्मों से छुटकारा पाने के लिये प्रयत्न करे। इससे अच्छा है सुखे सुखे मोक्ष में जाए।"

युवक का प्रतिप्रश्न था। भगवान केवलज्ञानी थे, इसलिये अतिमुक्त कुमार को दीक्षा दी, यह तो ठीक था, किन्तु आज भी बालदीक्षा क्यों हो रही है?

युवक को मुनिश्री ने समझाया कि भाई! आठ वर्ष की न्यूनतम आयु भगवान द्वारा ही निर्धारित की गई है। इसका कारण आप और हम सभी जानते हैं। यदि आठ वर्ष की अल्प आयु में ही दीक्षा लेने के भाव जागृत हो जाते हैं तो यह स्पष्ट प्रतिभासित होता है कि दीक्षार्थी की आत्मा मोक्ष के अधिक निकट पहुँच चुकी है, इसलिये ऐसी हलुकर्मी आत्मा को दीक्षित करना उचित होगा।

प्रसंगवश यह उल्लेख करना चाहूँगा कि माता-पिता बालक की भावना को जाने बिना अपनी इच्छा से उसे कान्वेण्ट स्कूल का भारी पाठ्यक्रम पढ़ने के लिए भेज देते हैं। क्या यह बालक के साथ ज्यादती नहीं है? दूसरी ओर बालक स्वेच्छा से दीक्षा लेना चाहता है तथा माता-पिता उसे साधु जीवन की कठिनाइयाँ बताकर पूरी तरह डराना चाहते हैं। दीक्षा लेने से रोकने में अपनी पूरी ताकत लगा देते हैं। जरा सोचिये बालक के साथ कहाँ ज्यादती हो रही है? *-74, महावीर मार्ग, धार-454001 (मध्यप्रदेश)*

प्रवचनांश

नमो लोए सव्वसाहूणं : अमृत शिक्षा (2)

महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की प्रशिष्या एवं व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. की शिष्या महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. प्रतिदिन 'एक कदम धर्म की ओर' कक्षा को सम्बोधित करते हैं। विभिन्न कक्षाओं में 'नमो लोए सव्वसाहूणं' पद के सम्बन्ध में उन्होंने जो विचार व्यक्त किए, उनका संकलन कर श्रावकरत्न श्री अशोकजी कवाड़, चेन्नई ने हमें उपलब्ध कराया है।**-सम्पादक**

9. जिन्होंने भाई-बहन से नाता तोड़ दिया और संसार की समस्त जीव राशि को उसी मातृ भाव से मानने वाले हो गए, अपनों में पराये के दर्शन व परायों में अपनों के दर्शन, अत: "नमो लोए सव्व साहूणं"।
10. जिन्होंने प्राण त्याग तक के प्रसंग तक रात्रि भोजन यावत् रात्रि में एक बूँद पानी ग्रहण तक का त्याग कर दिया, अत: "नमो लोए सव्व साहूणं"।
11. जो अपने शरीर को विष्ठा का पिण्ड मानकर अनासक्त रहते हैं एवं साधना के लिए इसे नाव बनाते हैं, अत: "नमो लोए सव्व साहूणं"।
12. जिन्होंने जिनाज्ञा व गुरूआज्ञा में पूरे मन को जोड़ दिया तथा मनमानी-मनमौजी पने को पूर्णतया छोड़ दिया, अत: "नमो लोए सव्व साहूणं"।
13. जो सहज में कई बार Electric switch board के पास खड़े होते हैं, देह से पसीने टपकते रहते हैं फिर भी switch on करने का किंचित् विचार तक जिनमें उत्पन्न नहीं होता, अत: "नमो लोए सव्व साहूणं"।
14. जो जीवन पर्यन्त अस्नान व्रत के धारी हैं तथा बहते पसीने को गंगा-यमुना-सरस्वती का पावन जल समझते हैं, अत: "नमो लोए सव्व साहूणं"।
15. वर्ण पाँच होते हैं, हर वर्ण की अनन्त पर्याय है, जिन्होंने वस्त्रों में चार वर्ण के प्रत्येक पर्याय का त्याग मन से भी कर दिया, अत: "नमो लोए सव्व साहूणं"।
16. जिन्हें संसार का Trend Fashion Style कुछ भी, कभी भी आकर्षित नहीं करते, अत: "नमो लोए सव्व साहूणं"।

17. जो जीवन भर कांच में तो दूर पानी आदि तरल पदार्थों में भी अपना चेहरा नहीं देखते मात्र अन्तर रूप के दर्शन में व्यस्त हैं अतः "नमो लोए सव्व साहूणं"।
18. जिनके जीवन से पुद्गलों व परिस्थितियों के प्रति पसंद एवं नापसंद का अन्तर ही समाप्त हो गया, अतः "नमो लोए सव्व साहूणं"।
19. जिन्हें गुरु की फटकार में भी समाधि रहती है तथा उनके (गुरु के) तीक्ष्ण रवैये में भी उन्हें मधुर सप्त स्वर लहरी प्रतीत होती है, अतः "नमो लोए सव्व साहूणं"।
20. जिनके जीवन में साता की साधना कुछ नहीं फिर भी सुखसाता पूछने पर आनंद भरी मुखमुद्रा से स्वीकृति प्रदान करते हैं, अतः "नमो लोए सव्व साहूणं"।
21. जिन्हें कभी स्थूल क्रोध-मान-माया-लोभ स्पर्श ही नहीं करता, अतः "नमो लोए सव्व साहूणं"।
22. जिनका संसार में कोई नहीं फिर भी कभी अकेलेपन की अनुभूति नहीं करते, अतः "नमो लोए सव्व साहूणं"।
23. जिन्हें बियालीस दोष टालकर आहार लाना होता है, उसके पश्चात् भी तप रूप में अनेक क्लिष्ट त्याग करते हैं, अतः "नमो लोए सव्व साहूणं"।
24. जो परिपूर्ण स्वावलम्बी होकर जीते हैं, सामर्थ्य रहते किसी के सहयोग की अपेक्षा नहीं रखते, अतः "नमो लोए सव्व साहूणं"।
25. जो मात्र शुभ भावों के मालिक होते हैं, अशुभ भावों को देश निकाला देते हैं, अतः "नमो लोए सव्व साहूणं"।
26. जो किसी जीव का प्राण हरण करना तो दूर उसे क्लेश, पीड़ा, असाता हो ऐसा कोई कार्य नहीं करते, अतः "नमो लोए सव्व साहूणं"।
27. जो देव-मनुष्य-तिर्यंच सम्बन्धी कष्ट आने पर भी सहते हैं, पर किसी से कुछ नहीं कहते तथा कष्ट देने वालों के प्रति भी विपुल आत्मीय भाव रखते हैं, अतः "नमो लोए सव्व साहूणं"।
28. जो विहार में आये कंकरों के चुभने पर भी ऐसा महसूस करते हैं, मानो फूलों पर चल रहे हैं, अतः "नमो लोए सव्व साहूणं"।
29. पैरों में चलते-चलते खून आने पर भी जो यह नहीं सोचते खून आ रहा है, अपितु सोचते हैं कर्म बहकर जा रहे हैं, पैरों के घिसने पर यही सोचते हैं कि मेरे भव-भ्रमण के समस्त कारण घिस रहे हैं ऐसे उत्कृष्ट भाव रखते हैं, अतः "नमो लोए सव्व साहूणं"।

(क्रमशः)

आरोग्य

जीवनशैली और आरोग्य

श्री पी. शिखरमल सुराणा

जीवनशैली और आरोग्य का सहसम्बन्ध है। शाकाहार, शुद्धाहार, सात्त्विक आहार, व्रत-उपवास, अस्वाद (आयंबिल), प्राकृतिक जीवनशैली, मन और आत्मा की पवित्रता जैसी अनेक बातों का स्वास्थ्य के साथ भी सम्बन्ध है। प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. युगलकिशोर चौधरी की पुस्तक 'बुढ़ापा और बीमारियों से बचने के उपाय' पढ़ने से मेरी उपर्युक्त धारणा पुष्ट होती गई। यहाँ आरोग्य विषयक कुछ बिन्दु प्रस्तुत हैं -

1. हमारा शरीर तीन मुख्य भागों से बना है - आत्मा, मन और हाड़-मांस का स्थूल शरीर। हर एक भाग का दूसरे भागों से गहरा सम्बन्ध है। तीनों एक दूसरे से गहरे मिले हुए और जुड़े हुए हैं। अगर एक भाग को कष्ट होता है तो सारे शरीर को कष्ट होता है। चिकित्सा तभी सफल होगी, जब सारा शरीर नीरोग बनाया जायेगा।
2. बीमार एवं गंदे शरीर को साफ/ताजा/नवीन बनाने के लिए तेज बीमारी होती है। हमें दृढ़ता से प्रकृति की आवाज पर ध्यान देना चाहिए। क्योंकि प्रकृति सब स्वयं ठीक करेगी।
3. हम रोगों के कारण समझें कि वे प्रकृति के खेल हैं और शरीर की सफाई के लिए जरूरी हैं। अत: दवा की गिरफ्त में नहीं आना चाहिये, वरना लाभ के बदले हानि ही होगी। दवाइयों से छोटे-छोटे रोग दीर्घ रोग बन कर जीवन को दुखदायी बना देते हैं। चिकित्सा की बजाय स्वास्थ्य रक्षा अधिक सरल और महत्वपूर्ण है।
4. मन और आत्मा के मंदिर इस शरीर को पूर्णतया नीरोग रखने से ही सांसारिक व पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण हो सकती हैं। रोगी मनुष्य कभी महामना या महात्मा बनकर कोई बड़ा कार्य नहीं कर सकता।
5. मांस, अण्डा, मछली, शोरबा, शराब आदि को शरीर के लिए हितकर समझना भयानक भूल है। ये हानिकारक पदार्थ शरीर में जहरीला माद्दा पैदा करते हैं, जिनके इकट्ठे होने पर रोग या मृत्यु नजदीक आते हैं। इनका सेवन कभी नहीं करना चाहिये।
6. शाकाहार में सभी गुण हैं। इससे सभी तरह के विकार दूर होते हैं। इससे बादीपन भी दूर होता है तो दुबलापन भी। वही भोजन वजन घटा भी देता है और वही बढ़ा भी देता है।
7. ब्रह्मचर्य ही आरोग्य और दीर्घ जीवन का मूल है। इसके नाश के साथ आयु, आरोग्य व बल भी नष्ट हो जाते हैं। परन्तु ब्रह्मचर्य की साधना भी स्वाभाविक भोजन पर निर्भर है। प्रकृति-विरुद्ध भोजन करके ब्रह्मचर्य-साधन की चेष्टा ढोंग के सिवा कुछ भी नहीं है। **(क्रमशः)**

-राष्ट्रीय अध्यक्ष : अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (जोधपुर)
इंटरनेशनलज लॉ सेंटर, 61-63, डॉ. राधाकृष्णन रोड़, मैलापुर, चेन्नई-600004

अध्यात्म

मन के जीते जीत

श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्य रत्न'

मन : इन्द्रियों का स्वामी

संसार में सफलता प्राप्त करने के लिए- चाहे वह भौतिक जगत् की हो या आध्यात्मिक जगत की सबसे आवश्यक बात है कि मनुष्य का अपने मन पर नियंत्रण हो। अगर मन मजबूत है, उदात्त भावनाओं से भरा है, उत्साहपूर्ण है तो सफलता अवश्यम्भावी है। अगर मन दुर्बल है, भीरू है, अनुत्साही है तो निश्चित रूप से जीवन में विफलता लाएगा। इसीलिए कहा गया- 'मन के हार है, मन के जीते जीत।'

मन को इतना महत्त्व क्यों दिया गया? क्योंकि उसके हाथ में इन्द्रियों की लगाम है। पाँचों इन्द्रियों (आँख, नाक, कान, मुँह और त्वचा) के विषय मनुष्य को प्रति क्षण आकर्षित करते रहते हैं। अगर इन्द्रियाँ मन के नियंत्रण में हैं तो वे मनुष्य को उन्मार्ग से बचा देती हैं। निम्न श्लोक में इस बात को बहुत सुंदर ढ़ंग से समझाया गया है-

''आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः।।''

-कठोपनिषद्, 1.3.3-4

अर्थात् यह शरीर मानो एक रथ है, जीवात्मा इसका रथी (स्वामी) है। सुबुद्धि या विवेक इस रथ को चलाने वाला सारथी है। इन्द्रिय रूपी घोड़ों को चलाने के लिए मार्ग उनके विषय हैं जिनकी ओर इन्द्रियाँ दौड़ती हैं। ज्ञानी पुरुष विवेक के द्वारा इन्द्रियों की लगाम को बड़ी दृढ़तापूर्वक पकड़ कर उनको विषयों के रास्ते में इस प्रकार सावधानीपूर्वक ले जाते हैं कि जिससे वे उन्मार्ग में न भटकते हुए मनुष्य को मुक्ति की ओर पहुँचा देती हैं।

मन की भूमिका:

जैन धर्म में जीवन की साधना तीन योग व तीन करण से करने का विधान है। तीन योग यानी मन, वचन और कर्म तथा तीन करण यानी स्वयं करना, दूसरों से करवाना एवं करने वाले का अनुमोदन करना। अगर मन के भाव या परिणाम शुद्ध नहीं हैं तो क्रिया का कोई लाभ नहीं होता। मनुष्य जो भी अच्छे या बुरे कर्म करता है, उसके भाव आत्मा के द्वारा

पहले मन में उत्पन्न होते हैं। अगर मन के शुभ भाव हैं तो क्रिया अशुभ हो ही नहीं सकती। मन की भूमिका ऐसी होनी चाहिए कि वह शरीर, इन्द्रिय, धन आदि को सत्कर्म में नियोजित कर सके। यदि मन एवं इन्द्रियों की प्रवृत्ति आत्माभिमुख होगी तो मुक्ति सम्भव है। कारण होंगे। उपनिषद् में कहा गया- "**मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः। बन्धाय विषयासक्तं, मुक्तये निर्विषयं स्मृतम्।।**" अर्थात् मन ही मनुष्य के बन्धन और मुक्ति का कारण है। विषयासक्त मन बन्धन का कारण है और आसक्ति रहित मन उसकी मुक्ति का हेतु है।

कठिनाई यह है कि मनुष्य का मन बड़ा अस्थिर है, वह क्षण भर भी शान्त नहीं रहता। उसमें संकल्प विकल्प आते ही रहते हैं। मन की गति बड़ी तेज है, दुनिया की कोई शक्ति उसका मुकाबला नहीं कर सकती। वह बहुत ही तेज गति से कभी यहाँ तो कभी वहाँ भटकता रहता है। भगवान महावीर ने मन को बंदर की उपमा दी है-

"जह मक्कडओ खणमवि मज्झत्थो अच्छिउं न सक्केइ।
तह खणमवि मज्झत्थो, विसएहिं विणा न होइ मणो।।"

अर्थात् जैसे बंदर क्षण भर भी शान्त होकर नहीं बैठता है, वैसे ही मन भी विषय-वासना मूलक संकल्प-विकल्प से क्षण भर के लिए भी शान्त नहीं होता।

अशुभ एवं शुभ संकल्प

मन में जब अशुभ संकल्प आते हैं तो वे उसे पतन की ओर तथा शुभ संकल्प उसे उत्कर्ष की ओर ले जाते हैं। शास्त्रों का एक बोधपूर्ण प्रसंग है। प्रसन्नचन्द राजर्षि ने सारे वैभव को त्याग कर युवा अवस्था में दीक्षा ली और ध्यान व तपस्या करने लगे। एक बार राजा श्रेणिक भगवान् महावीर के दर्शन करने आए। उन्होंने नगर के बाहर प्रसन्नचंद मुनि को गम्भीर ध्यान में निमग्न पाया। उन्होंने भगवान् से पूछा-'प्रभो! अगर इस समय ये महर्षि शरीर को त्याग दें तो वे किस गति को प्राप्त करेंगे?' भगवान् ने उत्तर दिया- 'राजन्! वे नरकगामी होंगे।' राजा श्रेणिक को आश्चर्य हुआ। थोड़ी देर बाद पुनः प्रश्न किया- 'भगवन् अभी वे काल करें तो कहाँ उत्पन्न होंगे।' भगवान ने कहा- 'सर्वार्थसिद्ध विमान में।' श्रेणिक ने भगवान से कारण पूछा तो उन्होंने स्पष्ट किया कि ध्यानस्थ मुनि कुछ समय पूर्व अपने पुत्र के मोह में आकर शत्रु राजा से मानसिक युद्ध कर रहे थे। बाद में जब उन्हें ध्यान आया कि वे तो मुनि हैं। अब संसार से क्या लेना-देना? उन्होंने पश्चात्ताप किया और शुद्ध धर्मध्यान में विचरण करने लगे। अतः सर्वार्थ सिद्ध विमान में जाने की योग्यता प्राप्त की। कुछ ही समय पश्चात् दुन्दुभि बजी। राजा श्रेणिक ने भगवान् से इसका कारण पूछा। भगवान् से सारी घटना बताकर कहा कि राजर्षि को केवलज्ञान प्राप्त हुआ है। मन के अशुभ और

शुभ विचार मनुष्य को किस प्रकार पतन व उत्कर्ष की ओर ले जाते हैं, इसका यह एक अनुपम उदाहरण है। भगवान् महावीर ने मन के बारे में कहा-

''अणेग चित्ते खलु अयं पुरिसे।
से केयणं अरिहइ पूरइत्तए।।''

-आचारांग सूत्र, 1.3.2.6

अर्थात् यह अनेकचित्त है, अनेकानेक कामनाओं के कारण मनुष्य का मन बिखरा हुआ रहता है। वह अपनी सभी कामनाओं की पूर्ति क्या करना चाहता है, मानो छलनी को जल से भरना चाहता है।

अगर कोई ऐसा यंत्र हो जिससे मनुष्य के मन में जो विचार उठते हैं, वे प्रकट हो सकें तो अच्छे-अच्छे साधक भी आश्चर्यचकित हो जायेंगे कि ऐसे बुरे विचार उनके मन में क्यों आ जाते हैं।

''मन पापी, मन लालची, मन कपटी, मन चोर।
मन के मते न चालिये, पल-पल में यह और।।''

मन की चंचलता

महान् संत कवि कबीरदास ने कहा-

''मन पाँचों के वश पड़ा, मन के वश नहीं पाँच।
जित देखू तित दौं लगी, जित भागूं तित आँच।।''

अर्थात् यह बड़ा दुर्भाग्य है कि मन पाँचों इन्द्रियों के वश में पड़ कर पापों में भटक गया है। इन्द्रियाँ मन के वश में नहीं है, इसलिए जिधर देखता हूँ उधर अतृप्ति की ज्वाला है, जिधर् भागता हूँ उधर ही आँच (ताप) आ रहा है।

कुछ लोग जब भगवान् का भजन करते हैं या अन्य धार्मिक क्रियाएँ करते हैं तब भी उनका मन वश में नहीं रहता, नाना प्रकार के संकल्प आते रहते हैं, कबीरदास कहते हैं-

''माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुँह माँही।
मनुआ फिरत बाजार में, यह तो सुमिरन नाहीं।।''

अर्थात् माला तो हाथ में सरक रही है और प्रभु के नाम के उच्चारण के लिए जीभ भी मुँह में व्यायाम कर रही है। परन्तु भगत का मन कहाँ है? वह तो बाजार में भटक रहा है। यह तो प्रभु का स्मरण (भक्ति) नहीं है। मन वश में नहीं हो तो तीर्थ यात्रा करने से भी लाभ नहीं मिलता। कबीरदास कहते हैं-

''मन्दिर तीरथ भटकते, वृद्ध हो गया छैल।
पग की पनहीं घिस गई, घिसा न मन का मैल।।''

अर्थात् अनेक तीर्थों की यात्रा करते-करते युवा व्यक्ति वृद्ध हो गया। उसके पैरों के अनेक जूते घिस गये लेकिन फिर भी मन का मैल (कपट) दूर नहीं हुआ।

मन पर विजय

मन को वश में करना साधक के लिए एक चुनौती है। भगवद् गीता में अर्जुन श्री कृष्ण से कहते हैं-

"चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।।"

-भगवद् गीता, 6.34

अर्थात् हे कृष्ण! यह मन बड़ा चंचल, अस्थिर स्वभाव वाला, अति दृढ़ व ताकतवार है। इसलिए इसको वश में करना मैं वायु को वश में करने की भांति अति दुष्कर मानता हूँ। तब श्री कृष्ण उत्तर देते हुए अर्जुन को मन को वश में करने के उपाय बताते हैं-

"असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।"

-भगवद् गीता, 6.35

अर्थात् हे महाबाहो अर्जुन! निसंदेह मन चंचल और कठिनता से वश में होने वाला है, किन्तु कुन्तीपुत्र! यह अभ्यास और वैराग्य से वश में हो जाता है। अभ्यास का अर्थ है बार-बार यत्न करना। जो वस्तु जितनी अधिक दुष्कर हो उसे प्राप्त करने के लिए उतने ही अधिक प्रयत्न व धैर्य की आवश्यकता पड़ती है। किन्तु 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' के अनुसार अंत में अवश्य सफलता मिल जाती है। दूसरा उपाय है वैराग्य अर्थात् इन्द्रियों के विषयों से आसक्ति रहित होना। यह वैराग्य कैसे प्राप्त हो, इसके बारे में भगवान् महावीर कहते हैं-

"जहा कुम्मे सअंगाइं सए देहे समाहरे।
एवं पावाइं मेहावी, अज्झप्पेण समाहरे।।"

-सूत्रकृतांग सूत्र, 1.8.16

अर्थात् जैसे कछुआ अपने अंगों को अपने शरीर में संकुचित कर लेता है, वैसे ही मेधावी आत्मसंलीनता द्वारा अपनी आत्मा को पाप कर्मों से दूर कर लेता है, विषय वासनाओं से दूर हटा देता है। उत्तराध्ययन सूत्र में इसी बात को बड़े सुन्दर ढ़ंग से समझाया गया है-

"एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इंदियाणि य।
ते जिणित्तु जहानाय, विहरामि अहं मुणी।।"

-उत्तराध्ययन सूत्र, 23.28

अर्थात् अपनी अविजित आत्मा, चार कषाय (क्रोध, मान, माया और लोभ) तथा पाँच इन्द्रियाँ (श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसना व स्पर्शन) ये मिलकर मनुष्य के दस शत्रु हैं। इन दस शत्रुओं को जीतकर हे महामुने! मैं सुखपूर्वक विचरण करता हूँ।

मन का रूपान्तरण

क्या इन्द्रियों को जबरदस्ती वश में लाया जा सकता है? नहीं। इस सम्बन्ध में एक बोधपूर्ण प्रसंग स्मरण आता है। एक नवयुवक अपने घर के पड़ोस में निवास करने वाली एक युवति पर मोहित हो गया। उसने उस युवति से अपना मन हटाने का बहुत प्रयत्न किया, पर बार-बार उसका ध्यान उसकी ओर चला जाता। उसे बहुत ग्लानि हुई। वह श्री रामकृष्ण परमहंस के पास गया और उनको सारी घटना सुनाई। उसने कहा कि मेरी इच्छा होती है कि मैं मेरी आँखें फोड़ डालूँ। स्वामीजी ने कहा कि आँखें फोड़ डालने से तुम्हारी समस्या हल नहीं होगी, क्योंकि फिर भी मन में उस युवति के बारे में बुरे विचार आते ही रहेंगे। तुमको अपना मन बदलना चाहिये। मन में चिंतन करो कि वह तुम्हारी माँ या बहन के तुल्य है। इस प्रकार मन का रूपान्तरण होने पर बुरे विचार आने बंद हो जायेंगे।

जैन धर्म में भावनाओं का बड़ा महत्त्व है। ये मन को बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। इसलिए कहा गया कि मोक्षाभिमुख साधक पहले धर्मध्यान द्वारा अपने चित्त को सुभावित करे और फिर बारह प्रकार की भावनाओं के चिंतन में लीन रहे। ये बारह भावनाएँ हैं- अनित्य, अशरण, एकत्व, अन्यत्व, संसार, अशुचि, आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक, धर्म और बोधि दुर्लभ। इन भावनाओं के चिन्तन से संसार की अनित्यता, भोगों की निस्सारता, सच्चे धर्म की यथार्थता आदि बातों का बोध प्राप्त होता है तथा ज्ञानियों द्वारा बताए हुए आत्मोत्थान का मार्ग समझ में आ जाता है।

भगवान महावीर ने कहा-''अकुसलमणनिरोहो, कुसलमणउदीरणं चेव।'' (व्यवहारभाष्य पीठिका, 66) अर्थात् मन को अकुशल (अशुभ) विचारों से रोकना तथा कुशल (शुभ) विचारों की ओर प्रेरित करना चाहिये। यह तो असंभव है कि इन्द्रियों के विषय हमारे सामने उपस्थित ही न हों। लेकिन इन्द्रियों के विषय उपस्थित होने पर भी मन को उनसे अलग रखना अवश्य ही संभव है। निम्नलिखित गाथा में इसे समझाया गया है-

''ण सक्का ण सोउं सद्दा, सोतविसयमागया।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए।।''

-आचारांग चूर्णि, 2.15.62

शब्द श्रोत्रेन्द्रिय का विषय है। कान में पड़े हुए शब्दों को न सुनना शक्य नहीं है। भिक्षु कान में पड़े हुए शब्दों में राग-द्वेष का परित्याग करे। यही बात चक्षु, घ्राण, जिह्वा, रसना

और स्पर्शनेन्द्रिय के बारे में कही गई है। (गाथा 2.15.63 से 65) राग और द्वेष का परित्याग करने से ही मन में समता का निर्झर प्रवाहित होता है।

मन का वशीकरण

भगवान् महावीर ने कहा कि ज्ञान रूपी लगाम से मन को वश में किया जा सकता है-

''आरण्णवो वि मत्तो हत्थी णियमिज्जदे वरत्ताए।
जह तह णियमिज्जदि सो णाणवरत्ताए मणहत्थी।।''

-भगवती आराधाना, 763

अर्थात् जैसे उन्मत्त हाथी को सांकल से वश में किया जा सकता है, वैसे ही मन रूपी हाथी को ज्ञान रूपी सांकल से वश में किया जा सकता है।

ज्ञानियों ने मन को वश में करने के कई उपाय बताए हैं। उनमें से मुख्य हैं-1. सत्संग, 2. सत्साहित्य और 3. सत्कर्म। तीर्थंकर महावीर ने कहा कि हमेशा कल्याणकारी मित्रों की संगति करो। (कल्लाणमित्तं संसग्गिं-ईसाभासियं 33.17) कल्याणकारी मित्रों का अर्थ ऐसे व्यक्तियों से है जो हमेशा सत्कार्यों में लगे हुए हैं, जिनका आचरण पवित्र है और जो हमेशा नेक सलाह देते हैं। मूलाचार गाथा संख्या 954 में कहा है-

''वड्ढदि बोही संसग्गेण, तध पुणो विणस्सेदि।
संसग्गविसेसेण दु, उप्पलगंधो जहा गंधो।।''

अर्थात् संगति से ही बोधि (ज्ञान) की वृद्धि होती है और संगति से ही वह नष्ट हो जाती है। जैसे कमल आदि पुष्प के संसर्ग से जल सुगंधित होता है और अग्नि आदि के सम्बन्ध से उष्ण और विरस हो जाता है। हम ऐसे व्यक्तियों की संगति नहीं करें जो हमें व्यसनों की ओर बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। साथ ही हम सत्साहित्य का पठन करें जो हमारे चित्त को उदात्त बनाता है। गंदे व अश्लील साहित्य का पठन मन में कामुकता व वासनाओं की वृद्धि करता है। इसी प्रकार मन में विकार उत्पन्न करने वाले सिनेमा, ड्रामा व टी.वी. के सीरियल भी नहीं देखें। भोजन में भी संयम रखना अवश्यक है। जहाँ सात्त्विक भोजन हमारे हृदय में शान्ति, प्रसन्नता, अनुद्विग्नता आदि भावों का संचार करता है, वहीं राजसिक व तामसिक भोजन मन में विकार उत्पन्न करता है।

सबसे बड़ी बात है कि हम मन को हमेशा उदात्त विचारों में प्रवाहमान करते रहें, क्योंकि कहावत है- 'खाली मन शैतान का घर' होता है। इस प्रकार अगर हम मन पर अपना पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तो वह हमारे जीवन को सुख, शान्ति व समृद्धि से भर देगा।

-अध्यक्ष, करुणा अंतरराष्ट्रीय, 70, टी.टी.के. रोड़, अल्वारपेट, चेन्नई-600018

तत्त्व-चर्चा

जिज्ञासा-समाधान

उत्तराध्ययन सूत्र को आधार बनाकर साधु-साध्वियों से किए गए प्रश्नों के उत्तरों से श्री सौभाग्यमलजी जैन-व्याख्याता द्वारा संकलित समाधान।-**सम्पादक**

प्रश्नः- "ममता, आसक्ति, कामना भजन की बड़ी बाधा है।" इस वाक्य की उत्तराध्ययन सूत्र के आधार पर समीक्षा कीजिए।

उत्तरः- ममता, आसक्ति एवं कामना भजन में बड़ी बाधा है, इसी कारण उत्तराध्ययन सूत्र की शुरुआत में "संजोगा विप्पमुक्कस्स" सूत्र शास्त्रकार ने कहा। जो बाह्य-आभ्यंतर संयोगों से विप्रमुक्त होता है, संयोगों की कामना से रहित होता है, उसी धीर-वीर-गंभीर पुरुष के चरण साधना के क्षेत्र में बढ़ पाते हैं।

इसके विपरीत विनाशी की ओर अभिमुख, उसी में सुख की बुद्धि रखने वाले, उसमें जीवन मानने वाले तो अविनाशी से दूर पराङ्मुख होते हैं। मिले हुए में ममता तथा नहीं मिले हुए की कामना असत् का संग है। उससे आत्मा पराधीनता, जड़ता, अभाव आदि में आबद्ध हो जाता है।

अविनाशी का संग विनाशी की विमुखता में निहित है। शरीर, इन्द्रिय, मन पर आधारित जीवन जीना विनाशी की सम्मुखता व अविनाशी से विमुखता है। संसार के वस्तु-व्यक्ति आदि में जीवन-बुद्धि अर्थात् सुख देने की स्वीकृति की मान्यता ही जड़ के मोह में आबद्ध करती है। अपना मानना ही ममता है। ममता दुःख का एक उपाय मात्र है। प्राप्त में ममता तोड़ने के लिए ही आगम वाणी है।

ममता के जाल में फँसे ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती को महाश्रमण चित्तमुनि अनेक युक्तियों से प्रेरणा करते हैं। सर्वप्रथम तो अपने पूर्वजन्म का स्मरण करवा कर उन्हें वस्तुओं की आसक्ति से मुक्त कराना चाहते हैं। आसक्ति के कारण ब्रह्मदत्त को दीक्षा दुःख रूप लगती है, इसी कारण योग में स्थिर चित्तमुनि को वे नाटकों से, गीतों से, नारी जनों के परिवार से भोग-भोगने की प्रेरणा देते हैं।

चित्तमुनि कहते हैं- भोग की रुचि ही योग की सबसे बड़ी बाधा है। अचाह की साधना करने वालों के लिए तो सर्व गीत विलाप रूप, सर्व नाटक विडम्बना रूप, सर्व आभूषण भार रूप व काम भोग दुःख देने वाले हैं, फिर उनमें ममता कैसे की जा सकती है? संसार की

अनित्यता, अशरणता, मृत्यु की सत्यता सभी का मार्मिक विवेचन सुनने के बाद भी 'नहीं' में 'हैं' के दर्शन करने वाले ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती उत्तर देते हैं- हे साधो! मैं सब जानता हूँ, पर 'जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसहेहिं।' (उत्तरा. 13.2)। यह सभी काम-भोग हमारे जैसे सांसारिक आनन्द में निमग्न पुरुषों के द्वारा छोड़ना मुश्किल है। ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की संसार-आसक्ति उन्हें भजन करने में प्रभु से सम्बन्ध जोड़ने में बड़ी बाधा रूप सिद्ध होती है।

उत्तराध्ययन सूत्र के प्रथम अध्ययन में बताया गया है कि विषयों में आसक्त हुआ शूकर "कणकुण्डगं चइत्ताणं, विट्ठंभुंजइ सूयरो।" (उत्तरा. 1.5) चावलों के पात्र को छोड़ विष्ठा में ही मुँह डालता है। वह दुराचारी कहलाता है। ऐसा जीव प्रभु को छोड़ गुरु का भी भजन नहीं कर पाता है अर्थात् उनकी भक्ति भी नहीं कर पाता है।

भोगों में जीवन बुद्धि मिथ्यात्व है। वह बुद्धि ही ममता-आसक्ति उत्पन्न कराती है। जब तक यह बुद्धि बनी रहती है तब तक दर्शन मोहनीय पर वार नहीं होता तथा यह जीव सुदेव, सुगुरु, सुधर्म पर आस्था नहीं रख पाता। आस्था ही नहीं तो भक्ति, बहुमान एवं भजन तो संभव ही नहीं हो सकता। 'ममत्तबंधं च महाभयावहं" ममत्व के बंधन महा भयंकर हैं। ममता दुःख, शोक, संताप आदि अनेकविध अनर्थों का मूलभूत कारण है। इसी ममता कामना के कारण बाल जीव "कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु।" (उत्तरा. 5.10) काया-वचन-मन से धन और स्त्रियों में आसक्त होते हैं। वे जीव न इस लोक की चिंता करते हैं न परलोक की चिंता करते हैं। परिणामस्वरूप परलोकगमन का समय आने पर परितापना को प्राप्त होते हैं। अंत समय में भी समाधि न होने से, देह पर ममता टिकी रहने से भजन में मन को केन्द्रित करके पण्डितमरण को प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

ममता के पाश को तोड़कर जो शत्रु की शरण ग्रहण करता है, वही साधक कहलाता है। उसके लिए चर्म चक्षु नहीं अन्तर्चक्षु खुले होने अति आवश्यक होते हैं। उससे दिखने वाले पुद्गल संसार पर अविश्वास तथा नहीं दिखने वाले चैतन्य लोक पर विश्वास करना होता है। भजन-भक्ति के लिए आवश्यक है कि सभी प्रकार के आश्रयों का त्याग करके मात्र प्रभु की शरण को ग्रहण किया जाए। जिस साधक को संसार का दुःख ही नहीं, सांसारिक सुख भी दुःख रूप लगने लगता है, जिसे मात्र प्रतिकूलता ही नहीं सांसारिक अनुकूलता भी आकर्षित नहीं करती, वही प्रभु-भजन का अधिकारी होता है। इसीलिए आचार्य शय्यंभव भट्ट ने अपने दीक्षित पुत्र मनक से कहा- "कहं नु कुज्जा सामण्णं जो कामे न निवारए।" (उत्तरा. 2.1) जो काम का विषयों का विकारों का दास बना हुआ है, भला वह संयम का पालन कैसे कर सकता है, अर्थात् नहीं कर सकता है। उत्तराध्ययन सूत्र में मृगापुत्र की माता भी उन्हें यही बात समझाती है कि यह संयम अति दुष्कर है, क्योंकि इसमें अचाह, अकिंचन

जैसे गुणों को जीवनभर धारण करके रखना होता है। जब तक आसक्ति-ममता के ऊपर नहीं उठा जाता तब तक प्रभु के बताये मार्ग पर चलकर उनकी आज्ञाओं की भक्ति संभव नहीं है। "है" को अपना मानने से उसी की स्मृति में एक तान, एक लय हो जाने से, उसी के स्वरूप में एकाकार हो जाने से भजन सिद्ध होता है।

भरत चक्रवर्ती की ममता टूटी कि वे स्वयं ही भगवान बन गये। कपिल की कामना टूटी कि वे उद्यान में ही भगवान बन गये। इलायची कुमार नाचते-नाचते ही ममता का त्याग करके भगवान बन गये।

शरणागत बनकर भजन करने का अधिकारी सिर्फ वही है जो सुख में आसक्त और दुःख में दीन नहीं बनता तथा अपने लक्ष्य से निराश नहीं होता। भजन में निमग्न जीव को किसी भी गुण को निमंत्रण देकर नहीं बुलाना होता है, न सीखने का ही प्रयास करना पड़ता है- वह तो सुगमता-सरलता पूर्वक स्वतः ही आगे बढ़ने लगता है। चतुर्विंशतिस्तव से दर्शनविशुद्धि होती है अर्थात् प्रभु के भजन में निमग्न होने से आत्मा विशुद्ध होती है, उस पर से मिथ्यात्व का दल-दल हटता ही है, साथ ही सम्यक्त्व मोहनीय का प्रभाव भी घटने लगता है। दर्शन विशुद्धि से विशुद्ध होता हुआ जीव परिपूर्ण रूपेण विशुद्ध दशा को उपलब्ध होता है।

सम्पादकीय का शेषांश

भाव अवमौदर्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, जो अवमौदर्य तप को बाह्य तप से आभ्यन्तर तप की ओर ले जाता है। औपपातिक सूत्र में भाव अवमौदर्य के अनेक प्रकार कहे गए हैं, यथा- 1. क्रोध में अल्पता लाना, 2. मान में अल्पता लाना, 3. माया में अल्पता लाना, 4. लोभ में अल्पता लाना, 5. अल्प शब्दों का प्रयोग करना- अर्थात् मितभाषी होना, 6. झंझा- झुंझलाहट, कलह आदि में अल्पता लाना। यहाँ ऊनोदरी तप आत्म-साधना का महत्त्वपूर्ण साधन सिद्ध हो रहा है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं को सीमित करने के साथ आहारादि में जो संयम रखता है वह ही क्रोध, मान आदि कषायों एवं दोषों का निग्रह करने के लिए सामर्थ्यवान् बनाता है। क्रोधादि में अल्पता लाना तभी सम्भव है, जब साधक में निरन्तर सजगता एवं सावधानी बनी रहती हो। उत्तराध्ययनसूत्र (अध्ययन 30) में अवमौदर्य के पाँच प्रकार निरूपित हैं- द्रव्य अवमौदर्य, क्षेत्र अवमौदर्य, काल अवमौदर्य, भाव अवमौदर्य एवं पर्याय अवमौदर्य। द्रव्य, क्षेत्र, काल आदि के प्रयोग में मर्यादा रखना, कमी लाना अवमौदर्य है। भक्तपान आदि का मर्यादित प्रयोग द्रव्य अवमौदर्य है, जिसमें उपकरणादि का मर्यादित प्रयोग भी सम्मिलित हो जाता है। क्षेत्र का सीमित प्रयोग क्षेत्र अवमौदर्य है। इसी प्रकार अन्य भेद भी समझ लेना चाहिए।

युवा-स्तम्भ

अनुमोदना और रोगप्रतिरोधक क्षमता

डॉ. श्वेता जैन

जैनागमों में मानवकृत कार्यों के तीन पक्ष बताए गये हैं - 1. करूँ (स्वयं करना) 2. कराऊँ (दूसरों से करवाना) 3. अनुमोदूँ (अन्य के द्वारा किए गए कार्य की अनुमोदना करना, उसे ठीक समझना)। करना और करवाना तो अपने आप में महत्त्वपूर्ण है ही, किन्तु अनुमोदन करना भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। प्रश्न हो सकता है कैसे? उत्तर है- इसके पीछे छिपी हमारी दृष्टि, किसी को उचित-अनुचित समझने की अनुभूति। यह दृष्टिगत अनुमोदना हमारी रोगप्रतिरोधक क्षमता को प्रभावित करती है, इस बात को अमेरिका की हार्वर्ड यूनिवर्सिटी का एक प्रयोग प्रमाणित करता है-

एक रसप्रद प्रयोग के अन्तर्गत एक विद्यालय में कुछ विद्यार्थियों की लार की जाँच की गई। लार में रोगप्रतिरोधक शक्ति के कणों (एन्टीबॉडी) का परिमाण कितना है, वह मापा गया। लार में रहे रोगप्रतिरोधक शक्ति के ये कण शरीर में श्वसनतंत्र तथा पाचनतंत्र में जाकर बीमारी उत्पन्न करने वाले कणों से शरीर का रक्षण करते हैं। इन कणों की मात्रा नाप लेने के बाद विद्यार्थियों को आधे घण्टे की मदर टेरेसा के जीवन पर अवलम्बित करुणा, सेवा और दया से युक्त प्रेरणादायी फिल्म दिखाई गई। फिल्म पूरी होने के बाद फिर से रोगप्रतिरोधक क्षमता के कणों की जाँच की गई। वैज्ञानिक इस प्रयोग से जानना चाहते थे कि मदर टेरेसा की फिल्म देखने के बाद रोगप्रतिरोधक शक्ति के कणों में वृद्धि होती है या कमी। फिल्म के बाद परिणाम जाँचने पर ज्ञात हुआ कि कुछ विद्यार्थियों में इसका प्रमाण बहुत बढ़ा है, कुछ में घटा है और कुछ में कोई परिवर्तन नहीं है। कोई निश्चित परिवर्तन नहीं देखने पर इसी प्रयोग को आगे बढ़ाया गया। प्रत्येक विद्यार्थी को फिल्म देखने के बाद कागज पेन दिए गए और कहा गया कि मदर टेरेसा और उनकी इस फिल्म के विषय में अपने विचार दीजिए। सभी के जवाबों को जाँचा गया तो इसमें तीन प्रकार के विचार प्राप्त हुए। कुछ लोगों ने मदर टेरेसा तथा उनके कार्यों को अच्छा बताया था तथा उनके कार्यों के लिए शुभेच्छा भी दी, जिसे सकारात्मक प्रतिक्रिया (अनुमोदना) कह सकते हैं। कुछ विद्यार्थियों ने मदर टेरेसा तथा उनके कार्यों के विषय में कहा कि ऐसे कार्य समाज के लिए जोखिम पैदा कर सकते हैं, जिसे नकारात्मक प्रतिक्रिया कह सकते हैं। कुछ विद्यार्थियों ने विचार दिए बिना ही कागज कोरा ही लौटा दिया था, उसे तटस्थ भाव कह सकते हैं। जिन लोगों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी उनमें रोगप्रतिरोधक शक्ति के कण बढ़ गए, नकारात्मक

प्रतिक्रिया देने वालों की रोगप्रतिरोधक शक्ति के कण कम हो गए तथा तटस्थ भाव वालों के कणों में कोई परिवर्तन नहीं आया। (स्रोतः प्रेरणा का झरना, लेखक- डॉ. जितेन्द्र आढिया, अनुवादक- कुमारी नीपा राजपूत, प्रकाशक- आल्फा पब्लिकेशन, इ-8, बालाजी अवेन्यू, जजीस बंगला रोड, सेटेलाइट, अहमदाबाद-380015 पृष्ठ 29-31)

भावनाएँ दो प्रकार की होती हैं- सकारात्मक भावना और नकारात्मक भावना। प्रेम, दया, करुणा, क्षमा, कृतज्ञता, प्रसन्नता, सहिष्णुता आदि भावनाएँ सकारात्मक तथा भय, शंका, निराशा, पूर्वाग्रह, असहिष्णुता आदि भावनाएँ नकारात्मक कहलाती हैं। नकारात्मक भावना का प्रवाह जीवनघातक होता है और शरीर के अलग-अलग कोषों का नाश करता है और बीमारी उत्पन्न करता है। सकारात्मक भावनाएँ रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान करती है। इस प्रकार अच्छे कार्यों की अनुमोदना हमारे भीतर सकारात्मक भाव पैदा करती है और बुरे कार्यों की अनुमोदना नकारात्मक भाव पैदा करती है।

-'समता कुंज', जालम विलास स्कीम, पावटा बी रोड़, जोधपुर-342006 (राज.)

विचार क्रान्ति

डॉ. रमेश 'मयंक'

मन!
अनुभव एक शक्ति है
विचारों के आलोड़न की,
विचार-एक प्रकाश है
समस्त द्वन्द्वों के अंधेरों को
दूर भगाने के लिए
रोशनी की राह पर बढ़ जाने के लिए।
मन!
विचार का स्वरूप समझ
विचार क्रान्ति का जन्मदाता
विचार- आग बनकर जला सकता है
तो भटकते व्यक्ति को
सही राह पर भी ला सकता है।
मन!
विचार सुई-धागा बनकर
सबको जोड़ता
कैंची बनकर
अलग-थलग भी कर देता
मन!
विचारों से वैमनस्य की गांठे खोल,
बोलने से पहले
आत्म-शक्ति की तराजू पर तोल,
विचार के दर्पण में
व्यक्ति का चरित्र नज़र आता है
शुभ को आत्मसात् कर
विचार ही बनता मुक्ति प्रदाता है।
तू- सृष्टि दर्शन करने
परिपक्व अनुभवी विचारों के साथ
श्रेष्ठ विकास हेतु निकल जाता क्यों नहीं?
सद्गुणों का भण्डार उपयोग में
लाता क्यों नहीं?

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

नारी-स्तम्भ

दूसरे से तुलना न करें

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

किसी ने ठीक ही कहा है कि 'पराई थाली में घी ज्यादा ही नज़र आता है।' गाँव वालों से बात करो तो कहेंगे, यहाँ तो कुछ सुविधा नहीं है, विकास नहीं है, डल लाइफ है तो शहरी लोग कहते है कि सच्ची शांति तो गाँव में है, यहाँ तो बस भागदौड़ है, स्वयं के लिये समय ही नहीं है। प्रदूषण और ट्रेफिक तो बढ़ता ही जा रहा है।

अमीर को लगता है खाने को तो दाल रोटी ही चाहिये, इतना पैसा कमाकर अब उसे सही जगह निवेश करने की टेंशन। गरीब को लगता है जीने का असली मजा तो अमीर लेता है। बढ़िया गाड़ी में घूमता है और आलीशान कोठी में रहता है। नौकरी करने वाला सोचता है कि व्यापार करने वाले को आराम है, अपनी मर्जी का मालिक है। वहीं व्यापार करने वाला सोचता है कि नौकरी वाला ऑफिस से घर आता है टेंशन फ्री, धंधे में लाभ हो या हानि उसके तो खाते में पहली तारीख को वेतन जमा हो जाता है।

जो लोग संयुक्त परिवार में रहते है उन्हें लगता है कि एकान्त नहीं है, आने जाने वाले लगे रहते हैं, समय नहीं मिलता, वहीं एकल परिवार वाले सोचते हैं अकेले हैं, कहीं जाना पड़े तो पीछे कोई संभालने वाला नहीं होता, बोरियत होती है। कामकाजी महिला सोचती है कि गृहिणी तो घर पर आराम करती है। मैं तो सारे दिन काम में ही लगी रहती हूँ। वहीं गृहिणी सोचती है कि काश मैं भी रोज अच्छे से तैयार होकर ऑफिस जाती और अपना रुतबा जमाती।

कहने का तात्पर्य यह है कि जब तक इन्सान दूसरों को देखता है, उनसे अपनी तुलना करता है तो वह असंतोष महसूस करता है, लेकिन जब मानव अपने वर्तमान में तृप्त रहता है और अधिक की कामना नहीं करता है तो वह सुखी रहता है। संतोष जीवन में सुख शांति का प्रतीक है। संतोष से मानव मन में कुंठा, हीन भावना, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा जैसे विकार घर नहीं करते। संतोष अशांत मन को स्वस्थ बनाता है। कबीरदासजी ने कहा है-

चाह गई चिंता मिटी, मनुवा बेपरवाह।
जिसको कुछ न चाहिये, वो ही शहंशाह।।

संतोषी व्यक्ति के अन्दर भाई-चारे की भावना, सहयोग की भावना और राष्ट्रीयता की भावना होती है। संतोषरूपी धन प्राप्त हो जाने से मनुष्य का चेहरा एक अनोखी चमक से

दमकता रहता है तथा वह हमेशा मुस्कराता रहता है। इसके विपरीत असंतोषी व्यक्ति हमेशा निन्यानवे के फेर में पड़ा रहता है। असंतोषी व्यक्ति को तृष्णा दीमक की भाँति चाटकर अंदर से खोखला कर देती है। वह हर समय चिड़चिड़ा तथा दुःखी रहता है।

असंतोष के कारण ही आजकल हर जगह बेईमानी, अराजकता, वैमनस्य तथा अतृप्ति की भावना पनप रही है। ऐसे वातावरण में एक संतोषी व्यक्ति ही सच्ची शक्ति प्राप्त कर सकता है। संतोषी व्यक्ति यही सोचता है जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह भी अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा ही होगा।

संतोष धन को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए रहीमजी ने कहा है-

''गोधन, गजधन, वाजिधन और रतनधन खान।
जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।।''

-कांदिवली (पूर्व), मुम्बई (महा.)

लक्ष्य रहे सदा वीतरागता का

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

दुनिया में लगी है होड़
अर्थ के पीछे है सारी दौड़।
रिश्ते तक को देते हैं तोड़, जीवन का कैसा है यह मोड़?
छोटी-छोटी बातों से, हो जाता है मनमुटाव।
भ्रांतियों से है भटकाव, बढ़ रहा है आपसी दुर्भाव।
सौहार्द का है अभाव, बने कैसे बिगड़ी बात?
निभना-निभाना है कला, निभाना जानें हम सदा।
मान-अभिमान को दें गला
कषाय दूर रहे भागता।
संकल्प बने सदा जागता
समता रस का बना रहे स्वाद सदा।
अपना भला, सबका हो भला
लक्ष्य रहे सदा वीतरागता का।
सद्गुरुओं से मिलता रहे सद्ज्ञान सदा
तब मुक्ति रहे क्यों दूर भला।

-''हुकम'', 5-ए/1, सुभाष नगर, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राजस्थान)

प्रासंगिक

स्वच्छ भारत अभियान में शौचालय : एक चिन्तन

श्री अरुण मेहता (FCA, FCS)

एक ओर भारत में स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत गाँव-गाँव में शौचालय-निर्माण का प्रकल्प चल रहा है, दूसरी ओर उन ग्रामों में पानी की भारी कमी है। जैन साधु-साध्वी प्रासुक जल का अत्यल्प मात्रा में उपयोग करते हैं। जल एवं पर्यावरण-संरक्षण की दृष्टि से उनका जीवन आदर्श है। वे मल-मूत्र आदि का त्याग भी निरवद्य स्थान पर करते हैं, जिससे किसी को हानि नहीं। उनकी धार्मिक आचार संहिता भी उन्हें शौचालयों का उपयोग करने की अनुमति नहीं देती, अतः सरकार द्वारा उन्हें शौचालय के उपयोग से मुक्त रखा जाना चाहिए, इसी अभिप्राय से युक्त है आलेख। **-सम्पादक**

भारत में नई सोच के साथ नए शासकों के आने से "स्वच्छ भारत अभियान" के रूप में एक नया कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

स्वच्छ भारत का अर्थ क्या? स्वच्छता सभ्यता का प्रतीक है। स्वच्छता के साथ-साथ स्वस्थता भी इसका प्रतिफल होना चाहिए, ऐसी हम सब की सोच एवं संकल्प होना चाहिए। सरकार द्वारा स्वच्छता को सभ्यता के साथ-साथ जोड़कर कार्यक्रम बनाना और लागू करना चाहिए। यदि स्वच्छता में सुधार स्वस्थता में बिगाड़ का कारण बने तो ऐसी स्वच्छता की उपयोगिता नकारात्मक हो जायेगी।

जैन दर्शन/धर्म प्राचीनतम काल से इसका संदेश पांच समितियों में पांचवीं समिति 'उच्चार प्रसवण खेल जल्ल सिघांण परिष्ठापनिका समिति' के रूप में हमें देता आ रहा है। इस समिति का आशय है कि मल-मूत्र आदि का विसर्जन ऐसे स्थान पर करना चाहिए, जिससे किसी भी जीव की हानि न हो। न किसी की हिंसा हो एवं न ही कोई अस्वस्थ हो।

"स्वच्छ भारत अभियान" में खुले में शौच जाने को भी त्याज्य समझा जा रहा है तथा शौचालय के निर्माण को आवश्यक समझा जा रहा है, जो उचित नहीं है। शौच निवारण का तात्पर्य (1) लघु शंका (मूत्र त्याग) व (2) दीर्घ शंका (मल त्याग) का त्याग है। लघुशंका तो जैन दर्शन के अनुसार अशुचि है ही नहीं। इसे समय-समय पर साधु-संतों व साधकों द्वारा अशुचि का निवारण करने के लिए भी प्रयोग किया जाता है। वैज्ञानिकों के अनुसार तो यह antiseptic है, दवाओं में भी काम आता है। स्वमूत्र चिकित्सा वाले इसका पान करते हैं। हां, लघुशंका की सड़ांध व दुर्गंध से बचने का प्रयास सभी का होना चाहिए।

दीर्घशंका यानी मल का निवारण दो प्रकार से किया जाता है। एक तो टॉयलेट, संडास या गटर में करके बहाया जाता है और दूसरा खुले स्थान- भूमि पर किया जाता है जिसे 'खुले में शौच निवारण' कहा जाता है। दोनों तरीकों में से सही कौनसा है और गलत कौनसा है, उचित कौनसा और अनुचित कौनसा, स्वच्छकारी व स्वास्थ्यकारी कौनसा यह चिन्तनीय है। यहाँ पर कुछ बिन्दुओं के माध्यम से समझने का प्रयास कर रहे हैं ताकि अधिक से अधिक व्यक्ति सही तथ्यों को समझ सकें।

दीर्घशंका (मल) का निवारण जो भी साधक व असाधक खुले में करते हैं वे तो एकांत एवं निर्जन स्थान पर ही करते हैं। शायद ही कोई व्यक्ति खुले में शौच गलियों, मौहल्लों या व्यक्तियों के सम्मुख करता है। एकांत एवं निर्जन स्थान पर शौच निवारण या विसर्जन करना न तो अस्वच्छता का कारण बनता है और न ही अस्वस्थता का। अतः स्वच्छ भारत अभियान पर इससे कोई बुरा प्रभाव पड़ना समझ में नही आता है। इसका व्यक्तियों के सम्मुख या बस्तियों में निवारण करने पर नियंत्रण किया जाना चाहिए।

इसके विपरीत जब शौचालय में शौच निवारण करके गटर में बहाया जाता है तब दुर्गन्ध व सडांध शहरों का प्रमुख हिस्सा बन जाती है। जिससे अनेक हानियाँ होती हैं। यह एक बड़ी समस्या है, जिसका समुचित समाधान करना आवश्यक एवं उचित है। इस सम्बन्ध में डॉ. जीवराज जी जैन का चिन्तन उनके लेख के माध्यम से 'जिनवाणी' एवं 'सम्यग्दर्शन' में पढ़ने को मिला, उसे सरकार को गम्भीरता से सोचने समझने की आवश्यकता है। गटर में बहाया हुआ मल शहरों में जहाँ-तहाँ सड़कों पर बहता रहता है, जो अस्वच्छता के साथ-साथ अस्वस्थता का मुख्य कारण है। अनेक जगह लीकेज होने के कारण गटर का पानी पीने के पानी के साथ मिलकर घरों में पहुँच जाता है, जो अस्वास्थ्यकर होता है।

शहरों में जो गटर लाइनों का जाल बिछा होता है वह अस्वच्छता और अस्वस्थता का सबसे बड़ा कारण बन रहा है। शहरों में जितनी आबादी मनुष्यों की होती है उससे अनेक गुणी ज्यादा आबादी इन गटर लाइनों में चूहों की होती है, अनेक गुणी ज्यादा आबादी कोक्रोच की होती है तथा अनेक गुणी आबादी अन्य बेइंद्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों की होती है। यह शहरों में बीमारियों और महामारियों का सबसे बड़ा कारण है। इनके कारण से ही प्रति वर्ष लगभग प्रत्येक शहर में हैजा, टाइफॉइड, पीलिया, प्लेग, मलेरिया आदि अनेक महामारियाँ फैलती हैं जिससे सैकड़ों व हजारों की संख्या में मनुष्यों की मृत्यु का होना सुना एवं देखा गया है। पिछले 50 वर्षों में मैंने कभी ऐसा सुना या पढ़ा नहीं कि खुले में शौच के कारण कोई बीमारी या महामारी हुई हो या कोई मौत हुई हो। हां, यह अवश्य सुना और पढ़ा है कि गटर की सफाई करते अनेक सफाई कर्मचारी बेहोश, बीमार

हुए हैं, यहाँ तक कि मृत्यु को भी प्राप्त हुए हैं।

गटर की नालियों में बहाया हुआ मल कभी सूखता तो है ही नहीं, जिससे उसमें निरन्तर मीथैन गैस का उत्पादन होता रहता है, जो स्वास्थ्य के लिए सीधे हानिकारक होने के साथ-साथ ओजोन परत को भी बहुत भारी नुकसान पहुँचाती है।

खुले में शौच निवारण के अनेक फायदे हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं-

1. पानी की जबरदस्त मात्रा में बचत होगी। भारत जैसे देश में पानी की भयंकर कमी है, आधा देश लगभग भयंकर सूखे से ग्रस्त है और पीने का पानी भी बमुश्किल उपलब्ध हो पाता है।
2. अस्वस्थता और अस्वच्छता दोनों के सबसे बड़े कारण का निवारण हो जायेगा।
3. इन गटर के स्थानों पर उत्पन्न होने वाले सम्मूर्च्छिम जीवों की उत्पत्ति एवं हिंसा से बचा जा सकेगा।

जैन धर्मावलम्बी साधु-साध्वी मुख्य रूप से इन्हीं कारणों से खुले में शौच निवारण कर पानी की एवं समूर्च्छिम जीवों की रक्षा करके अपने धर्म का समुचित पालन करते हैं। जैन साधकों की निश्चित समाचारी होती है, वे सचित्त जल का प्रयोग नहीं करते हैं इस कारण से फ्लश का उपयोग नहीं कर सकते हैं। जैन साधक जो अपनी आचार संहिता से बंधे हुए हैं उसका पालन करने की उनकी पूर्ण प्रतिज्ञा होती है। उनकी आचार संहिता का पालन भारतदेश में ही नहीं होगा तो फिर कहाँ पर होगा? जैन साधक इस क्रिया को पूर्ण विवेक और यतना से करते हुए जीव मात्र को हानि नहीं पहुँचाते हैं, और पर्यावरण को भी शुद्ध रखने में एक प्रकार से सहयोग ही करते हैं। उनकी यह क्रिया न तो किसी के लिए शर्मिन्दगी का कारण उत्पन्न करती है, न ही किसी के लिए कोई परेशानी का कारण बनती है। इसके लिए उन्हें कितना ही श्रम करना पड़े, वे सहर्ष करते हैं।

अत: सरकार एवं प्रशासन से विनम्र अनुरोध है कि इस सम्बन्ध में गहराई से चिन्तन-मनन करे, वैज्ञानिकों के साथ-साथ जैन धर्मावलम्बियों से भी इस पर सलाह-मशवरा करे, उनसे मार्गदर्शन प्राप्त कर इस हेतु समुचित नीति निर्धारण कर फिर उचित कानून-नियम आदि बनाकर ही उन्हें लागू करे।

जैन साधक (साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका) अपनी अहिंसा की परिपूर्ण प्रतिज्ञा से बंधे हुए होते हैं, जो कि न सिर्फ उनके लिए बल्कि समस्त समाज, देश व प्राणिमात्र के लिए कल्याणकारी व हितकारी होती है। अत: उन्हें इस खुले में शौच सम्बन्धी किसी भी नियम-कानून से मुक्त रखें, ऐसा सरकार एवं प्रशासन से अपील एवं आशा है।

-467-ए, सातवीं 'ए' रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.)

काव्य

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (22)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।**-सम्पादक**

(तर्जः- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)
वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

(बत्तीसवाँ अध्ययन : प्रमाद स्थान)

काल अनादि के दुःखों से, पाना हो यदि मुक्ति,
आत्म हितार्थ एकचित्त हो, सुनलो अब वो युक्ति,
छोड़ प्रमाद जगे आतमहित, वो संकल्प जगालो ।।642।।
सम्पूर्ण ज्ञान प्रकाशन हो, अज्ञान मोह का वर्जन,
नष्ट हुए यदि राग द्वेष तो, मिलता मोक्ष निकेतन,
अनन्त सुखों को पाने के हित, रत्नत्रयी को पालो ।।643।।
गुरुजन और वृद्ध की सेवा, दूरी अज्ञानी से,
स्वाध्याय एकान्तवास में, सूत्रों के चिंतन से,
साधन हैं ये मोक्ष मार्ग के, धैर्यवृत्ति अपनालो ।।644।।
बोधप्राप्ति का अभिलाषी, आहार एषणीय करता,
तत्त्वार्थी का संग करे, निष्पाप जगह ठहरता,
मिले संग नहीं गुणीजनों का, एक अकेला चालो ।।645।।
तृष्णा से है मोह उपजता, द्वेष मोह का साथी,
नष्ट हुई यदि तृष्णा तो, निर्लोभवृत्ति है आती,
राग-द्वेष हैं बीज कर्म के, बीज नष्ट कर डालो ।।646।।
कर्म मूल है जन्म-मरण का, दुःख ही जन्म मरण है,

दग्ध हुए जब कर्म बीज तो, दुःख का उन्मूलन है,
तृष्णा त्याग अकिंचन बन, कर्मो का भार हटालो ।।647।।
राग-द्वेष का मूल मिटाने, जानो क्रम से युक्ति,
रस सेवन से बढ़ जाती, काम-भोग आसक्ति,
अतिमात्रा में तज के सेवन, उन्मादकता टालो ।।648।।
पवन संग पा वन की अग्नि, शांत नहीं हो पाती,
अतिभोजी की कामाग्नि भी, तृप्त नहीं हो पाती,
अल्पभोज साधक के हित में, सम्यक् अशन करालो ।।649।।
एकान्त बस्ती और आसन से, नियमबद्ध जो होता,
मितभोजी उस जितेन्द्रिय को, राग कभी न भिगोता,
रोग देह को करे न पीड़ित, ऐसी औषध खा-लो ।।650।।
अच्छा नहीं मूषक का रहना, बिल्ली की बस्ती में,
उचित नहीं साधु का रहना, नारी की बस्ती में,
नारी रूप, अंग अवलोकन, मन से सदा निकालो ।।651।।
ब्रह्मचर्य में जो भी रत है, हितकारी नहीं उनको,
चाह और चिन्तन में नारी, कभी न उनमें अटको,
सम्यक् धर्म साधना के हित, सभी निमित्त को टालो ।।652।।
तीन गुप्ति के धारक मुनि को, विचलित ना कर पाती,
सुन्दर सज्जित इन्द्रपरी भी, चाहे हो इठलाती,
तदपि विविक्त-वास है हितकर, प्रभु आज्ञा को पालो ।। 653 ।।
विजय कठिन है अज्ञानी को, नारी का सम्मोहन,
भवभीरू मोक्षाकांक्षी को, ऐसी नहीं है अड़चन,
धर्मनिष्ठ त्यागें नारी संग, ऐसा ज्ञान जगालो ।। 654 ।।
जीती यदि नारी आसक्ति, पूर्ण रूप से साधक,
कर्म मैल हटाने में फिर, बने न कोई बाधक,
शेष कर्म तो नदियां हैं बस, महासागर ये तिरालो ।। 655 ।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बखतसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

धारावाहिक

लगन की वेला (20)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

आचार्यश्री इस स्वप्न से पूर्व ही किंचित् सजग हो चुके थे। गत वर्षावास की आज्ञा देने के पहले ही उन्होंने अपने शिष्य समुदाय को सूचित कर दिया था कि आप चातुर्मास उठते ही समीप के प्रदेश में आ जायें, क्योंकि मुझे कभी भी आपको अपने पास बुलाने की आवश्यकता पड़ सकती है। इस संदेश का गूढ़ आशय साधुवर्ग समझ गया। अतः आचार्यदेव के शिष्य-प्रशिष्यादि समस्त साधु उनके संदेश की प्रतीक्षा करते हुए समीप के प्रदेशों में ही विचरण कर रहे थे। कुछ शिष्य तो इतने समीप थे कि एक-दो दिन के विहार से ही आचार्यदेव के चरणों में पहुँच सकते हैं।

सूर्योदय हुआ। लोक कर्मरत हो गया। उपासक-उपासिकाएँ दर्शन करने मंगल पाठ श्रवण करने आने लगीं। संघदासजी और सार्थवाह गुणसुन्दरजी दोनों ने उपाश्रय में साथ ही साथ प्रवेश किया। दोनों ने परस्पर जयजिनेन्द्र कहकर अभिवादन किया और फिर वे गुरुदेव के पास आये। उन्होंने गुरुदेव को वंदन किया। आचार्यदेव ने उनकी ओर चिन्तन मुद्रा में देखा। उन्होंने इससे यह अनुमान लगाया कि गुरुदेव हमें कुछ कहना चाह रहे हैं। संघदास ने करबद्ध निवेदन किया- "भन्ते! कृपा करिये-कोई सेवा कार्य हो तो।" आचार्यदेव ने फरमाया- "मेरी ऐसी इच्छा है कि अपने समुदाय के सभी सन्त, जो कि आसपास ही विचरण कर रहे हैं, अब यहाँ पधार जायें।"

गाथापति ने नतशिर कहा- 'जैसी श्रीजी की आज्ञा। सभी सन्त जल्दी आपकी सेवा में पधार जाएँ ऐसा उपाय करेंगे।' सार्थवाह आचार्यश्री की बात सुनकर सशंक हो गये। अतः वे विनय से बोले- 'गुरुदेव! सन्त पधारें, आपकी सेवा का लाभ लें- इससे हम प्रसन्न हैं। किन्तु अभी यह प्रयोजन क्यों उत्पन्न हुआ?' वे रहस्य को जानना चाहते थे।

'देवानुप्रिय! उत्तरदायित्व का भार उतारना है।'

'भन्ते! आपके शिष्य सभी विनीत हैं- अनुशासन-बद्ध हैं। साधना में ही रत रहते हैं। वे महत्त्वाकांक्षा को महत्त्व नहीं देते हैं। इसलिए उत्तराधिकारी की नियुक्ति के लिये चिन्ता जैसी बात नहीं है।

'सार्थवाहजी! आपकी बात अधिकांश में सही है। परन्तु अब मेरा शरीर जीर्ण हो गया है और दिन-दिन जीर्ण होता जा रहा है। अतः मैं अपनी पूर्ण स्वस्थता में ही अपना कर्त्तव्य

बजा दूँ- यह बात उत्तम है। यद्यपि मेरे साधु महत्त्वाकांक्षी नहीं हैं, विनीत हैं, अनुशासन को मान्य करने वाले हैं और मेरी आज्ञा को 'तहत्ति' रूप से स्वीकार करते हैं, फिर भी बड़े का यह कर्त्तव्य है कि सबकी राय जाने और योग्य समय में उन्हें सम्मत करके योग्य कार्य करे। कुछ कार्यों में आज्ञा चलाने की अपेक्षा 'यह कार्य हमारा है और हम सबको सम्मत होकर करना चाहिये' - यह भान उत्पन्न करना अच्छा है और इसलिए मेरा यह प्रयत्न है।'

'धन्य हैं गुरुदेव! गौरव आप जैसे आत्मा को वरण करके ही गौरवशाली हो सकता है- धन्य बन सकता है'- सार्थवाह गुणसुन्दर ने श्रद्धा से गद्‌गद् होकर कहा। उन्होंने दैनिक प्रत्याख्यान लिये। मंगल-पाठ सुना और वे वन्दना करके बाहर निकले।

उपाश्रय के बाहर सार्थवाह ने गाथापति से कहा- 'गुरुदेव की यह शीघ्रता कुछ समझ में आयी?' 'इसमें क्या समझना है? स्पष्ट ही गुरुदेव की वृद्धावस्था है। शरीर थक गया है। इसलिए अपना उत्तराधिकारी आचार्य नियुक्त कर देना चाहते हैं। मैं तो यही समझा हूँ।'

'संघदास! यह इतनी-सी बात नहीं है। इसमें गहरा भेद है।'

'तुम्हारा यह आशय है कि गुरुदेव अन्तिम तैयारी कर रहे हैं।'

'मुझे तो ऐसा ही लगता है। गुरुदेव संलेखना की तैयारी कर रहे हैं। उन्हें अपने आयुष्य के विषय में कुछ न कुछ पूर्वाभास हो गया है।'

गाथापति कुछ समय तक मौन रहकर चिन्तन करते रहे। फिर कुछ पल बाद बोले- 'सार्थवाह! आपका अनुमान सत्य लगता है। हमें भी अब सेवा के लिये उद्यत रहना चाहिये।'

उन दोनों ने सन्तों के पास सूचना तत्काल प्रेषित कर दी।

आचार्यदेव ने गणी- मुनिराज से कहा- 'आज मैं संलेखना प्रारम्भ कर रहा हूँ। यह बात अभी बाहर प्रकट न हो।'

यशोराज मुनिराज यह बात सुनकर चौंके। उनके मुख से एकदम यह बात निकल गई- 'भन्ते! अभी से यह क्यों?'

'वत्स! जब भी कोई साधक अपनी स्वस्थ दशा में यह क्रिया करेगा, तब यही प्रश्न उठेगा'- आचार्यदेव ने उत्तर दिया।

'भन्ते! मैं अन्तराय देना नहीं चाहता हूँ। परन्तु आयुष्य कितना है- इसका क्या पता? मेरी तो यही जिज्ञासा है कि क्या कोई दिव्य संकेत प्राप्त हुआ है?'

आचार्यश्री ने संक्षिप्त उत्तर दिया- 'हाँ, गुरुदेव की ओर से।'

उन्होंने संलेखना के क्रम के अनुसार तप प्रारम्भ कर दिया। (क्रमशः)

बाल-स्तम्भ

अंधानुकरण से बचें

व्याख्यानी श्री ज्ञानमुनिजी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अगस्त 2016 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

एक राजा को दमे की बीमारी हो गई थी। उसे खाँसी आने पर बलगम (कफ) निकलता था। राजा ने सोचा कि राजसभा में तो मंत्री, सरदार और बड़े-बड़े अधिकारी लोग आते रहते हैं, इसलिए जहाँ कहीं थूकना अच्छा नहीं है। ऐसा सोचकर उसने अपनी गादी के बगल में राख से भरा हुआ कुण्डा रखवा दिया और जब खाँसी आती एवं कफ निकलता तब उसमें थूक कर उस पर राख डाल देता। इस प्रकार राज सभा में बैठते हुए और उस कुण्डे में थूकते हुए अनेक वर्ष बीत गए।

समय आने पर उस राजा का देहान्त हो गया। धीरे-धीरे पुराने सरदार और मुसद्दी भी संसार से प्रयाण कर गये। अब पुरानी जाजम हटाकर बिल्कुल नई जाजम बिछाई गई। सरदार और मुसद्दी सब नए आए। जब नये राजा के राजगद्दी पर विराजने का समय आया, तब सारी सजावट नई की गई। सभी सरदार और बड़े-बड़े लोग आकर यथास्थान बैठ गए। परन्तु वह कुण्डा जहाँ पर पहले राजा के समय रखा हुआ था, ज्यों का त्यों रहा, किसी ने भी उसे हटाया नहीं। उसकी ओर जब लोगों की नज़र गई, तब लोगों ने विचार किया कि राजगद्दी के पास यह मिट्टी का कुण्डा क्यों? मालूम पड़ता है कि इसमें कोई खास करामात है तभी तो एक अर्से से यह यहीं रखा हुआ है और संभवतः इसी के प्रताप से यह राज्य चलता है।

नये राजा के राज्यारोहण की सब तैयारी कर दी गई, नया गलीचा बिछा दिया गया और नए राजा को राजतिलक करके पगड़ी पहना दी गई तथा जो दस्तूर और रीति-रिवाज होते हैं

वे सब कर दिए गए। परन्तु थूकने का वह कुण्डा ज्यों का त्यों पड़ा रहने दिया। इस प्रकार उस राजगद्दी पर तीन-चार पीढ़ियाँ बीत गई और इतनी पीढ़ियाँ बीत जाने पर उस कुण्डे का महत्त्व और अधिक बढ़ गया। लोग समझने लगे कि इसके बलबूते पर ही राज्य चल रहा है। अब जो भी राज दरबार में आता है, वह पहले उसे ही नमस्कार करता है, बाद में राजा को नमस्कार करता है।

एक बुद्धिमान नया राजा राजगद्दी पर बैठा, तो उसने पहले ही दिन देखा कि लोग आकर पहले इस कुण्डे को नमस्कार करते हैं और बाद में मुझे नमस्कार करते हैं। वह विचारने लगा कि आखिर यह मामला क्या है? उसने कहा- "अरे सरदारों! क्या यह मिट्टी का कुण्डा यहाँ रखना शोभाजनक है?"

सरदार बोले- "महाराज! यह आप क्या फरमा रहे हैं? इसी कुण्डे में ही तो सारी करामात है। यही सर्वसिद्धि-प्रदाता है। इसी के प्रताप से तो आपका यह राज्य अनेक पीढ़ियों से निर्विघ्न चला आ रहा है। आप भी पहले इसे नमस्कार कीजिए और फिर राजगद्दी पर बैठिए।"

राजा आश्चर्य से बोला- "क्या यह कुण्डा ही सबकुछ है और मेरी पुण्यवानी नहीं? राज्य-शासन इसके ही प्रताप से चलता है, यह कहना मेरी दृष्टि में बिल्कुल गलत है और अज्ञान का सूचक है। मैं इसे हर्गिज नमस्कार नहीं करूँगा। मुझे यह राज्य मिला है तो मेरी योग्यता और पुण्यवानी से मिला है। यदि मेरी भुजाओं में शक्ति होगी तो मैं राज्य कर लूँगा, अन्यथा नहीं। परन्तु इस मिट्टी के कुण्डे में कोई करामात है, यह मानने को मैं तैयार नहीं हूँ। आप लोग कहते हैं कि यह सर्वसिद्धिप्रदाता है, तो मैं पूछता हूँ कि कब किस दिन इसे आहुतियाँ दी गई और कब किसने इसे देव बनाकर यहाँ पर रखा है?"

लोगों ने कहा- "नहीं महाराज! इस बात का तो हम लोगों में से किसी को पता नहीं है।"

राजा बोला- "तब तो आप लोग बेसिर-पैर की बात को यों ही लकीर के फकीर बने मानते चले आ रहे हैं। थोड़ी देर शान्त होकर सोचें कि इसे यहाँ रखने का रहस्य क्या है? यह क्यों यहाँ रखा गया है?"

सोचते-सोचते राजा के ध्यान में असली बात आ गई कि संभवतः हमारे वंश में किसी राजा को खाँसी-दमे की बीमारी हुई होगी और कफ थूकने के लिए इसे यहाँ रखा गया होगा। उनके स्वर्गवास के पश्चात् किसी ने इसे फेंकने का साहस नहीं किया और इसे चमत्कारिक माना जाने लगा। उसने कहा- "मैं इस मिट्टी के ठीकरे को नहीं मानता हूँ।" यह कहकर उसने कुण्डे को वहाँ से हटवा दिया।

यह दृश्य देखकर लोग विचारने लगे कि राजा की पुण्यवानी अब समाप्त होने को है। अब ये बच नहीं सकेंगे। इस कुण्डे का अपमान करने से तो ये आज ही रात को मर जायेंगे। लोग मन में ऐसा विचार करते ही रहे और नए राजा की राजगद्दी का बाल भी बांका नहीं हुआ। राजगद्दी पर बैठते ही इसने राज्य का संचालन इस प्रकार किया कि लोग दाँतों तले अंगुलि दबाकर रह गए। चारों ओर सुनने में आया कि उस मिट्टी के कुण्डे में कोई करामात नहीं थी जिसे कि हम लोग 'कुण्डदेव' या 'कुण्डेश्वर' मानकर पूजते आ रहे थे।

छह मास के पश्चात् फिर दरबार भरा, तब राजा ने अपने सरदारों और मुसद्दियों से कहा- "आप लोग उस मिट्टी के ठीकरे को ही राज्य प्रदाता और संचालक मान रहे थे। मैंने उसे वहाँ से हटवा दिया, परन्तु इतने समय के बीतने पर भी मेरा कुछ भी नहीं बिगड़ा है। आप लोग ही बतलायें कि राज्य-शासन की व्यवस्था कैसी रही?"

राजा के प्रश्न पर सब लोगों ने एक स्वर से कहा- "महाराज! क्या कहना है व्यवस्था का। राज्य शासन की व्यवस्था बहुत सुन्दर रही है।"

तब राजा ने कहा- "भाइयों! उस कुण्डे के पीछे भी एक इतिहास रहा है। वह यह कि हमारे पूर्ववर्ती राजाओं में से किसी को खाँसी-दमे की बीमारी रही होगी और उनके कफ थूकने के लिए वह कुण्डा यहाँ रखा गया होगा। परन्तु उनके स्वर्गवास के पश्चात् किसी ने उसे फेंका नहीं और वह यहीं पर रखा रहा। इस बात पर सोच-विचार किये बिना ही उसे पूजना और नमस्कार करना प्रारम्भ हो गया। धीरे-धीरे उसने एक प्रथा का स्थायी रूप ले लिया। इसलिए हम लोगों को लकीर का फकीर नहीं होना चाहिए और ठण्डे दिमाग से मूल बात का विचार करना चाहिए। उसकी बुनियाद की ओर ध्यान रहना चाहिए कि अमुक बात या रीति-रिवाज, जो समाज या देश में प्रचलित है, वह कहाँ तक ठीक है।"

-'दिवाकर देन' पुस्तक से साभार

प्रश्न-

1. अंधानुकरण से क्या अभिप्राय है?
2. कुण्डे का महत्त्व और अधिक क्यों बढ़ गया?
3. 'लकीर के फकीर' एवं 'दांतों तले अंगुलि दबाना' मुहावरे का वाक्य में प्रयोग कीजिए।
4. ऐसा कोई अन्य प्रसंग बताइये, जिसमें अंधानुकरण हुआ हो। (पाँच पंक्तियों में)
5. समास-विग्रह कीजिए-

   राज्य-शासन, राज्यारोहण, देहान्त, कुण्डदेव।

बाल-स्तम्भ [मार्च-2016] का परिणाम

जिनवाणी के मार्च-2016 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'करुणा की कहानियाँ' के प्रश्नों के उत्तर 24 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	अरिन चौरड़िया-जयपुर (राज.)	29
द्वितीय पुरस्कार-300/-	कुसुम मुरडिया-बल्लारी (कर्नाटक)	28
तृतीय पुरस्कार- 200/-	अरिष्ट कोठारी-अजमेर (राज.)	27
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	यश मनीष बोथरा-बीकानेर(राज.)	26.5
	वैभव जैन-हिण्डौन (राज.)	26
	आशा मिन्नी-भीनासर(राज.)	25.5
	सम्यक् कुमार-रामपुरा (मध्यप्रदेश)	25
	रोहन किरण-नया नाशिक (महा.)	25

बाल-स्तम्भ [अप्रेल-2016] का परिणाम

जिनवाणी के अप्रेल-2016 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'अमित में बदलाव' के प्रश्नों के उत्तर 31 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	अभिषेक पालरेचा-जोधपुर (राज.)	30
द्वितीय पुरस्कार-300/-	छवि जैन-बूंदी (राज.)	29.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	साक्षी जैन-सवाईमाधोपुर (राज.)	29
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	कुसुम मुरड़िया-बल्लारी(कर्नाटक)	28.5
	चेतन जैन-टोंक (राज.)	28
	प्रांजल जैन-उज्जैन (मध्यप्रदेश)	27
	नमिता जैन-अजमेर (राज.)	27
	नेहा भंसाली-पाली (राज.)	27

सामायिक उपकरण संघ कार्यालय में उपलब्ध

आपको सूचित करते हुए हर्ष है कि सामायिक उपकरण का सेट जिसमें दुपट्टी, चोलपट्टा, आसन, मुँहपत्ती, पूंजणी, माला तथा प्रतिक्रमण की पुस्तक सम्मिलित है, संघ कार्यालय में लागत मूल्य से भी कम **रियायती दर पर 200/- रुपये** में उपलब्ध है। *-पूरणराज अबानी, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ*

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

वीर गुण-गौरव गाथा- आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. ***विवेचक एवं सम्पादक***- श्री सम्पतराज चौधरी, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) फोनः 0141-2575997, फैक्स नं. 0141-4068798, Email-sgpmandal@yahoo.in, ***पृष्ठ***-286+28, ***मूल्य***- 75 रुपये, सन् 2016

अध्यात्मयोगी, इतिहास मार्तण्ड आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी महाराज द्वारा रचित 'वीर गुण-गौरव गाथा' कृति अभी तक अप्रकाशित थी। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की भावना का आदर करते हुए कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी ने 578 पद्यों एवं पाँच सर्गों में रचित इस सरस, सहज एवं गेय कृति का सार्थक एवं मूल्यवान् विवेचन कर इसकी उपयोगिता में कई गुणी अभिवृद्धि की है। प्रभु महावीर के मूल कथा सूत्रों को अनेक आगमों एवं पौराणिक ग्रन्थों से ग्रहण कर उन्हें काल क्रमानुसार संजोकर आचार्य हस्ती ने इस कृति का प्रणयन किया था, जिसका हिन्दी गद्य में भाष्य, विवेचन, कथा एवं घटनाओं के प्रामाणिक उल्लेख के साथ चौधरी सा. ने जिस ढंग से श्रमपूर्वक व संगतिपूर्वक निरूपण किया है, वह स्तुत्य है।

कथा शैली में योजित इस प्रबन्ध काव्य में भगवान महावीर के 'नयसार' के भव से तीर्थंकर बनने तक की महायात्रा का लयबद्ध वर्णन है। हिन्दी काव्य में भगवान् महावीर के विस्तृत जीवन चरित्र के रूप में सम्भवतः यह प्रथम कृति है। इसकी विषय वस्तु पाँच सर्गों में विभाजित है। प्रथम सर्ग में पूर्व जंन्म की घटनाएँ एक के बाद एक संकेत रूप में प्रस्तुत की गई हैं। द्वितीय से पंचम सर्ग यावत् भगवान् के जन्म, नामकरण, विद्यार्जन, साधनाकाल, कैवल्यकाल एवं परिनिर्वाण का वर्णन किया गया है। साधनाकाल के अन्तर्गत बारह वर्षावास, शूलपाणि यक्ष का उपद्रव, चण्डकौशिक को प्रतिबोध, संगमदेव के उपसर्ग, चन्दना से भिक्षा ग्रहण आदि का निरूपण किया गया है। कैवल्यकाल में तीस वर्षों के वर्षावास, समवसरण, मेघकुमार व नन्दीषेण की दीक्षा, जमालि का दुराग्रह, आनन्द गाथापति को प्रतिबोध, शालिभद्र और धन्ना का वैराग्य एवं उनकी दीक्षा, चुलनी पिता को बोध, श्रमणोपासिका जयन्ती के प्रश्न, मृगावती की दीक्षा, श्रमणोपासक कुंडकौलिक और

सद्दालपुत्र का व्रत ग्रहण, स्थविरों से प्रश्न और समाधान, गोशालक द्वारा तेजोलेश्या का प्रहार, भगवान् की रोग मुक्ति, रेवती का तीर्थंकर पद का उपार्जन, जमालि को संघ से पृथक् करना, आजीविकों के प्रश्न, सोमिल के प्रश्नोत्तर, गौतम की जिज्ञासा आदि का 369 पद्यों में विस्तार से वर्णन उपलब्ध है। अन्त में पुष्पिका और परिशिष्ट योजित हैं। परिशिष्ट में भगवान महावीर का जीवन परिचय, चातुर्मास, तप, गणधर का परिचय एवं उनकी शंकाओं का समाधान, महत्त्वपूर्ण प्रसंग एवं आगमों से लगभग 200 सूक्तियाँ प्रकाशित हैं। अनुक्रमणिका पद्यों की विषयवस्तु के अनुक्रम में व्यवस्थित है। काव्य की रचना की सहजता, सरलता और सरसता मन को लुभाती है।

बालकों की धार्मिक पाठशालाओं में श्रमणोपासिका जयन्ती के प्रश्न, रोह अनगार के प्रश्नोत्तर, स्थविरों के प्रश्न और समाधान, केशी-गौतमचर्चा, सोमिल के प्रश्नोत्तर, पार्श्वापत्य गांगेय अनगार के प्रश्नोत्तर, कालोदायी अनगार के प्रश्न-समाधान के पद्यों को स्मरण करवाये जा सकते हैं। इस सम्पूर्ण काव्य का मंचन भी संभव है। स्वाध्यायी, शोधार्थी, जिज्ञासु पाठकों के लिए यह पुस्तक संग्रहणीय है।

दिवाकर देन- संग्राहक/निर्देशक- रोचक व्याख्यानी श्री ज्ञानमुनिजी म.सा., ***सम्पादक***- डॉ. दिलीप धींग, ***प्रकाशक***- (1) रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनोलोजी, सुगन हाउस, 18, रामानुज अय्यर स्ट्रीट, साहुकार पेट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु), दूरभाषः 044-25298082, 25296567, (2) अ.भा.श्री भगवान जैन दिवाकर अहिंसा सेवा संघ, 501, प्रिंसेस एम्पायर, रेसकोर्स रोड़, इन्दौर-452003 (म.प्र.), मो. 09425106054, ***पृष्ठ***-300, ***मूल्य***- 200 रुपये, सन् 2016

जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. के प्रभावी प्रवचनों का संकलन 'दिवाकर दिव्य ज्योति' (भाग 1 से 21) में किया गया है। इन प्रवचनों में प्राप्त कथा प्रसंगों का श्री ज्ञानमुनिजी ने चयन किया, जिसे सम्पादक डॉ. धींग ने सुव्यवस्थित कर ग्रंथ का स्वरूप दिया। इसमें आगमिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, काल्पनिक, संस्मरणात्मक इत्यादि सभी प्रकार के 200 कथानक, आख्यान, रूपक और दृष्टान्त हैं। कतिपय कथा शीर्षक इस प्रकार हैं- माता का उपकार, अडिग गुरु श्रद्धा, श्रावक की वसीयत, सादगी की मिसाल,, विद्याप्राप्ति और उपयोग, मन की दृढ़ता, समय-समय की बात, आतंक का अंत आदि। अन्त में सन्तों के विचार, अभिमत, जैन दिवाकर जी का परिचय आदि दिए गए हैं। बालकों में संस्कार देने हेतु दम्पतियों के लिए, प्रवचन हेतु स्वाध्यायियों के लिए, कथाकारों एवं जिज्ञासु पाठकों के लिए यह उपयोगी पुस्तक है।

शिविर रिपोर्ट

ग्रीष्मकालीन शिविरों में बही ज्ञान की धारा

श्री नमन मेहता

आधुनिक युग में भौतिकवादी होती पीढ़ी को धार्मिकता के संस्कारों की महती आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष भी अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन उत्साहपूर्वक भारतवर्ष के 72 स्थानों पर किया गया। इस बार ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन युवक परिषद् ने अ.भा. श्री जैन रत्न संस्कार केन्द्र, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के सहयोग से किया। शिविर पूर्व प्रचार-प्रसार एवं शिविरों के निरीक्षण में संस्कार केन्द्रों के संयोजक युवारत्न श्री हर्षवर्द्धन जी ललवाणी एवं सचिव श्री राजेशजी भण्डारी का सहयोग प्राप्त हुआ। राजस्थान के पोरवाल, पल्लीवाल, मारवाड़, मध्य राजस्थान आदि क्षेत्रों के साथ महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों, आगरा (उ. प्र.), मोरवण बांध (म.प्र.) आदि कई क्षेत्रों में शिविरों का आयोजन हुआ, जिनमें 5000 से भी अधिक शिविरार्थियों ने धार्मिक ज्ञान प्राप्त किया, संस्कारों को जीना सीखा। लगभग सभी स्थानों पर कक्षाओं के अनुरूप अध्ययन एवं ज्ञानार्जन का क्रम बहुत ही सुंदर रूप लिये हुए रहा। प्रतियोगिताओं के प्रति उत्साह का वातावरण दिखा, सभी प्रश्नों पर शिविरार्थियों के उत्तर तुरंत तैयार थे, इसे देखकर सभी स्थानों पर हमारा उत्साह दुगुना चौगुना होता गया। सभी स्थानीय संयोजकों, अध्यापकों एवं कार्यकर्ताओं का स्नेह, आतिथ्य सत्कार, समर्पण, सहकारिता आदि देखकर इन शिविरों की उपलब्धियों की सहज ही अनुभूति मिलती गयी।

सदैव की भाँति कई नवीन प्रयोग किए गए। सामायिक उपकरण तो दिये ही गये, पर इस बार बालिकाओं के लिए विशेष गणवेश निर्धारित कर उसकी व्यवस्था की गयी, इससे शिविर के दौरान बालिकाओं में भी हर स्थान पर नवीन एकरूपता देखने को मिली। शिविरार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़े, इस हेतु इस बार सामायिक उपकरण रखने हेतु पर्यावरणानुकूल (इको फ्रेंडली) जूट के बैग विशेष रूप से बनवाकर सभी शिविरार्थियों को प्रदान किये गये। समुचित उपहार एवं पुरस्कारों की व्यवस्था की गई।

शिविर के शिविरार्थियों हेतु अच्छी व्यवस्था बन सके, इसको ध्यान में रखते हुए अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, स्वाध्याय संघ एवं श्राविका मण्डल ने संयुक्त रूप से कार्य करते हुए शिविर पूर्व दूदू, किशनगढ़, मदनगंज, अजमेर, ब्यावर, मेड़ता, गोटन, पीपाड़, नागौर, बिलाड़ा,

भोपालगढ़ आदि क्षेत्रों में प्रचार प्रसार हेतु प्रवास कार्यक्रम आयोजित कर वहाँ पर शिविर को सुचारू बनाने की बात प्रमुखता से रखी ।

शिविरार्थियों को अच्छा अध्यापन प्राप्त हो सके, इस हेतु कुछ स्थानों पर एक नवीन प्रयोग के तौर पर शिक्षकों को भी शिविर पूर्व विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया, जिसमें वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री नेमीचंदजी कर्णावट-भोपालगढ़ का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा 24 जुलाई 2016 को आयोज्य परीक्षा को ध्यान में रखते हुए शिविरार्थियों के पूर्वाभ्यास हेतु इस बार प्रश्न-पत्र शिक्षण बोर्ड के माध्यम से ही बनवाये गये।

शिविरार्थियों में आचार धर्म का विशेष प्रभाव एवं आकर्षण पैदा करने हेतु प्रतिदिन एक नये नियम को जीवन में अपनाने की नये ढंग से प्रेरणा की गई, जो काफी सफल रही। शिविर के दौरान ही **आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचंद्र जी म.सा.** का आचार्य पदारोहण रजत साधना वर्ष का सम्पूर्ति दिवस 27 मई 2016 को उपस्थित हो रहा था। अतः इस दिन सभी स्थानों पर काफी शिविरार्थियों ने एकाशन व्रत अंगीकार कर आचार्य भगवंत के प्रति अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति की। चतुर्दशी एवं पाक्षिक पर्व को ध्यान में रखते हुए भी नियमों का निर्धारण किया गया। जीवन में आचार पक्ष को मजबूत बनाने की दिशा में बालकों ने अपने कदम आगे बढ़ाये।

शिविरार्थियों में विशेष जागरणा बने एवं व्यक्तित्व का विकास हो, इस हेतु प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। जब ये प्रतियोगिताएँ वर्तमान विषय एवं परिस्थितियों से जुड़ जाती हैं तो इनका महत्त्व विशेष रूप से बढ़ जाता है। इस बार जल संरक्षण विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया। सभी स्थानों पर बालक-बालिकाओं ने उत्साहपूर्वक अपने-अपने ढंग से पोस्टर बनाए। पोस्टर निर्माण के कारण उनके मस्तिष्क में जल संरक्षण का महत्त्व भविष्य के लिए भी स्थिर हो गया। अन्य प्रतियोगिताओ में इतिहास के कुछ पात्रों की विशेष जानकारी शिविरार्थियों को सीधे मिल सके, इस हेतु नाटिका प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत अर्जुन माली, रोहणिया चोर, हरिकेशीबल मुनि, गजसुकमाल मुनि, आर्द्रमुनि एवं उनकी चर्चाएँ आदि ऐतिहासिक घटनाओं को नाटक के रूप में परिवर्तित कर मंचन हेतु सभी शिविर-स्थलों पर भेजा गया। ऐतिहासिक पात्रों की जानकारी हेतु मूक अभिनय प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

प्रत्येक शिविर स्थल को संभालने के लिये अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में शिविर प्रवास यात्रा कार्यक्रम संचालित किया गया । यात्रा सर्वमंगल बने, इस हेतु यात्रा का प्रारंभिक चरण अजमेर रखा गया, **जहाँ पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत**

श्री 1008 श्री हीराचंद्र जी म.सा. विराजमान थे, उन्हीं पूज्यप्रवर के श्रीमुख से मंगलपाठ लेकर यात्रा कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया।

22 मई 2016 की प्रात: शुभ वेला होते ही ग्रीष्मकालीन शिविरों का मंगल शुभारम्भ हो चुका था। इस बार शिविर की गुणवत्ता पर विशेष जोर दिया गया तदर्थ प्रत्येक शिविर स्थान पर तीन बातों की प्रमुख रूप से प्रेरणा की गयी-1. शिविरार्थियों का शिविर के पश्चात् भी ज्ञान का क्रम अनवरत रूप से जारी रहे, इस हेतु संस्कार केन्द्र स्थापित करने हेतु सभी जगह निवेदन किया गया। 2. ज्ञान की स्मृति बनाये रखने हेतु अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा 24 जुलाई 2016 को आयोजित होने वाली परीक्षा में भाग लेना अनिवार्य किया गया। 3. शिविरार्थी जितना भी अपनी क्षमतानुसार सीखे, उसे अच्छे से सीखे, शुद्ध उच्चारण के साथ सीखे, ऐसा सीखे कि जीवन में भूले नहीं, इस हेतु सभी शिविरार्थियों एवं अध्यापकों को विशेष रूप से प्रभावी प्रेरणा की गयी।

छात्रों को प्रेरणा की गई कि वे शिविर से संस्कारों की पूंजी लेकर जाए तथा निरन्तर उसमें अभिवृद्धि करे। जो व्रत-प्रत्याख्यान यहाँ स्वीकार किये जा रहे हैं, उनमें से जो नियम अच्छे लगें, उन्हें जीवन में आगे भी अपनाने की प्रेरणा की गई। गुरुजनों के प्रति आदर भाव जाग्रत हों, इस हेतु युवक परिषद् की ओर से विनय वंदना की गयी एवं शिविरार्थियों को इस हेतु प्रेरित किया गया।

सर्वप्रथम पड़ाव के रूप में **मदनगंज** शिविर रहा। कुछ स्थानीय कारणों से यहाँ पर शिविर का आयोजन कुछ पहले हो गया और इस दिन परीक्षा का दिवस रहा। फिर भी स्थानीय संचालकों ने सुंदर व्यवस्था कर परीक्षा से पूर्व सभी शिविरार्थियों की कक्षावार समीक्षा एवं फिर सभी शिविरार्थियों की सामूहिक कक्षा की व्यवस्था की गयी। यहाँ शिविरार्थियों की 120 के लगभग संख्या थी, जो गणवेश में सुन्दरता का दृश्य लिए हुए थे। सभी शिविरार्थियों में अच्छा अनुशासन था। शिविरार्थियों को करुणा की विशेष प्रेरणा की गयी। पोस्टर प्रतियोगिता पूर्व परम्परा के अनुरूप इस बार भी बहुत ही सुंदर एवं मनमोहक थी। मोनिका जी डांगी, मीनाक्षी जी मेहता, विजेता जी सोनी, चंद्रा जी कुम्भट, राजेश जी कोठारी अध्यापक के रूप में अपनी महती सेवाएं प्रदान कर रहे थे। शिविर के आयोजन में क्षेत्रीय प्रधान मनीष जी डांगी, मनोज जी मेहता एवं अन्य युवा साथी अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे थे।

तत्पश्चात **किशनगढ़** शहर जाना हुआ। श्रावक संघ के पदाधिकारियों में उत्साह का वातावरण था। आचार्य भगवन्त के यहाँ शेखेकाल विराजने के दौरान कृत प्रभावी प्रेरणा से विशेष उत्साह का संचार था। सभी 50 बालक-बालिका दत्तचित्त थे। फूलवंती जी लोढ़ा, ललिता जी, बरखा जी एवं साथ ही स्थानीय संघ के अध्यक्ष एवं मंत्री आदि का भी शिविर

आयोजन में विशेष योगदान रहा। यहाँ से **दूदू** जाना हुआ, जहाँ घरों की संख्या कम होते हुए भी शिविर आयोजन में निरंतरता जारी रही ।

दूदू से जयपुर मौजी कॉलोनी में विराजित महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन का लाभ प्राप्त हुआ एवं विशिष्ट मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। यहाँ रात्रि प्रवास के पश्चात् अगले दिवस युवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी दुधेड़िया, बैंगलोर का यात्रा कार्यक्रम में खेरली तक सान्निध्य प्राप्त हुआ। सुबह का कार्यक्रम मानसरोवर, जयपुर शाखा में रखा गया। लगभग 135 शिविरार्थी अपने धार्मिक ज्ञान में अभिवृद्धि कर रहे थे। शिविरार्थियों का उत्साह देखने लायक था। सभी युवा कार्यकर्ता जोश के साथ पुरुषार्थ कर रहे थे।

यहाँ से पल्लीवाल क्षेत्र की ओर बढ़े। पल्लीवाल क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रधान श्री मनीष जी जैन-खेरली एवं उत्साही कार्यकर्ता युवारत्न श्री राहुल जी जैन-भरतपुर का सह सान्निध्य प्राप्त हुआ। **महुआ** क्षेत्र में श्री अशोक जी जैन के नेतृत्व में शिविर की सरिता बह रही थी। यहाँ के अध्यापक अनुभवी होने के साथ साथ विशेष योग्यता प्राप्त व्यक्तित्व वाले हैं, जिससे सभी शिविरार्थियों में भी भरपूर उमंग थी, सीखने की ललक थी, भरी दोपहरी में भी 54 शिविरार्थी उपस्थित होकर ज्ञानार्जन कर रहे थे। यहाँ से **मण्डावर** पहुँचने पर 45 के लगभग शिविरार्थियों ने 'जय जिनेन्द्र' के साथ सभी का अभिवादन किया। श्री संजय जी जैन के नेतृत्व में शिविर की व्यवस्था प्रगतिमान थी। श्री अशोक जी जैन एवं पारीवारिक जनों द्वारा आत्मीय भाव से आतिथ्य सत्कार अनुमोदनीय था ।

रत्नसंघीय संत श्रद्धेय श्री आशीष मुनि जी म.सा. की जन्म भूमि **हरसाना** ग्राम में 63 के करीब शिविरार्थी बहुत ही व्यवस्थित एवं अनुशासित रूप से ज्ञान-ध्यान में निरंतर आगे बढ़ रहे थे। जैनों के घरों की न्यूनता एवं जैनेतर बच्चों की संख्या अधिक होते हुए भी शिविर का उत्साह देखते ही बनता था। वीरपिता सुश्रावक श्री शिवदयाल जी जैन के मार्गदर्शन में शिविर का आयोजन सुचारू रूप से हुआ। पहाड़ों के बीच घिरी धार्मिक नगरी **खोह** में सभी की धार्मिक रुचि एवं सहयोग बराबर रहता है। श्री प्रसून जी जैन, सुमतचंद जी जैन, हेमलता जी जैन आदि के सत्प्रयासों से यह पावन कार्य अपने लक्ष्य की ओर गतिमान था।

खेरली में विलम्ब होने के पश्चात् भी शिविरार्थी पूर्ण अनुशासन भाव से अध्ययन रत थे। सभी ने कार्यक्रम एवं लक्ष्यों को ध्यान से सुना। यहाँ पर व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का लाभ सभी शिविरार्थियों को मिल ही रहा था, साथ ही हमें भी सहज में ही सान्निध्य प्राप्त हो गया। यहाँ पर विपिन जी जैन, धीरज जी जैन, सुश्रावक श्री अमरचंद जी जैन आदि के निर्देशन में शिविर प्रगतिपथ पर था।

रात्रि में **नदबई** का कार्यक्रम रखा गया। रात्रि में पहुँचने के समय मौसम के कारण बिजली न होने के बावजूद सभी शिविरार्थी एवं कार्यकर्तागण इंतजार में रुके रहे। कार्यक्रम पूर्ण व्यवस्थित रूप से सम्पन्न हुआ। यहाँ की विशेषता रही कि सभी शिविरार्थियों को नवीन ज्ञान के साथ पूर्व ज्ञान भी कण्ठस्थ था। उच्चारण आदि की शुद्धि भी स्मरणीय रहेगी। श्री नरेश जी जैन, श्री मनीष जी जैन, श्री सचिन जी जैन, दीक्षा जी एवं अनुजी आदि का पुरुषार्थ सभी शिविरार्थियों में झलक रहा था। यहाँ से रात्रि प्रवास हेतु **भरतपुर** प्रस्थान किया। यहाँ दो स्थानों पर शिविर का आयोजन होता है- गोपालगढ़ एवं वासनगेट। गोपालगढ़ भरतपुर में शिविरार्थियों की संख्या भले ही 28 थी, परंतु शिक्षकों एवं शिविरार्थियों का तालमेल देखने लायक एवं निश्चित रूप से वृद्धि का सूचक था। श्री पारसचंदजी जैन अपने संयोजकत्व में शिविर को अच्छी दिशा प्रदान कर रहे थे। वासनगेट भरतपुर में श्री धर्मेन्द्रजी एवं मानवेन्द्रजी जैन आदि युवा साथीगण शिविर को संजीदा रूप देते हुए शिविरार्थियों को आगे बढ़ने हेतु प्रभावी प्रेरणा प्रदान कर रहे थे। शिविराथियों को प्रार्थना की लय हेतु विशेष शिक्षण भी दिया गया। शिविरार्थियों की संख्या 52 थी।

गंगापुरसिटी के युवा साथियों का उत्साह अपने चरम पर था। सभी शिविरार्थी व्यवस्थित रूप से अध्ययन में रत थे। अनुशासन का सभी की तरफ से विशेष खयाल रखा गया। श्री शीतल जी जैन, श्री राकेश जी पल्लीवाल, श्री धर्मेश जी जैन, श्री अरविंद जी जैन एवं युवा साथी समर्पण भाव से संघ सेवा में संलग्न थे। शिक्षकों की शिविरार्थियों पर अच्छी पकड़ थी।

अगले दिवस को पोरवाल क्षेत्र के सवाईमाधोपुर, कुश्तला, अलीगढ़ रामपुरा, उखलाना, जैनपुरी, चौथ का बरवाड़ा, देई, सुमेरगंज मण्डी जाने का कार्यक्रम रखा। **बजरिया, आवासन मण्डल, आलनपुर, मण्डी रोड़** एवं **सवाई माधोपुर शहर** केन्द्र के लगभग 450 शिविरार्थियों को अपने अपने केन्द्रो पर विशेष प्रेरणा की गयी। सभी केन्द्रों के शिविरार्थी जैसा कि सवाईमाधोपुर का आध्यात्मिक जगत में नाम है, उसी अनुरूप यथा नाम तथा गुण की कहावत को चरितार्थ करते हुए धर्मक्रिया एवं शिक्षण में नई ऊँचाइयों को छूते हुए आगे बढ़ रहे थे। प्रत्येक शिविर केन्द्र पर पोस्टर प्रतियोगिता की ललक दर्शनीय थी। सभी केन्द्रों के शिक्षकगणों का प्रयास अतुलनीय लगा। युवा कार्यकर्ता अपने कार्य से युवक परिषद् का नाम निश्चित रूप से उच्चतम बनाने का भाव मन में लिये हुए लगे। बजरिया में सर्वश्री अंकित जी, राजेश जी, कनिष्क जी, श्रीमती रजनी जी जैन, आवासन मण्डल में बुद्धिप्रकाश जी, लल्लुलाल जी, ऋषभजी, रवीन्द्र जी, आलनपुर में महेन्द्र जी, श्रीमती मोहिनी देवी जी, मण्डी रोड में महेन्द्र जी, आशीष जी, चन्द्रकांत जी, सवाई

माधोपुर शहर में कपिल जी, पारस जी, मुकेश जी, अनिल जी, अंकित जी आदि सभी जनों की महनीय सेवाए शिविर के दौरान पूरे जी जान से प्राप्त हुई। यहाँ से **कुश्तला** पहुँचे जहाँ मात्र आठ घरों से करीब 32 शिविरार्थी सुश्री कौशल्या जी, धर्मचंद जी आदि के निर्देशन में अध्ययनरत थे। साथ ही यहाँ भी पोस्टर प्रतियोगिता की झलक देखने को मिली।

जैनपुरी नाम से ख्यात अलीपुर ग्राम मीणा समाज का जैन धर्म पर आस्थावान है। यहाँ श्री रतनलाल जी बाफना के सौजन्य से स्थानक भवन का निर्माण भी हाल में हुआ। यहाँ पर मनोज जी अध्यापन कार्य करवा रहे थे। यहाँ पर धार्मिक पाठशाला भी नियमित रूप से चलती हैं, किन्तु प्रगति की संभावना अभी भी है। इसी तरह **उखलाना** के मीणा समाज के सदस्य सन 1854 से जैन धर्म का पालन कर रहे हैं । यहाँ का माहौल बहुत ही प्रभावक था। सभी शिविरार्थी गणवेश में सामायिक साधना कर रहे थे तो अध्यापक भी सामायिक गणवेश में ही थे। सभी अध्यापक मीणा समाज के ही थे। उनकी भावना इस वर्ष 2-3 स्वाध्यायी तैयार कर स्वाध्याय-सेवा में भेजने की है। यहाँ पर रतनकंवर जी जैन, देशराज जी, भजन जी आदि अपने समय का सदुपयोग करते हुए बालकों को ज्ञानार्जन कराने में अपना अहम् योगदान प्रदान कर रहे थे। यह उल्लेखनीय है कि जैनपुरी एवं उखलाना दोनो ही गाँव मांस एवं मदिरा सेवन से मुक्त है।

अलीगढ़ रामपुरा में शिविरार्थी पूर्ण रूप से अनुशासनबद्ध होकर पूर्ण गणवेश में शिविर की शोभा में चार चॉद लगा रहे थे। यहाँ पर पवन जी जैन की सेवाएं विशेष रूप से मिल रही थी। उखलाना एवं जैनपुरी के शिविरों के साथ अलीगढ़ में भी इनका योगदान रहा। साथ ही धर्मचंद जी जैन, रिंकी जी एवं पूजा जी जैन आदि अध्यापन में अपना पुरुषार्थ कर रहे थे।

चौथ का बरवाड़ा में युवा उत्साही कार्यकर्ताओं में जोश सरोबार था। यहाँ पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन था। सभी शिविरार्थी शिविर-स्थल पर तल्लीन होकर पोस्टर बना रहे थें। सब के मन में यही उधेड़बुन लग रही थी कि कैसे जल का अपव्यय रोका जाय, कैसे जल का प्रबंधन कर पानी बचाया जाये, कैसे जल को कल के लिये सुरक्षित किया जाये, इन्हीं भावों पर जो विचार उनके मन में आ रहे थे, उनको वे चित्रों के माध्यम से बता रहे थे। यहाँ पर श्री नीरज जी, श्री महावीर जी, श्री निर्मल जी एवं श्रीमती सुजाता जी आदि अपने विश्वास से शिविरार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ा रहे थे।

देई ग्राम के साताकारी स्थानक में भरी दोपहरी में शिविरार्थियों के ज्ञान में अभिवृद्धि को देखकर शीतलता का अहसास हो रहा था। यहाँ पर श्री रामपाल जी जैन, बाबुलाल जी, नरेन्द्र जी, ताराचंद जी, कपूरचंद जी आदि की सेवाएँ अनुकरणीय रहीं। उम्र भले ही अधिक

हो, पर कार्यप्रणाली को देख कर युवा होने का अहसास हो रहा था। यहाँ पर आचार्य श्री हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के दो छात्र भी अपनी अमूल्य सेवाओं से शिविर की गरिमा में अभिवृद्धि कर रहे थे।

सुमेरगंज मण्डी में राकेश जी, ऋषभ जी, राजेन्द्र जी अपने अध्यापन से सभी शिविरार्थियों को ज्ञान में श्रेष्ठ से सर्वश्रेष्ठ बनाने में तल्लीन थे। कम संख्या होते हुए भी शिविरार्थियों का जोश बोल रहा था।

पोरवाल क्षेत्र की प्रवास यात्रा में सुमधुर वक्ता अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के पूर्व अध्यक्ष श्री कुशल जी गोटेवाला, उन्हीं के भ्राता पोरवाल क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रधान श्री पदम जी गोटेवाला एवं मुकुल जी जैन की सेवाएँ अनुकरणीय एवं अनुमोदनीय रहीं। इसी प्रकार पोरवाल क्षेत्र की प्रवास यात्रा में अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के धार्मिक शिक्षण विभाग के संयोजक श्री गौतम जी चोरडिया, जयपुर का भी इस यात्रा में विशेष सान्निध्य एवं सहयोग प्राप्त हुआ।

यहाँ से गौतम जी चोरडिया के साथ कोटा पहुँचे। **कोटा** में युवक परिषद् की शाखा स्थापना हेतु श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन के साथ प्रयास किया गया। अगले दिवस सुबह **महावीर नगर** कोटा में लगभग 100 शिविरार्थियों के बीच शिविर के उद्देश्यों को रखा गया एवं शिक्षकों को शिविरार्थियों के प्रति विशेष सजग किया गया। यहाँ पर हनुमान जी, प्रदीप जी, रतन जी, जिनेन्द्र जी, ऋषभ जी आदि की प्रशंसनीय सेवाएं प्राप्त हुईं।

रामपुरा कोटा में शिविरार्थियों का विशेष उत्साह देखने को मिला। सभी सवालों के जबाब तुरंत प्राप्त हुए। सभी सुनने को उत्सुक दिखे। 81 की उपस्थिति 121 का अहसास प्रदान कर रही थी। यहाँ पर अभय जी, राजकुमार जी, विशाल जी आदि युवा साथीगण अपने पूर्ण उत्साह से शिविर की सफलता हेतु सन्नद्ध थे। दोनों ही स्थलों की पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन बहुत ही सुंदर रूप में सुन्दर संदेश के साथ हो चुका था।

27 मई 2016 को आचार्य भगवंत पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हीराचंद्र जी म.सा. के आचार्य पदारोहण रजत साधना वर्ष के सम्पूर्ति दिवस पर अजमेर पहुँच कर पुनः एक बार पूज्यप्रवर का आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रवास कार्यक्रम की कड़ी में युवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी दुधेड़िया एवं श्री सिद्धार्थ जी बाफना ने मदनगंज में आयोजित शिविर के समापन समारोह में भाग लिया। इसके पश्चात् उन्होने मेड़ता, बाड़मेर, नागोर, पीपाड़, पाली एवं जोधपुर के शिविरों का संभाला। **मेड़ता** में निलेश जी मुथा, माणक जी तातेड़, हस्तीमल जी डोसी आदि के सहयोग से शिविरों की सरिता निरंतर गतिमान हैं। शिविरार्थियों

की संख्या 50 के लगभग रही। इसी तरह **गोटन** में नवरत्न जी ओस्तवाल, हंसराज जी चौपड़ा आदि के सहयोग से 40 की संख्या के साथ शिविर का आयोजन हो रहा था। विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि यहाँ पर अध्यापन की सेवा प्रदान करने के लिये रवि जी गोलेच्छा, रोहित जी गांग पाली, अखिल जी लुणावत पीपाड़ ने अपनी महनीय सेवाएं प्रदान की।

भोपालगढ़ में प्रथम बार आयोजित इस शिविर का उत्साह इतना था कि प्रथम दिवस शिविरार्थियों की संख्या 22 थी, दूसरे ही दिवस उनकी संख्या 45 पहुँच गयी। यहाँ पर अजीतराज जी, नवरत्न जी लोढ़ा एवं ज्ञानचंद जी लुंकड़ ने अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान की। **नागौर** में श्री अजीत जी भण्डारी के निर्देशन में शिविर का सुंदर आयोजन हुआ। यहाँ पर शिविरार्थियो की संख्या 100 के लगभग थी। **बाड़मेर** में भी मूलचंद जी गोगड़, जितेन्द्र जी बांठिया आदि ने शिविर के सफल संचालन में अपना योगदान प्रदान किया। यहाँ पर शिविरार्थियों की संख्या 150 के लगभग थी। यहॉ पर शिविर में अध्यापन हेतु श्री नेमीचंदजी कर्णावट ने भी अपनी सेवाएं प्रदान की। उक्त दोनों ही स्थानों पर कार्यक्रम बहुत ही व्यवस्थित एवं सुंदर रूप में सम्पन्न हुआ ।

पाली में 150 की संख्या के बीच श्री राजेन्द्र जी दुधेड़िया का उद्‌बोधन हुआ। यहाँ मनीष जी पगारिया, कल्पेश जी लोढ़ा, विपिन जी आदि युवा साथियों का शिविर संचालन में विशेष योगदान रहा। तत्पश्चात् **पीपाड़** में 90 शिविरार्थियों एवं वरिष्ठ श्रावकों की उपस्थिति में अच्छे एवं अनुशासित रूप में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । यहॉ पर क्षेत्रीय प्रधान परेश जी मुथा, जितेन्द्र जी कटारिया, सौरभ जी मुथा अक्षय जी जैन आदि ने शिविर की बागडोर संभाल रखी थी। 29 मई 2016 को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी दुधेड़िया का विशेष उद्‌बोधन का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम के दौरान शिविरार्थियों के साथ ही अध्यापक एवं अभिभावक भी उपस्थित थे। **जोधपुर** में विगत 22 वर्षो से शिविर अनवरत रूप से आयोजित होता आ रहा है। यहाँ पर श्री नवरत्न जी डागा एवं राकेश जी मेहता के कुशल नेतृत्व में कमलेश जी मेहता के सहयोग से शिविर का संचालन किया जा रहा था । जोधपुर में शिविर के आयोजन में श्री अमरचंद जी जैन, गजेन्द्र जी चौपड़ा, कौशल जी बोथरा, मनीष जी लोढ़ा आदि सभी युवारत्नों का सहयोग प्राप्त हुआ ।

शिविर के कार्यक्रम की व्यस्तता होते हुए भी जलगाँव के युवा साथियों के पुरजोर निवेदन को ध्यान में रखते हुए व्यस्त कार्यक्रम बनाकर **जलगाँव** पहुँचे। जलगाँव में पाँच स्थानों पर शिविर का आयोजन होता है। इसके अलावा अमलनेर, कजगाँव, बोदवड़, फत्तेपुर, घोटी आदि स्थानों पर भी शिविर का आयोजन किया गया। इन स्थानों पर लगभग

750 शिविरार्थियों ने भाग लेकर शिविर के दौरान ज्ञानार्जन किया। शिविर के आयोजन में श्री महावीर जी बोथरा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सिद्धार्थ जी बाफना, क्षेत्रीय प्रधान श्री अनिल जी बोथरा, श्री विक्रम जी मोहनोत आदि युवा रत्नों से सजी धजी टीम का विशेष दिशा निर्देशन रहा। इन्होंने अपने अथक प्रयासों से जलगाँव के साथ महाराष्ट्र के सभी क्षेत्रों में शिविरों का कुशल संचालन किया। सभी शिविरार्थियों को व्यक्तिगत रूप से संभालने के साथ विशेष रूप से प्रोत्साहित किया गया।

किसी भी कार्यक्रम के आयोजन में दानदाताओं का विशेष योगदान रहता है। इस सम्पूर्ण शिविर के आयोजन में युवक परिषद् को निम्न दानदाताओं के सौजन्य से सहयोग राशि प्राप्त हुई -1. श्रीमती चंचलकंवर अमित कुम्भट, महामंदिर जोधपुर, (100000/-), 2. Pooja Foundation Pvt. Ltd, Chennai (50000/-), 3. श्री दलीचंद प्रेमकुमार सुरेशकुमार हरीश कवाड़, चैन्नई (100000/-) 4. श्रीमती सायरकंवर प्यारेलाल कोठारी रणसी गाँव वालों की स्मृति में बुधमल, पदमचंद, चेनराज, मृगेश कोठारी अहमदाबाद (50000/-), 5. श्री पदमराज अमित आशीष मेहता बैंगलोर-जोधपुर (100000/-), 6. श्री नवरतन पुनीत डागा, जोधपुर (100000/-), 7. श्रीमती कंचनबाई गणेशमल भण्डारी, बैंगलोर-निमाज (100000/-), 8. श्री बसंत कन्हैयालाल जैन, पीपाड़ (100000/-) 9. श्री प्रकाशचंद भरतकुमार राजेशकुमार सुशीलकुमार तलेसरा/गोटावत पाली-बैंगलोर (100000/-), 10. गुरुभक्त परिवार, पाली (50000/-) 11. श्री धनपतराज सुरेश कुमार भंसाली, मुम्बई (100000/-), 12. Amarpraksah Developers Pvt. Ltd, Chennai-600044 (100000/-) 13. Sh. Gautam Raj Rajesh Kumar Surana, Aminjikarai, Chennai (100000/), 14. श्री नरेन्द्र श्रेयांशजी हीरावत, मुम्बई (100000/-), 15. गुरुभक्त परिवार, जयपुर (100000/-), 16. श्री गौतमचंद प्रवीणकुमार मनोजकुमार संकलेचा, कुम्बकोण्म-चैन्नई (50000/-), 17. श्री रतनलाल जी सिद्धार्थ जी बाफना (350000/-)।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के सभी कार्यकारिणी सदस्यों का सहयोग रहा। विशेष रूप से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजकुमार जी गोलेच्छा एवं कार्याध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी लुँकड़ का दिशा निर्देशन द्वारा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सिद्धार्थ जी बाफना-जलगाँव एवं राजेन्द्र जी दुधेड़िया-बैंगलोर ने स्वेच्छा से शिविर सम्भालने में समय का भोग देकर सहयोग किया। सम्पूर्ण यात्रा में परछाई की तरह राष्ट्रीय महासचिव श्री मनीष जी लोढ़ा का सुंदर सान्निध्य एवं सहयोग अद्वितीय रूप से प्राप्त हुआ, जो कि शिविर की सम्पूर्ण रूप रेखा को सजीव करने में निश्चित रूप से संजीवनी के रूप में रहा।

हालांकि इस शिविर के आयोजन का मुख्य रूप से मुझे उत्तरदायित्व प्रदान किया गया, पर शिविर कार्य के गुरुतर उत्तरदायित्व को निभाने के लिये मैं निश्चित रूप से लघु हुँ और इस लघुपन में मेरे से कई प्रकार की भूल रह जाना संभावित हैं, त्रुटि होना संभावित हैं, इन सभी के लिये मैं अन्तर्हृदय से क्षमाप्रार्थी हूँ।

-राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, धार्मिक शिक्षण एवं शिविर
अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् जोधपुर (राज.)

धर्म का मर्म

सुश्री रक्षिता मेहता

शिष्य ने पूछा–
बढ़ रहा है आज इतना धर्म, फिर भी नहीं है शांतिपूर्ण जीवन,
विलीन सा हो गया सुख जीवन से, क्या कारण है भगवन्?
भगवन्त ने फरमाया–
भरी हुई है धर्मसभा, कर रहे हैं सब धर्म,
पर विडम्बना ऐसी, नहीं समझ रहे धर्म का मर्म।
सीख रहे हैं धार्मिक ज्ञान,
पर जीवन जीने की कला भूल रहे हैं।
परिचित हैं पाप के दुष्परिणाम से,
पर पापभीरूता से अनजान दिख रहे हैं।
कर रहे हैं आकलन मनुष्यता की दुर्लभता का,
पर पैसों के आकलन में, नैतिकता से दूर हो रहे हैं।
बन रहे हैं आलीशान बंगले, प्रबल पुण्यवानी से,
पर सहनशीलता की कमी से, घर टूट रहे हैं।
मंजिल तो है मोक्ष को पाना, पर राह से भटके हुए हैं
प्रिय तो लगते हैं फूल, पर कांटों से डर रहे हैं।
कर रहे हैं सब धर्म, सीख रहे हैं धार्मिक ज्ञान,
पर मिले शांति उसी को,
जो धारण करे धर्म और आत्मसात् करे ज्ञान।

-सुपुत्री श्री चन्द्रप्रकाशजी मेहता, शक्तिनगर रोड़ नं. 8 पावटा सी रोड़, जोधपुर (राज.)

रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम संवत् 2073, ईस्वी सन् 2016)

जिनशासन गौरव, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** द्वारा वि.सं. 2073 सन् 2016 हेतु साधु-मर्यादा के समस्त आगारों के साथ घोषित चातुर्मासों का विवरण इस प्रकार हैः-

(1) निमाज, जिला-पाली (राज.)

- 卐 **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.**
- 卐 **महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.**
- 卐 **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.**
- 卐 **श्रद्धेय श्री आशीषमुनि जी म.सा.**
- 卐 **नवदीक्षित श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.**
- 卐 **नवदीक्षित श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.** **ठाणा 6**

चातुर्मास-स्थल- सुशीला भवन, बस स्टेण्ड के पास, पो. निमाज-306303, जिला-पाली (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री तेजराजजी भण्डारी, संघप्रमुख-094140-78119
2. श्री सूरजमलजी भण्डारी-अध्यक्ष, जय महावीर नगर, बस स्टेण्ड के पास, पो. निमाज, ज़िला-पाली-306303 (राज.), फोनः 094444-14120
3. श्री सुभाषचन्दजी धोका, कार्याध्यक्ष-094485-39647
4. श्री निर्मलकुमारजी बम्ब-मंत्री, गजेन्द्र एजेन्सी, मेन मार्केट, निमाज पैलेस के पास, पो. निमाज-306303, जिला-पाली (राज.), फोनः 094496-49577

पत्राचार का पता- श्री गौतमचन्दजी भण्डारी, भण्डारियों का बास, पो.निमाज-306303, जिला-पाली (राज.), मोबाइलः 090083-55550

आवागमन के साधन- पाली जिलान्तर्गत निमाज के लिए जोधपुर, जयपुर, अजमेर, ब्यावर, पाली आदि स्थानों से अधिकतर बसों का ठहराव है। नजदीक का रेलवे स्टेशन ब्यावर है। निमाज जोधपुर से 110 किमी., पाली से 90 किमी., अजमेर से 90 किमी., पीपाड़ से 65 किमी., ब्यावर से 40 किमी. की दूरी पर स्थित है। निमाज शहर बर, जैतारण, बिलाड़ा जैसे समीपवर्ती शहरों से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। नजदीक का हवाई अड्डा जोधपुर एवं जयपुर है।

(2) दिग्विजयनगर (गुलाबनगर) जोधपुर (राज.)

卐 **परम श्रद्धेय उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.**

卐 **मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.**

卐 **श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनिजी म.सा.**

卐 **श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.**

卐 **श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.**

卐 **नवदीक्षित श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.** **ठाणा 6**

चातुर्मास-स्थल- प्लॉट नं. 1,दिग्विजयनगर, गुलाबनगर, खेमे का कुँआ, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धनपतचन्दजी सेठिया-अध्यक्ष, म.नं.-76, श्यामनगर पहली गली, पाल लिंक रोड़, जोधपुर-342008 (राज.),फोनः-0291-2752472, मो. 098290-22472
2. श्री सुभाषचन्द जी हुण्डीवाल-मंत्री, डी-5, रामनगर, प्रथम रोड़, भदवासिया, जोधपुर-342006 (राज.), मोबाइल- 094605-51096
3. श्री अशोक जी चोरड़िया, दिग्विजयनगर-0291-2785737, 094141-29162
4. श्री पारसजी गुलेच्छा, दिग्विजयनगर-080583-13000

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल जोधपुर मुख्य रेलवे स्टेशन से 7 कि.मी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से 10 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(3) पीपाड़शहर, जिला-जोधपुर (राज.)

卐 **सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.**

卐 **श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.**

卐 **श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.**

卐 **श्रद्धेय श्री अभयमुनि जी म.सा.** **ठाणा 4**

चातुर्मास-स्थल- श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत स्वाध्याय-भवन, काला भाटा, पो. पीपाड़शहर-342601, जिला-जोधपुर(राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धनेन्द्रजी चौधरी-अध्यक्ष, चौपाटा बाजार, पीपाड़शहर-342601, जिला-जोधपुर (राज.), फोनः 02930-233243, मो. 094144-62677

2. श्री परेश जी मुथा-मंत्री, ईलाजी बाजार, पीपाड़शहर-342601, जिला-जोधपुर (राज.), फोनः 02930-233055, मो. 094617-55999/094146-01639
3. श्री सुमतिचन्दजी मेहता, फोनः 02930-233069, मो. 094144-62729
4. श्री जितेन्द्रजी कटारिया, फोनः 02930-234509, मो. 094147-22049

आवागमन के साधन- जोधपुर जिलान्तर्गत पीपाड़शहर जोधपुर, मेड़तासिटी, अजमेर, जयपुर, बिलाड़ा, पाली, ब्यावर जैसे समीपवर्ती शहरों से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। जोधपुर से पीपाड़ शहर के लिए हर आधे घंटे के अन्तराल पर रोडवेज एवं प्राइवेट बसें उपलब्ध रहती है। चातुर्मास स्थल बस स्टेण्ड से आधा कि.मी. व पीपाड़ रोड़ रेलवे स्टेशन से 8 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

(4) बालोतरा, जिला-बाड़मेर (राज.)

卐 **तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.**

卐 **श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.**

卐 **श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा.**

卐 **श्रद्धेय श्री सुभाषमुनि जी म.सा.** **ठाणा 4**

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन संस्थान, हनवन्त चौराहे के पास, द्वितीय रेलवे क्रॉसिंग के पास, बालोतरा-344022, जिला-बाड़मेर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धर्मेशजी चौपड़ा (कवास वाले), कंसारों का बास, पो. बालोतरा-344022, जिला-बाड़मेर (राज.), मोबाइलः 094141-08191
2. श्री मीठालाल जी मधुर, 'पूज्यकृपा' मकान नं. 18, महावीर कॉलोनी, पो. बालोतरा-344022, जिला-बाड़मेर (राज.), मोबाइलः 094141-08849
3. श्री ओमप्रकाशजी बांठिया-094615-22309

आवागमन के साधन- जोधपुर से बालोतरा के लिए रेल तथा रोडवेज तथा प्राइवेट बस सेवा उपलब्ध है। जोधपुर से बालोतरा 110 किमी. की दूरी पर स्थित है।

(5) पावटा-जोधपुर (राज.)

卐 **साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.**

卐 **तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा.**

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.**

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.**

卐 महासती श्री शशिकलाजी म.सा.

卐 महासती श्री उषाजी म.सा.

卐 महासती श्री आनन्दप्रभाजी म.सा. ठाणा 8

चातुर्मास-स्थल- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, सी-55, धर्मनारायणजी का हत्था, पावटा, जोधपुर-342006 (राज.), फोन:0291-2550146, अतिथि भवन फोन नं. 0291-2550147

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धनपतचन्दजी सेठिया-अध्यक्ष, फोनः-0291-2752472, मो. 098290-22472
2. श्री सुभाषचन्द जी हुण्डीवाल, मंत्री-094605-51096
3. श्री नरपतराजजी चौपड़ा, पावटा- फोन : 0291-2545265, मो. 094604-22134
4. श्री पारसमलजी गिड़िया,पावटा-फोनः 0291-2545104, मो. 094601-08060

आवागमन के साधन- पावटा स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन जोधपुर मुख्य रेलवे स्टेशन से 4 कि.मी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से आधा कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(6) नदबई, जिला-भरतपुर (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा.

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा.

卐 महासती श्री चैतन्यप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री पुष्पलताजी म.सा.

卐 महासती श्री निरंजनाजी म.सा.

卐 महासती श्री मैत्रीप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री सुदर्शनाजी म.सा.

卐 नवदीक्षिता महासती श्री प्रियदर्शनाजी म.सा. ठाणा 8

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जैन गली, कटरा, पो. नदबई-321602, जिला-भरतपुर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री पदमचन्दजी जैन-अध्यक्ष, पी.एन.बी. बैंक के पीछे, कटरा, पो. नदबई-321602, जिला-भरतपुर (राज.), मो. 098874-69215
2. श्री नरेशचन्दजी जैन-मंत्री, सिन्धी कॉलोनी, कटरा, पो. नदबई-321602, जिला-भरतपुर (राज.), मोबाइलः 094609-12255

3. श्री सचिनकुमारजी जैन-094142-79091/094685-89091
4. श्री पंकज कुमारजी जैन-098281-19353

आवागमन के साधन- भरतपुर जिलान्तर्गत नदबई जयपुर-आगरा मार्ग पर स्थित रेलवे स्टेशन है। भरतपुर से 30 किमी. दूरी पर तथा जयपुर से 150 किमी. की दूरी पर स्थित है। जयपुर-आगरा सड़क मार्ग पर स्थित डहरा मोड़ से नदबई 10 किमी., भरतपुर से 35 किमी. की दूरी पर स्थित है। बस सेवा नियमित अन्तराल पर उपलब्ध है।

(7) मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

卐 विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.
卐 महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री रक्षिताजी म.सा.
卐 महासती श्री पूनमश्रीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक, सी-314-ए, हरी मार्ग, चूलगिरी रोड़, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रमोदजी महनोत, सी-345, हंस मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोनः 0141-2523782, मो. 098290-52094
2. श्री पूनमचन्दजी भण्डारी, बी-211, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोनः 0141-2524071, मो. 099833-44443
3. श्री प्रेमचन्दजी बाफना, फोनः 0141-2521532, मो. 093145-02932
4. श्री संजीव जी कोठारी, फोनः 0141-2522397, मो. 093149-65265

आवागमन के साधन- जैन स्थानक जयपुर रेलवे स्टेशन से 11.5 किमी., गाँधीनगर एवं दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन से 4 किमी. की दूरी पर स्थित है। बस हरी मार्ग पर उतारती है, जहाँ से 300 मीटर पर स्थानक है एवं बस स्टेण्ड से भी इतनी ही दूरी है।

(8) शक्तिनगर, जोधपुर (राज.)

卐 विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.
卐 *महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा.*
卐 महासती श्री शारदाजी म.सा.
卐 महासती श्री लीलाकंवरजी म.सा.
卐 महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर छट्ठी गली, पावटा-सी रोड़, (आर.टी.ओ. ऑफिस रोड़), जोधपुर-**342006** (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धनपतचन्दजी सेठिया-अध्यक्ष, फोनः-0291-2752472, मो. 098290-22472
2. श्री सुभाषचन्द जी हुण्डीवाल-मंत्री, मोबाइल- 094605-51096
3. श्री महावीरचन्दजी बोथरा, शक्तिनगर-0291-2547658, 098285-82391
4. श्री जितेन्द्र जी लोढ़ा, शक्तिनगर-094131-21261

आवागमन के साधन- शक्तिनगर छट्ठी गली स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन मुख्य रेलवे स्टेशन से 5 कि.मी. व राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(9) फुलियाँकला, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा.**

卐 **महासती श्री कौशल्याजी म.सा.**

卐 **महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा.** **ठाणा 3**

चातुर्मास-स्थल- वर्द्धमान जैन स्थानक, गढ़ का चौक, पंचायत भवन के सामने, फुलियाकलां-311407, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री भंवरसिंहजी चौधरी-अध्यक्ष, सदर बाजार, पो. फुलियाँकला-311407, जिला-भीलवाड़ा (राज.), मोबाइलः 083869-98850/099839-75086
2. श्री राजेन्द्रसिंहजी गोखरू-मंत्री, जैन स्थानक के पास, पो. फुलियाँकला-311407, जिला-भीलवाड़ा (राज.), मोबाइलः 099829-51535
3. श्री धर्मीचन्दजी चौधरी-01484-225067, मो. 099287-78690

आवागमन के साधन- भीलवाड़ा जिलान्तर्गत फुलियाँकला ग्राम शाहपुरा और केकड़ी के मध्य है। नज़दीक का रेलवे स्टेशन विजयनगर 40 किमी. की दूरी पर स्थित है। जयपुर से भीलवाड़ा रोड़ पर (वाया संपा, सोपला) प्रति घण्टे बस सुविधा उपलब्ध है।

(10) प्रतापनगर-जयपुर (राज.)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा.**

卐 **महासती श्री विमलावतीजी म.सा.**

卐 **महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री परागप्रभाजी म.सा.**

卐 महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री ऋद्धिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा.

卐 नवदीक्षिता महासती श्री विचित्राजी म.सा. ठाणा 8

चातुर्मास-स्थल- श्री श्वेताम्बर जैन रत्न स्वाध्याय भवन, सेक्टर-6, गुलाब विहार के पास, प्रतापनगर, सांगानेर, जयपुर-302011 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. डॉ. जितेन्द्रजी कोठारी-अध्यक्ष, 65/24, सेक्टर-6, प्रतापनगर, सांगानेर, जयपुर-302011 (राज.) मो. 094133-70006/098293-70006
2. श्री सुशीलकुमारजी जैन-मंत्री, 34/222, सेक्टर-3, प्रतापनगर, सांगानेर, जयपुर-302011 (राज.), मोबाइलः 094130-23374/077920-02455
3. श्री भंवरसिंहजी जैन-093511-81784
4. श्री महेन्द्रकुमारजी आंचलिया, फोनः 0141-2101046, मो. 098292-60833

आवागमन के साधन - जयपुर मुख्य रेलवे स्टेशन से प्रतापनगर 17 कि.मी., दुर्गापुरा स्टेशन से 8 कि.मी. तथा गाँधीनगर स्टेशन से 10 कि.मी., सिन्धी केम्प से 18 कि.मी. व नारायणसिंह सर्किल से 12 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(11) मसूदा, जिला-अजमेर (राज.)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.**

卐 महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री प्रभावतीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान जैन स्थानक, सदर बाजार, पो. मसूदा-305623, जिला-अजमेर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री गजराज जी नाहर, सदर बाजार, पो. मसूदा-305623, जिला-अजमेर (राज.), फोनः 01462-266821, 094146-44821
2. श्री पारसमलजी गांग, मोहित जनरल स्टोर, बस स्टेण्ड, पो. मसूदा-305623, जिला-अजमेर (राज.), फोनः 01462-266866, 094606-13593

आवागमन के साधन- ब्यावर से मसूदा 22 कि.मी., विजयनगर से 27 कि.मी, अजमेर से 55 कि.मी है। तीनों स्थानों से नियमित अन्तराल में बस सुविधा उपलब्ध है।

(12) जलगाँव (महा.)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा.
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री देवांगनाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री अंजनाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री सुभद्राजी म.सा.
- 卐 महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री तितिक्षाश्रीजी म.सा.
- 卐 महासती श्री वर्षाश्रीजी म.सा. ठाणा 9

चातुर्मास-स्थल- रतनलाल सी. बाफना स्वाध्याय भवन, गणपति नगर, जलगाँव-425001 (महा.), मोबाइल : 090497-67302

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री दलीचन्दजी जैन-अध्यक्ष, गुलमोहर, 36-श्रद्धा कॉलोनी, टेलिफोन नगर, जलगाँव-425001 (महा.), मोबाइलः 094222-77744
2. श्री कस्तूरचन्दजी बाफना-मंत्री, 32, रिंग रोड़, दीनानाथवाड़ी, जलगाँव-425001 (महा.), फोनः 0257-2226753, 098222-18754
3. श्री महावीरचन्दजी बोथरा, फोनः 0257-2270050, 098231-15093
4. श्री महेन्द्रकुमारजी बाफना, मोबाइलः 094227-73411

आवागमन के साधन- दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई, अहमदाबाद आदि महानगरों से जलगाँव रेल सेवा से जुड़ा शहर है। महाराष्ट्र के नगरों से सड़क मार्ग द्वारा भी जलगाँव पहुँचा जा सकता है। चातुर्मास स्थल से रेलवे स्टेशन 3 किमी., बस स्टेण्ड से 1.5 किमी. की दूरी पर स्थित है।

(13) किशनगढ़शहर, जिला-अजमेर (राज.)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा
- 卐 महासती श्री भविताश्रीजी म.सा
- 卐 महासती श्री लक्षिताजी म.सा
- 卐 महासती श्री अरिहाश्रीजी म.सा. ठाणा 6

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, पुराना शहर, नगरपालिका के पास, डॉ. कर्मचन्द अस्पताल के पीछे, किशनगढ़ शहर-305802, जिला-अजमेर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धनबुद्धसिंहजी मेहता-अध्यक्ष, मेहता भवन, कचहरी चौक, पो. किशनगढ़शहर-305802, जिला-अजमेर (राज.), मोबाइलः 098294-66301
2. श्री कर्मचन्द जी महनोत, मेहता हाऊस, धान मण्डी, पुराना शहर, पो. किशनगढ़शहर-305802, जिला-अजमेर (राज.), फोनः 01463-245162, 094143-47620
3. श्री ज्ञानचन्दजी मेहता-094143-28438
4. श्री नेमीचन्दजी कवाड़-097842-25524

आवागमन के साधन - अजमेर जिलान्तर्गत किशनगढ़ शहर रेल व सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ शहर है। रेलवे स्टेशन से चातुर्मास स्थल 4 किमी एवं बस स्टेण्ड से आधा किमी. की दूरी पर स्थित है। किशनगढ़ शहर के लिए नियमित रोडवेज व प्राइवेट बसें उपलब्ध हैं। बस आर.के. कम्युनिटी उतारती है। जहाँ से नगरपालिका तथा डॉ. कर्मचन्द मेमोरियल अस्पताल को जाने के लिए टेम्पो सेवा उपलब्ध है।

(14) निमाज, जिला-पाली (राज.)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.**

卐 महासती श्री भावनाश्रीजी म.सा.

卐 महासती श्री प्रीतिश्रीजी म.सा.

卐 महासती श्री गरिमाश्रीजी म.सा. **ठाणा 4**

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक, पो. निमाज-306303, जिला-पाली (राज.)

सम्पर्क-सूत्र एवं आवागमन के साधन- (क्रमांक 1 के अनुसार)

(15) यादगिरी (कर्नाटक)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.**

卐 महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री मतिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री दीपिकाश्रीजी म.सा. **ठाणा 5**

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, श्री जैन महावीर भवन, महावीर रोड़, यादगिरी-585201 (कर्नाटक)

सम्पर्क-सूत्र-

1. Sh. P. Gautamchandji Dhoka Jain, 1-6-117, Mahaveer Road, Yadgiri-585201, Dist.-Gulbarga, (Karnatak), Ph. 08473-252725, 094483-33370
2. Sh. Subhashchandji Solanki, Sri Guru Ganesh Jewellers, Main Road, Yadgiri-585201, Dist.-Gulbarga, (Karnatak), Ph. 08473-251143,094481-81446
3. Sh. Kantilalji Dhoka, 08473-252721, 094482-04591
4. Sh. Pavan Kumarji Dhoka, 08473-250250, 094481-59591

आवागमन के साधन- यादगिरी के लिए मुम्बई-चेन्नई, बैंगलोर, कोयम्बटूर, हैदराबाद से सीधी रेल सेवा उपलब्ध है। रायचूर से यादगिरी 90 कि.मी., आवड़ी से 40 कि.मी. व हैदराबाद से 210 किमी दूर है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से एवं बस स्टेण्ड से 3 कि.मी. की दूरी पर है।

(16) रोहिणी, सेक्टर-13, दिल्ली

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.**
卐 **महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा.**
卐 **महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा.**
卐 **महासती श्री कोमलश्रीजी म.सा.** **ठाणा 4**

चातुर्मास-स्थल- एस.एस. जैन सभा, वीर अपार्टमेन्ट, सेक्टर-13, रोहिणी, दिल्ली-110085

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री यशपाल जी जैन-अध्यक्ष, 323, वीर अपार्टमेन्ट, प्लाट नं. 28, रोहिणी सेक्टर-13 दिल्ली-110085, मोबाइलः 098112-91766
2. श्री जगदीशकुमारजी जैन-मंत्री, 465, वीर अपार्टमेन्ट, रोहिणी सेक्टर-13, दिल्ली-110085, मोबाइलः 098107-95300
3. श्री अनिलजी जैन-098101-14429
4. श्री जितेन्द्रजी जैन-098119-36123

आवागमन के साधन- रोहिणी सेक्टर 13 स्थित जैन स्थानक पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से 1 कि.मी., नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से 16 कि.मी., रोहिणी वेस्ट मेट्रो स्टेशन से 2.5 कि.मी. ए I.S.B.T. बस स्टेण्ड से 18 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(17) लासूर स्टेशन (महा.)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.**
卐 **महासती श्री यशप्रभाजी म.सा.**
卐 **महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.**

卐 महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा.

卐 नवदीक्षिता महासती श्री विदेहाश्रीजी म.सा.

卐 नवदीक्षिता महासती श्री विरक्ताश्रीजी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्धमान श्वेताम्बर जैन स्थानक, गणपति मन्दिर रोड़, लासूर स्टेशन-423702, तालुका-गंगापुर, जिला-औरंगाबाद (महा.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मदनलालजी हीरालालजी समदड़िया-अध्यक्ष, अक्षय ऑटो पार्टस, देवगाँव रोड़, पो. लासूर स्टेशन-423702, तालुका-गंगापुर, जिला-औरंगाबाद (महा.), फोनः 02433-241045, मो. 097659-28525
2. श्री प्रकाशचन्दजी माणकचन्दजी मूथा-मंत्री, जुना मोढा, शिवाजी चौक, पो. लासूर स्टेशन-423702, फोनः 02433-241525, मो. 094227-01425/ 094040-87777
3. श्री चम्पालालजी अमोलकचन्दजी कर्नावट, फोनः 02433-241370, 094227-07910
4. श्री प्रितेशजी महावीरचन्दजी छाजेड़, फोनः 02433-241001, मो. 095522-02020/ 094236-01111

आवागमन के साधन- लासूर स्टेशन महाराष्ट्र के शहरों से जुड़ा हुआ है। मनमाड से 75 कि.मी., औरंगाबाद से 60 कि.मी., जलगाँव से 200 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। लासूर रेलवे स्टेशन से चातुर्मास स्थल आधा कि.मी. तथा बस स्टेण्ड से एक कि.मी की दूरी पर है। लासूर से50 कि.मी. दूरी पर चिखलठाणा हवाई अड्डा है। लासूर स्टेशन के लिए नियमित बस सेवाएँ उपलब्ध है।

(18) बाड़मेर (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री सुव्रतप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री कान्ताजी म.सा. आदि ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, तेलियों का बास, गुप्ता ट्रान्सपोर्ट के पास, बाड़मेर-344001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री ज्ञानमलजी गोगड़-अध्यक्ष, ललित ज्वैलर्स, माणक हॉस्पिटल के पास, बाड़मेर-344001 (राज.), मो. 094146-33834
2. श्री जितेन्द्र जी बांठिया-मंत्री, मैसर्स पुखराज विमलकुमार बांठिया, लक्ष्मी बाजार, बाड़मेर-344001 (राज.), मो. 099297-60675/094603-89689

आवागमन के साधन- जोधपुर से बाड़मेर के लिए रेल तथा रोड़वेज एवं प्राइवेट बस सेवा उपलब्ध है। जोधपुर से बाड़मेर 200 कि.मी., बालोतरा से 100 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(19) सूरत (गुजरात)

- 卐 **व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा.**
- 卐 **नवदीक्षिता महासतीश्री आराधनाश्रीजी म.सा.** **ठाणा 6**

चातुर्मास-स्थल- श्री सोहनलाल नाहर स्वाध्याय भवन, आचार्य हस्ती मार्ग, 25-26-27, एम.जे. पार्क, डी.आर.बी. कॉलेज के पास, न्यू सिटी लाइट, सूरत-395017 (गुजरात)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री लाभचन्दजी नाहर-अध्यक्ष, नाहर लेस इण्ड., 2/3871, हल्दिया शेरी, संग्रामपुरा, पुराने महावीर हॉस्पिटल के पास, सूरत-395002 (गुजरात), फोनः 0261-2323525
2. श्री सुनील जी नाहर-मंत्री, ए-614, इण्डिया टेक्सटाइल मार्केट, रिंग रोड़, सूरत-395002 (गुजरात), फोनः 0261-2331546, 098251-25718
3. श्री राजीवजी नाहर, फोनः 0261-2349201, मो. 093751-65765
4. श्री सुनील जी गाँधी, मो. 099740-85013

आवागमन के साधन- सूरत भारत के प्रमुख शहरों से सड़क व रेल मार्ग से जुड़ा हुआ शहर है। स्थानक रेलवे स्टेशन से 9 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(20) हरसाना, जिला-अलवर (राज.)

- 卐 **व्याख्यात्री श्री स्नेहलताजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री मंजूलताजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा.** **ठाणा 3**

चातुर्मास-स्थल- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गर्ल्स स्कूल के पास,पो. हरसाना-321607, वाया-लक्ष्मणगढ़, जिला-अलवर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री शिवदयालजी जैन, पो. हरसाना-321607, वाया लक्ष्मणगढ़, जिला-अलवर (राज.),

मो. 073740-47884/096946-60137

2. श्री दिनेशचन्दजी जैन, पो. हरसाना-321607, वाया लक्ष्मणगढ़, जिला-अलवर (राज.), मो. 096940-07520
3. श्री राजेन्द्र जी जैन-097850-64090
4. श्री दीपचन्दजी जैन-088908-30466

आवागमन के साधन- जयपुर सड़क मार्ग से बस द्वारा महुआ, महुआ से गढ़ी सवाईराम पहुँच कर जीप/बस से हरसाना पहुँचा जा सकता है। अलवर से लक्ष्मणगढ़ आकर भी हरसाना पहुँच सकते है। लक्ष्मणगढ़ बस स्टेण्ड से जीप हर आधा घण्टे से उपलब्ध है।

(21) पुष्कर रोड़, अजमेर (राज.)

卐 **व्याख्यात्री महासती निष्ठाप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा.**

卐 **महासती श्री सरोजश्रीजी म.सा.**

卐 **महासती श्री महिमाश्रीजी म.सा.** **ठाणा 4**

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, अरिहन्त कॉलोनी, पुष्कर रोड़, अजमेर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री विवेक जी महनोत, मैसर्स कस्तूरचन्द मौखमसिंह मेटल मर्चेण्ट, नया बाजार, अजमेर-305001 (राज.), फोनः 0145-2420571, मो. 098291-54156
2. श्री चन्द्रप्रकाशजी कटारिया, 53-नवग्रह कॉलोनी, पुष्कर रोड़, अजमेर-305001 (राज.), फोनः 0145-2621819, मो. 094142-81050
3. श्री चन्द्रप्रकाशजी कोठारी- 098290-70092
4. श्री रिखबचन्दजी माण्डोत-094140-07508

आवागमन के साधन- रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से चातुर्मास स्थल 4 किमी. की दूरी पर स्थित है। अजमेर के लिए सभी स्थानों से नियमित रूप से बस व रेल सेवाएँ उपलब्ध है।

(22) मेड़ता सिटी, जिला-नागौर (राज.)

卐 **व्याख्यात्री महासती प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा.**

卐 **महासती श्री खुशबूश्रीजी म.सा.** **ठाणा 3**

चातुर्मास-स्थल- स्वाध्याय भवन, दाणियों का मौहल्ला, श्रीमालों की गली, मेड़तासिटी-341510, जिला-नागौर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री हस्तीमल जी डोसी, डोसी ब्रादर्स, डी-3, कृषि मण्डी, पो. मेड़तासिटी-341510, जिला-नागौर (राज.), फोनः 01590-220144, मो. 094133-68997
2. श्री भारतप्रकाशजी ओस्तवाल-अध्यक्ष, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, फैन्सी क्लॉथ स्टोर, मीरा मार्ग, पो. मेड़तासिटी, फोनः 01590-212456, मो.095299-46872
3. श्री विमलकुमारजी बागमार, फोनः 01591-221187/221186, मो. 094137-59647

आवागमन के साधन- नागौर जिलान्तर्गत मेड़तासिटी के लिए समीपवर्ती रेलवे स्टेशन मेड़ता रोड़ जंक्शन है। जहाँ जोधपुर, दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, जयपुर की रेलगाड़ियों का ठहराव है। मेड़ता रोड़ से मेड़ता के लिए रेलबस प्रायः उपलब्ध रहती है। अजमेर, जोधपुर मुख्य मार्ग पर स्थित मेड़ता सिटी के लिए नियमित अन्तराल पर बसें उपलब्ध है। बस व रेलवे स्टेशन से स्थानक एक कि.मी. दूर है तथा स्थानक पहुँचने के लिए टेक्सियाँ भी उपलब्ध हैं।

अन्य प्रमुख चातुर्मास

भीलवाड़ा (राज.)-	आचार्य (डॉ.) श्री शिवमुनि जी म.सा.
मुम्बई (महा.)-	आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.
पाली (राज.) -	गच्छाधिपति श्री प्रकाशमुनि जी म.सा.
सिकन्द्राबाद (आंध्रप्रदेश)-	आचार्य श्री विजयराज जी म.सा.
पांचोरा (महाराष्ट्र)-	आचार्य श्री ज्ञानचन्द्र जी म.सा.
मायावरम्(तमिलनाडु)-	आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा.
जोधपुर (राज.)-	उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी 'शास्त्री'
गोहाटी (असम)-	आचार्य श्री महाश्रमणजी म.सा.
बैंगलोर (कर्नाटक)-	युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

स्वाध्याय एवं सत्संग हैं कल्याणमित्र

श्रीमती आशा धीरेन्द्र बांठिया

मेरा व्यक्तिगत अनुभव रहा है कि जब-जब भी मेरे मन में कुछ उथल-पुथल हुई है, भीतरी घुटन हुई है। जब भी जिस बात को लेकर मेरे मन में द्वन्द्व चला है, सोच नकारात्मक हुई है, उस समय मैंने अगर कोई धार्मिक पुस्तक पढ़ने को उठा ली तो मुझे सबसे पहले वही पृष्ठ पढ़ने को मिलता है, जिसे पढ़कर समाधान मिल जाता है एवं अपनी भूल का अहसास हो जाता है। स्वाध्याय अपने मन को पुनः सकारात्मकता में ला देता है। कुछ पढ़ने से हमेशा सीख ही मिलती है। जब-जब मैंने गुरुदेव हीरा मुनि का या संतों का व्याख्यान सुना है। उस समय उनके द्वारा कही बातों से सिर नीचे झुक जाता है। ऐसे लगता है जैसे वे मेरे बारे में ही कह रहे हैं। "अच्छा भोजन शरीर की खुराक है, पर अच्छी किताबें दिमाग की।" प्रतिदिन 15 मिनट ही सही, अच्छी किताब अवश्य पढ़ें, दिमाग अच्छी प्रेरणाओं से प्रकाशित रहेगा। *-ई-50, लाल बहादुर नगर, जयपुर-302001 (राज.)*

समाचार विविधा

पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 78 वें जन्मदिवस तथा पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के 25 वें स्मृति-दिवस पर विशेष तप-त्याग

पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 78 वें जन्मदिवस चैत्र कृष्णा अष्टमी 01 अप्रेल 2016 को सम्पूर्ण देश में एवं कहीं विदेश में भी तप-त्याग एवं सामायिक-साधना करते हुए गुणगान किए गए। हजारों की संख्या में एकाशन तप की साधना हुई। इसी प्रकार पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. के 25 वें स्मृति दिवस वैशाख शुक्ला अष्टमी 14 मई 2016 को गुणस्मरण करते हुए तप-त्याग एवं व्रत-नियमों की विभिन्न स्थानों पर आराधना की गई।

जयपुर में मुमुक्षु विमलाजी की दीक्षा का आयोजन

बड़ी दीक्षा के पश्चात् बनी 'विचित्राजी म.सा.'

खेरलीगंज, जिला अलवर के निवासी श्रावकरत्न श्री कस्तूरचन्दजी जैन की धर्मसहायिका सुश्राविका श्रीमती विमलाजी जैन की भागवती दीक्षा गुरुवार, 09 जून 2016 को पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. के पावन सान्निध्य में जयपुर की मौजी कॉलोनी, मालवीय नगर में प्रातः 7.15 बजे सानन्द सम्पन्न हुई। इससे पूर्व श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर द्वारा 08 जून को मुमुक्षु बहिन एवं परिवारजनों का अभिनन्दन किया गया। शासन सेवा समिति की सदस्या डॉ. मंजुलाजी बम्ब, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री विनयचन्दजी डागा, जयपुर संघ के संयुक्त मंत्री श्री सुरेशचन्दजी कोठारी ने वीर पति एवं पुत्रों का माला, शॉल आदि से अभिनन्दन किया।

09 मई को वर्षीतप का अजमेर में पारणक हुआ उसके पश्चात् एक दिन अचानक तबीयत बिगड़ने पर ज्ञात हुआ कि उन्हें कैंसर है। मुमुक्षु बहिन श्रीमती विमलाजी ने कैंसर जैसा असाध्य रोग होते हुए भी संयम पथ पर अग्रसर होकर जीवन के दूसरे मनोरथ को अंगीकार करने की प्रबल भावना व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. तथा पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के समक्ष रखी। 06 जून को पूज्य आचार्यप्रवर अजमेर एवं ब्यावर के बीच मांगलियावास विराज रहे थे तब श्री कस्तूरचन्दजी, श्रीमती विमलाजी

संघ सेवक श्री श्रीलालजी उपस्थित हुए एवं श्राविका रत्न ने अपनी प्रबल भावना प्रस्तुत करते हुए निवेदन किया- ''मैं व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. की सन्निधि में संयम जीवन अंगीकार कर संथारा स्वीकार करना चाहती हूँ।'' पूज्य आचार्यप्रवर ने व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. की सेवा भावना एवं उत्तरदायित्व निर्वहन की भावना को ज्ञात कर जयपुर संघ से विचार-विमर्श किया तथा श्राविका का आज्ञा-पत्र एवं समर्पण-पत्र प्राप्त हो जाने के पश्चात् 08 जून को दीक्षा हेतु अनुमति प्रदान करते हुए फरमाया-''संयम जीवन में गृहस्थ अवस्था की तरह सुविधा नहीं रहती है। उस स्थिति को कैसे सहन करोगी? अभी तो भावना व्यक्त कर रहे हो, बाद में समता रखना दुष्कर होता है।'' इस पर श्राविका विमलाजी ने अपनी भावना पर अडिग रहते हुए कहा कि मैं हर स्थिति एवं परीषह को सहज, समभाव से सहन करने को तत्पर हूँ। यह मेरी अन्तिम प्रबल भावना है। गुरुदेव आपकी कृपा से सब सरल और सहज हो जायेगा। इस पर पूज्य गुरुदेव ने फरमाया-''अभी संथारा नहीं करें, सिर्फ संयम ग्रहण करें।'' आज्ञा अनुमति के पश्चात् 09 जून को पुष्य नक्षत्र की वेला में व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा की सन्निधि में लगभग 600 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। इस अवसर पर पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा, संघ कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा, संघमंत्री श्री विमलचन्दजी डागा ने त्याग एवं संयम पथ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए इस उम्र में एवं स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के बावजूद उत्साहपूर्वक संयम ग्रहण करने पर साधुवाद दिया। संयम ग्रहण कर नवदीक्षित साध्वी विमलाजी अपार आत्मिक हर्ष से भर उठी और दैवयोग से उनके स्वास्थ्य में सुधार भी अनुभव हुआ। पहले वे 18 दिनों से मुख से पानी भी नहीं ले पा रही थी, अब अचित्त जल ग्रहण करने लगी। श्रमण-प्रतिक्रमण भी छेदोपस्थापनीय चारित्र आरोहण के पूर्व कंठस्थ कर लिया।

बुधवार 15 जून 2016 को 8.30 बजे व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. के मुखारविन्द से बड़ी दीक्षा सम्पन्न हुई। लगभग डेढ़ घण्टे चले कार्यक्रम में संघ कार्याध्यक्ष डॉ. अशोक जी कवाड़ ने अनुमोदना करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए। श्री विमलचन्दजी डागा, वीर परिवार की ओर से भ्राता श्री सुमतिजी जैन एवं श्री रमेशजी जैन तथा मालवीय नगर, संघ के प्रमुख श्री प्रमोदजी महनोत ने अपने विचार रखे। सभा का संचालन श्री सुरेशचन्दजी कोठारी ने किया। बड़ी दीक्षा के पश्चात् महासतीजी का नामकरण 'विचित्राजी म.सा.' रखा गया।

सांसारिक परिचय- मुमुक्षु विमलाजी अलवर जिले के लक्ष्मणगढ़ तहसील के बीचगावा की मूल निवासी है। उनका पीहर पक्ष गंगापुर जिला-सवाईमाधोपुर में रहता है। पति श्री

कस्तूरचन्दजी जैन राजस्व विभाग में पटवारी, कानूनगो आदि पदों पर कार्यरत रहे। स्वयं 22 वर्षों तक अध्यापिका रही एवं स्वेच्छा से सेवानिवृत्ति लेकर 2007 में धर्म-ध्यान में पूरा समय बिता रही थी। आपके पुत्र श्री मुकेशजी, राकेशजी व्याख्याता हैं एवं हितेशजी वकील हैं तथा नरेश जी डॉक्टर हैं। आपकी आयु लगभग 65 वर्ष है।

-सुरेशचन्द कोठारी-जयपुर एवं गिर्राज जैन

पूज्य आचार्यप्रवर मदनगंज एवं अजमेर में धर्मोद्योत कर पधारे ब्यावर

अजमेर में अक्षय तृतीया पर 109 पारणक

27 मई को आचार्य पदारोहण वर्ष की सम्पूर्ति

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुण रत्नाकर, जिनशासन गौरव, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** प्रभृति संतवृन्द एवं विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 01 अप्रेल 2016, चैत्र बदि अष्टमी के दिन मदनगंज में विराज रहे थे। इस दिन **आदिनाथ भगवान** के **जन्मकल्याणक** एवं पूज्य **आचार्यप्रवर हीरा के जन्मदिवस** का पावन प्रसंग था। श्रमण संघीय श्रद्धेय श्री धैर्यमुनिजी, श्रद्धेय श्री तिलकमुनिजी गुणानुवाद करने धर्म सभा में पधारे। गुणगान की शृंखला में श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी, श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी, महासती श्री रिद्धिप्रभाजी, महासती श्री वृद्धिप्रभाजी, महासती श्री पुनीतप्रभाजी, महासती श्री सुयशप्रभाजी, व्याख्यात्री महासती श्री विमलावतीजी, व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी, विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी, श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी, श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी, तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने प्रभु आदिनाथ एवं रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के जीवन की विशेषताओं एवं सद्गुणों पर प्रकाश डाला। पूज्य आचार्यप्रवर ने संतों एवं संघ पदाधिकारियों के निवेदन पर प्रवचन सभा के उत्तरार्द्ध में पधार कर मांगलिक प्रदान करने की कृपा की। सभा का संचालन श्री भागचन्दजी कोचेटा ने किया। एकाशन, उपवास, तेले आदि व्रत-प्रत्याख्यान पर्याप्त संख्या में हुए। 07 अप्रेल को मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष माननीय जस्टिस श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया ने पधारकर दर्शन-वन्दन सेवा का लाभ लिया।

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी 19 अप्रेल 2016 को **तीर्थंकर महावीर का जन्मकल्याणक** तप-त्याग, व्रत-प्रत्याख्यान के साथ मदनगंज की धरा पर सोल्लास मनाया गया। 20

अप्रेल को कतिपय चातुर्मासों की घोषणा की गई। यहाँ धर्माराधना एवं ज्ञानाराधना का वातावरण बना रहा।

23 अप्रेल को यहाँ से विहार कर मार्गस्थ क्षेत्रों को फरसते हुए 27 अप्रेल को अजमेर के उपनगर शास्त्रीनगर पधारे। 29 एवं 30 अप्रेल को आदित्य पैलेस में विराजना हुआ। 30 अप्रेल को श्राविकाओं की कार्यशाला आयोजित हुई, जिसमें 42 क्षेत्रों से 225 श्राविकाओं ने भाग लेकर गुणवत्ता का परिचय प्राप्त किया। श्री नरेशजी जैन-नदबई परिवारजनों के साथ अपने पिताश्री ज्ञानचन्दजी जैन वरिष्ठ स्वाध्यायी के स्वर्गवास के पश्चात् मांगलिक श्रवण करने उपस्थित हुए।

अक्षयतृतीया

अजमेर में **अक्षय तृतीया का पर्व** 09 मई 2016 को 109 तपस्वियों के वर्षीतप पारणक के साथ प्रेरणास्पद रहा। अनेक तपस्वियों ने वर्षीतप निरन्तर जारी रखा। इस अवसर पर **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., महासती श्री चारित्र लताजी म.सा.** आदि महासतीवृन्द रायचूर, कोप्पल, शोरापुर, बीजापुर होते हुए लगभग साढ़े पाँच माह में 17 सौ किलोमीटर का विहार करते हुए 17 ठाणा से 12 वर्ष की अवधि के पश्चात् प्रातः 7.25 बजे पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में पधारे। वन्दन, नमन का क्रम चलता रहा। रोम-रोम को पुलकित करने वाला श्रद्धा-भक्ति से प्रसिक्त यह दृश्य मनोहारी एवं अनुपम था। महासती मण्डल ने 'जय-जयकार की रेशम डोरी मिल गये आज भगवान' का संगान किया एवं अपनी भावना अभिव्यक्त की।

भीषण गर्मी में भी वर्षीतप साधकों की उपस्थिति प्रशंसनीय रही। अजमेर, जोधपुर, पोरवाल क्षेत्र, पल्लीवाल क्षेत्र, जयपुर, वलसाड़, मुम्बई, उज्जैन, चेन्नई, बैंगलोर, धुलिया, कानपुर, नागौर आदि से निकट सम्बन्धी एवं परिवारजनों के साथ तपस्वियों का आगमन हुआ। 18 वर्ष पूर्व 7 दीक्षाओं के आयोजन के पश्चात् अजमेरसंघ को अक्षय तृतीया का यह पावन प्रसंग प्राप्त हुआ था। महासती भाग्यप्रभाजी, व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी, श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने प्रवचन सभा को सम्बोधित किया। पूज्य आचार्यप्रवर ने फरमाया- "जिन्होंने कष्ट या परीषह अधिक सहे उनके नाम ज्यादा याद किए जाते हैं, इसलिए 24 तीर्थंकरों में भगवान ऋषभदेव एवं भगवान महावीर का स्मरण ज्यादा किया जाता है। तप निर्मल, निष्पाप, निष्काम श्रेणि वाला हो। तप आकांक्षारहित एवं विश्वास के साथ हो। **कर्मों का कैमरा कभी फेल होने वाला नहीं है। करनी निश्चित्त फल देगी।** आप आर्य कुल में जन्में हो, तप अवश्य करना। साधु के जीवन भर

के दो काम हैं- संयम और तप। नौ द्वार वाले पिंजरे में यह पवन रूपी पंछी आपकी पुण्यवानी से रह रहा है, फिर भी तप नहीं करो तो आश्चर्य की बात है। अर्जन के साथ विसर्जन बताया है। देते समय पूछना, कारण बताकर नहीं देना दान में अंतराय है। ताकत, सामर्थ्य जितना है, जगो और आगे बढ़ो। आर्यकुल एवं संस्कृति संस्कारों में आगे बढ़ने की प्रेरणा कर रही है। जो बढ़ेंगे, वे सुख शान्ति के अधिकारी होंगे।'' कई भाई-बहनों ने आगामी वर्ष तक तपाराधना (एकान्तर तप) का क्रम बनाये रखने के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से लिये।

परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 एवं व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 20 की पावन चरण सन्निधि में अरिहंत कॉलोनी स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में वैशाख शुक्ला 8, शनिवार 14 मई को जन-जन की आस्था के केन्द्र, अखण्ड बाल ब्रह्मचारी, इतिहास मार्तण्ड **पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. का 25 वाँ स्मृति दिवस**, शांत-दांत-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी, परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का **26 वाँ उपाध्याय पद दिवस** वैशाख शुक्ला नवमी रविवार 15 मई को तथा **54 वाँ दीक्षा दिवस** वैशाख शुक्ला 13 गुरुवार 19 मई को, पूज्य **आचार्यप्रवर श्री जयमलजी म.सा. का पुण्य स्मृति दिवस** वैशाख शुक्ला 14 शुक्रवार 20 मई को तप-त्याग व सामायिक-साधना के साथ सोल्लास मनाया गया। 15 मई को जयपुर से डॉ. राकेशजी हीरावत परिवारजनों के साथ अपने पिताश्री कुशलजी हीरावत के स्वर्गवास के पश्चात् मांगलिक श्रवण करने हेतु उपस्थित हुए एवं सभी के द्वारा त्याग-व्रत-नियम स्वीकार किए गए। 19 मई को बजरिया सवाईमाधोपुर से श्री चन्द्रसागरजी, पदमचन्दजी, वर्द्धमानजी अपने परिवारजनों के साथ पिताश्री चौथमलजी जैन वरिष्ठ स्वाध्यायी के स्वर्गगमन के पश्चात् मांगलिक श्रवण करने हेतु उपस्थित हुए।

जयपुर में 20 दिवसीय ज्ञानार्थी शिविर सम्पन्न कर 12 ज्ञानार्थी भाई-बहिन पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में 19 मई को उपस्थित हुए। पूज्य आचार्यप्रवर ने उद्बोधन में फरमाया-''लगन के साथ एकाग्रता एवं अप्रमत्ततापूर्वक पुरुषार्थ करें। साधक बनने के बाद चारित्र में अभिवृद्धि कैसे हो, इसके लिए प्रयत्नरत रहें। एक-दूसरे का सम्मान बचाये रखते हुए निभने-निभाने की कला भी सीखें।''

21 से 25 मई तक श्राविकामण्डल, अजमेर के तत्त्वावधान में **आस्था, अनुशास्ता शिविर** व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. की सन्निधि में आयोजित हुआ, जिसमें

विभिन्न ग्राम-नगरों से 189 बालिकाओं ने भाग लिया। पूज्य गुरुदेव ने शिविरार्थी बहिनों को जब तक शादी न हो, ब्रह्मचर्य पालन के नियम कराये।

आचार्यपद रजत साधना-वर्ष सम्पूर्ति कार्यक्रम

ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी 27 मई को **पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्यपद रजत साधना वर्ष का सम्पूर्ति दिवस** उपस्थित हुआ। इस अवसर पर निकटस्थ एवं दूरस्थ क्षेत्रों से अनेक श्रावक-श्राविकाओं एवं पदाधिकारियों का श्रद्धाभक्ति के साथ आगमन हुआ। प्रवचन सभा में **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.** ने फरमाया कि जिनेन्द्र एवं गुरुभगवन्तों की भक्ति करने से कर्मों की निर्जरा होती है। कषायों को छोड़ना आसान नहीं है, किन्तु सद्गुरु की शरण में जाने से वे सरलता से छूट जाते हैं। **महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.** ने फरमाया कि मणि से कंचन की, कंचन से मणि की तथा मणि व कंचन इन दोनों के मिलने से कंगन की शोभा बढ़ जाती है, उसी प्रकार साधु-साध्वी आचार्य से शोभित होते हैं। उपकार की दृष्टि से आचार्य वर्तमान में हमारे लिए तीर्थंकरों से भी बढ़कर हैं। **व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.** ने आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. को एक सुयोग्य आचार्य के रूप में वर्णित किया। **महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने फरमाया कि शिष्य का कर्त्तव्य है कि आचार्य के गुणों का बखान कर कृतज्ञ बने, आराधक की आराधना को प्रकट करे। आचार्य हीरा सुधर्मा स्वामी के 82 वें पाट को सुशोभित कर रहे हैं, समता, सौहार्द के पर्याय हैं तथा अष्ट सम्पदा से सम्पन्न हैं। आप पर्याय स्थविर, वय स्थविर एवं श्रुत स्थविर हैं। आचार्यपद रजत वर्ष में मेरे अनुरोध पर संत-सतीवृन्द ने तप-त्याग एवं ज्ञान-ध्यान में विशेष पुरुषार्थ का परिचय दिया एवं प्रभावी प्रेरणा की है। फलस्वरूप पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से 750 एवं संत-सती की प्रेरणा से 300 आजीवन शीलव्रत के खंद हुए हैं। श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर एवं श्री गौतममुनिजी महाराज की प्रेरणा से 56 एकान्तर तप की आराधना उल्लेखनीय है। इस वर्ष 250 से अधिक वर्षीतप हुए हैं।

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक **श्री मोफतराजजी मुणोत** ने कहा कि पूज्य आचार्यप्रवर के 25 वर्ष गौरवशाली रहे हैं। आचार्य श्री ने साधना करते हुए कुशल नेतृत्व किया। व्यसन मुक्ति, रात्रिभोजन-त्याग आजीवन शीलव्रत आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि रही। गुरु हस्ती के महाप्रयाण के पश्चात् आपने विषम परिस्थिति में संघ को व्यवस्थित किया। संत, सती एवं श्रावकवर्ग को आचार की दृष्टि से सम्पन्न बनाया। हम नैतिकता, प्रामाणिकता तथा चारित्र में श्रेष्ठता रखने का संकल्प लेते हुए उपहार दें। पूज्य आचार्यप्रवर के पदारोहण की गोल्डन जुबली मनाने का भी संघ को अवसर प्राप्त हो, ऐसी

मंगल भावना है।

राष्ट्रीय संघाध्यक्ष **श्री पी. शिखरमल जी सुराणा** ने कहा कि पूज्य आचार्यप्रवर ज्ञान की बातें सारगर्भित रूप में एवं सरल भाषा में समझाने में निपुण है। हर आगन्तुक को छोटे-छोटे नियम करवाते हैं। धर्म स्थान में सामायिक-साधना करने, रात्रिभोजन त्याग, व्यसन त्याग की प्रेरणा के साथ शीलव्रत के खंद विपुल संख्या में हो रहे हैं। चेन्नई चातुर्मास में मुझ पर कृपा हुई। शीलव्रत के खंद करवाये, रात्रिभोजन त्याग के नियम करवाये एवं स्वाध्यायी बना दिया। हिण्डौन में 1008 वन्दना का क्रम चला, साधना वर्ष में 1000 शीलव्रत के खंद हुए, छोटे से क्षेत्र दूदू में दीक्षा का भव्य आयोजन हुआ। अजमेर में 109 तपस्वियों के पारणे हुए हैं। यह सब इतिहास बनता जा रहा है। वास्तव में हस्ती गुरु का यह शिष्य सवाया है।

पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने सम्बोधन में आत्मचिन्तन एवं आत्मसाधना करने की पावन प्रेरणा की। आपने फरमाया जानबूझ कर, आँख मूंद कर खड्डे में गिरने के मार्ग को छोड़िये। यदि अन्तर्मुहूर्त भी बाकी रहा तो मोक्ष मिलाया जा सकता है। आप गुणगान करने तक ही सीमित न रहें, व्रत-प्रत्याख्यान में आगे बढ़ें। आप महाव्रती बनें, अणुव्रती बनें, एक व्रती बनें, सत्य का आचरण करें, शीलव्रत धारण करें। एक नियम ग्रहण करके भी नैया पार लगाई जा सकती है। (आचार्यप्रवर के उद्‌बोधन को जिनवाणी के इसी अंक में प्रकाशित किया गया है।) धर्म सभा का संचालन श्री बलवीर जी पीपाड़ा ने किया।

धर्म सभा में उपस्थित भाई-बहिनों में से अधिकांश ने 3-3 सामायिक साधना के साथ एकाशन व्रत का अर्घ्य अर्पित किया।

अजमेर संघ के अध्यक्ष श्री विवेकजी मेहनोत, उपाध्यक्ष श्री हरकचन्दजी बोथरा, मंत्री श्री चन्द्रप्रकाशजी कटारिया, संघ संरक्षक श्री पारसमलजी रांका, समर्पित गुरुभक्त श्री अनिल जी दुधेड़िया आदि समस्त कार्यकर्त्तागण, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् की सेवाएँ उल्लेखनीय रहीं। अक्षय तृतीया पर वृहद् स्तर पर एवं शेषकाल में विराजने के समय अजमेर संघ (रत्न हितैषी श्रावक संघ) की स्वधर्मिवात्सल्य भावना प्रमोदकारी रही।

अजमेर से विहार एवं ब्यावर पदार्पण

अरिहन्त कॉलोनी, अजमेर से 28 मई को विहार कर पूज्यप्रवर संतमण्डली के साथ पुरानी मण्डी पधारे। 29 मई को यहाँ से धोलाभाटा होते हुए 30 मई को आदर्शनगर पधारे। यहाँ दो दिन विराजकर 01 जून को माखूपुरा, 02 को हटूण्डी, 03 को तबीजी को पावन किया, जहाँ शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना ने पूज्यपाद की सेवा सन्निधि का लाभ लिया। 04 जून को सराधना पधारे, 05 को केसरपुरा में पूर्व जस्टिस श्री जसराज जी चौपड़ा ने दर्शन-वन्दन-सेवा का लाभ लिया। 06 जून को मांगलियावास, 07

को जेठाणा, 08 को सामला विहार के अन्तर्गत ज्ञानगच्छीया महासती श्री चन्दनाजी, महासती श्री रेखाजी म.सा. ने पूज्य आचार्य भगवन्त से स्वास्थ्य सम्बन्धी सुख साता की पृच्छा की। पूज्य श्री ने इस वर्ष के शेष चातुमासों की घोषणा सामला में की। 09 जून को गोला पधारे। इसी दिन जयपुर में व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. की निश्रा में मुमुक्षु बहिन श्रीमती विमलाजी जैन की **भागवती दीक्षा** सादगी से सम्पन्न हुई। 10 जून को पृथ्वीराज खेडा होते हुए देवगढ़, 11 को पिपलाज, 12 को धोलपुरा, 13 को रीको कॉलोनी को पद रज से पावन कर 14 को **ब्यावर** की बाफना गली स्थित बरेली स्थानक पधारे। पूज्य आचार्य भगवन्त का पावन पदार्पण जयघोषों के साथ हुआ। पदार्पण समय से व्याख्यान पीपलिया बाजार स्थित स्थानक (वीरसंघ) में चल रहा है।

वाचनी का क्रम बरेली स्थानक में 2 से 3 बजे तक प्रवाहमान है। वाचनी में बहनों की अच्छी संख्या रहती है। पन्नालालजी म.सा. के सम्प्रदाय की व्याख्यात्री महासती डॉ. श्री ज्ञानलताजी म.सा., दर्शनलताजी म.सा., चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 9 सुख शान्ति की पृच्छा करने एवं सेवा सन्निधि का लाभ लेने हेतु पधारीं। पूज्य आचार्यप्रवर ने संक्षेप में भोलावण देते हुए फरमाया- "श्रद्धेय श्री पन्नालालजी म.सा. की परम्परा का गौरव बनाये रखें।" जयपुर में 15 जून को बड़ी दीक्षा के अवसर पर नवदीक्षिता महासती श्री विमलाजी म.सा. का नामकरण 'श्री विचित्राजी' म.सा. किया गया। श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 पूज्य आचार्यप्रवर की सेवा में पधारे एवं सुख-शान्ति की पृच्छा की।

ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी, 19 जून को क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. की 171 वीं पुण्यतिथि तप-त्याग के साथ मनायी गई। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. के द्वारा किए गए क्रियोद्धार, रात्रिभोजन त्याग, संयम जीवन आदि पर प्रकाश डाला। पूज्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. ने जड़ पूजा करने वालों को धर्म का वास्तविक रूप समझा कर धर्म में स्थिर किया था। श्रद्धेय श्री दुर्गादासजी म.सा. के रहते 24 वर्षों तक उन्होंने आचार्य पद ग्रहण नहीं करते हुए संघ-व्यवस्था बनाये रखी। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने आचार्य श्री रतनचन्द्रजी म.सा. को आत्मगुणों की साधना करने के साथ दूसरों को भी प्रेरणा करने वाले महापुरुष के रूप में वर्णित किया।

22 जून को क्रियोद्धारक दिवस पर श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने प्रवचनामृत फरमाते हुए इस दिवस की महत्ता से परिचित कराया। 23 जून को राजस्थान उच्च न्यायालय के महाधिवक्ता श्री नरपतमलजी लोढ़ा ने गुरु चरण सन्निधि का लाभ लिया। 24 जून को खरतरगच्छीया महासती श्री मणिप्रभाजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री संयमनिधि

जी म.सा., श्री क्षमानिधिजी म.सा. आदि ठाणा पूज्य आचार्यप्रवर की सुख-साता पृच्छा करने हेतु पधारी एवं विनय भाव प्रकट करते हुए शिक्षा देने हेतु निवेदन किया।

ब्यावर में छह सम्प्रदायों का संयुक्त संगठन वीर संघ है, जो आगत दर्शनार्थी बन्धुओं के अतिथि सत्कार में सन्नद्ध है। आचार्यश्री का यहाँ से निमाज की ओर चातुमार्सार्थ विहार संभावित है।

उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में धर्माराधन की निरन्तरता

ज्ञानगच्छाधिपति श्री प्रकाशमुनिजी एवं सन्तप्रवरों का मधुर मिलन

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी **श्री गौतममुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 6 जोधपुर के सरस्वती नगर में सुख शान्तिपूर्वक विराज रहे हैं तथा धर्मश्रवण की क्षेत्र में विशेष उमंग है। जोधपुर में **तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.** का 07 जून को शक्तिनगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में पदार्पण हुआ। उसके पश्चात् एक दिन पावटा विराज कर साध्वीप्रमुखा-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि महासतीवृन्द को लाभान्वित करते हुए 09 जून को घोड़ों का चौक स्थानक उपाध्यायप्रवर की सेवा में पधारे। यहाँ 09 से 12 जून तक स्वाध्याय शिक्षक-निर्माण शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें शास्त्रीय विषयों पर संतों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। ज्ञानगच्छाधिपति श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा रायपुर हवेली स्थानक विराज रहे थे। श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रजी म.सा. प्रातःकाल सुख-साता पृच्छा के लिए रायपुर हवेली पधारे। श्रुतधर श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. ने भावना व्यक्त की वे उपाध्यायश्री की सुख-साता पूछने आना चाहते हैं। तब मुनिश्री ने फरमाया कि घोड़ों का चौक से संभवतः कल विहार होने की संभावना है। अतः सायंकाल लगभग 5 बजे उपाध्यायप्रवर की सेवा में श्रुतधर श्री प्रकाशमुनिजी म.सा., श्री पारसमुनिजी म.सा. एवं श्री शालिभद्रजी म.सा. आदि संत सुख-साता पृच्छा हेतु पधारे। 13 जून को उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा 10 घोड़ों का चौक से विहार कर नेहरुपार्क स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन पधारे। यहाँ से हरिसिंह नगर में श्री यू.सी. सिंघवी साहब के मकान पर विराजते हुए भगत की कोठी पधारे। यहाँ से 16 जून को विहार कर सरस्वती नगर स्थित स्वाध्याय भवन पदार्पण हुआ। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. यहाँ से उसी दिन विहार कर दिग्विजयनगर (गुलाबनगर) पधार गए। उपाध्यायप्रवर, श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि संतप्रवरों की सन्निधि में सरस्वती नगर में धर्म श्रवण के प्रति पयुर्षण की भांति उत्साह दिखाई दे रहा है। स्वाध्याय भवन में संतों के प्रवचन हेतु श्रावक-श्राविकाओं की सराहनीय उपस्थिति बनी हुई है।

ज्ञानगच्छाधिपति श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. आदि संत प्रवर रातानाडा से विहार कर 28 जून को सरस्वती नगर स्थित आदर्श विद्या मंदिर पधारे। स्वाध्याय भवन में श्रुतधरजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. का संयुक्त प्रवचन हुआ। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी के मौन साधना चल रही थी, किन्तु श्रुतधरजी एवं पारसमुनिजी के विशेष आग्रह पर उन्होंने भी प्रवचन फरमाया। प्रवचन में अच्छी उपस्थिति रही। दूसरे दिन वर्षा की बूँदें होने से श्रुतधरजी म.सा. का व्याख्यान आदर्श विद्या मंदिर के सभा कक्ष में हुआ तथा उपाध्यायप्रवर की सन्निधि में व्याख्यान बंद रखा गया। दो परम्पराओं के प्रमुख संतों के मिलन का यह क्षण सबको प्रमुदित कर रहा था। सरस्वती नगर क्षेत्र के अध्यक्ष श्री भंवरलाल जी चौपड़ा, मंत्री श्री पारसमलजी ओस्तवाल, सुज्ञश्रावक श्री इन्दरचन्दजी देशरला, श्री एस.आर. जैन, श्री पारसमलजी मूथा आदि श्रावकों की विशेष विनतियों एवं प्रयत्नों से दो परम्पराओं के संतों के मिलन का वह प्रसंग बना। *-धनपत सेठिया, अध्यक्ष*

भोपालगढ़ में सेवाभावी श्री नन्दीषेणजी म.सा. की सन्निधि में तपाराधन

सेवाभावी श्री नन्दीषेणजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 का 09 जून 2016 को भोपालगढ़ में पदार्पण हुआ। संतों के पदार्पण के साथ ही शेखेकाल में भी चातुर्मास जैसा माहौल बन गया। प्रार्थना-प्रवचन, प्रतिक्रमण आदि नियमित कार्यक्रमों में श्रावक-श्राविकाओं ने रुचिपूर्वक भाग लिया। उपवास, एकाशन एवं बियासन की लड़ी के साथ 1008 वन्दना का कार्यक्रम चला तथा 4243 तक वन्दना की गई। संत-मण्डल के 14 दिन के प्रवास में प्रचण्ड गर्मी होते हुए भी चार अठाई तप एवं नौ तेले सम्पन्न हुए।

-सोहनलाल बोथरा

निमाज एवं किशनगढ़ में तीर्थंकर आराधना एवं बीस बोलों की साधना का आयोजन 19 जुलाई से

निमाज- अनन्त-अनन्त पुण्यवानी से निमाज संघ को रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, ज्ञान-क्रिया के बेजोड़ संगम **जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा एवं साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की सुशिष्या मधुर **व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.** आदि ठाणा के चातुर्मास का सुयोग प्राप्त हुआ है। चातुर्मास के मंगलमय अवसर पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, मुनिमण्डल एवं महासती मण्डल के पावन सान्निध्य में हम सबको ज्ञान-

दर्शन-चारित्र की विशुद्ध साधना में आगे बढ़ना है। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मंगल आशीर्वाद से चातुर्मास के प्रथम दिवस 19 जुलाई से 12 अगस्त 2016 तक निमाज (जिला-पाली) में 24 तीर्थंकर भगवन्तों की आराधना व 20 बोलों की साधना का कार्यक्रम पहली बार होने जा रहा है।

24 तीर्थंकर भगवन्तों की आराधना- नारकी के बंधन तोड़ने वाली, देवलोक का बंध कराने वाली, भव-भव के अशुभ कर्मो को खपाने वाली, उत्कृष्ट पुण्यवानी का बंध कराने वाली तो है ही, साथ ही यह साधना निकट भवों में मोक्ष सुख प्रदायिनी है। जो भविक जन यह आराधना करेंगे वे इस भव में, पर भव में, भव-भव में सुख का वरण करेंगे। आचार्य भगवन्त, मुनिमण्डल एवं महासती मण्डल के पावन सान्निध्य में मंगल दिशा की ओर बढ़ाने वाली मंगल तीर्थंकर आराधना से श्रावक-श्राविकाओं के जीवन में एक नई दिशा प्राप्त होगी।

बीस बोलों की साधना- सामायिक, प्रतिक्रमण, लोगस्स के कायोत्सर्ग, तीर्थंकर स्तुति चौबीसी, माला, ध्यान, तप, मौन, वन्दना, संवर, स्वाध्याय आदि विभिन्न साधना पद्धतियों द्वारा उत्कृष्ट रसायन की प्राप्ति हेतु की जायेगी। संघ के सभी श्रावक-श्राविकाओं से आत्मीय अनुरोध है कि हम अपने जीवनकाल के 24 दिन तीर्थंकर भगवन्तों की आराधना एवं अपनी साधना को समर्पित करें। आप अपने आगमन की सूचना हेतु अवश्य सम्पर्क करें। **सम्पर्क-सूत्र-**श्री सुभाषचन्द धोका-094485-39647, श्री गौतमराज भण्डारी-090083-55550, श्री सूरजमल भण्डारी-094444-14020, श्री पदमचन्द धोका-094480-68404, श्री पदमचन्द कोठारी-098750-71722, श्री निर्मलकुमार बम्ब-094496-49577

निवेदक- श्रीमती बीना मेहता-महासचिव, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.)97727-93625

किशनगढ़- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** की सुशिष्या मधुर **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.** आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में किशनगढ़ में 24 तीर्थंकर भगवन्तों की आराधना व 20 बोलों की साधना का कार्यक्रम चातुर्मास प्रारम्भ **19 जुलाई से 12 अगस्त 2016** तक आयोजित किया जा रहा है। **सम्पर्क सूत्रः-** 1. बरखाजी कवाड़-092516-02781, 2. कुसुमजी कोठारी-094137-52487, 3. बीनाजी मेहता, महासचिव-97727-93625, 4. धनबुद्धि

सिंहजी मेहता-अध्यक्ष-98294-66301, 5. कर्मचन्दजी महनोत-मंत्री-94143-47620, **निवेदकः-** 1. श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, 2. महिला मण्डल एवं 3. ओसवाल प्रगतिशील नवयुवक मण्डल, किशनगढ़ शहर, जिला-अजमेर (राज.)

निमाज में 1-2 अक्टूबर 2016 को विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा की सन्निधि में षष्ठ विद्वत्संगोष्ठी 1-2 अक्टूबर 2016 को निमाज में आयोजित होगी। संगोष्ठी का विषय है- **'जैन आगम साहित्य में कषाय विषयक चिन्तन'**। संगोष्ठी में प्रमुख विद्वानों के द्वारा शोध आलेख प्रस्तुत किए जायेंगे।

-डॉ. धर्मचन्द जैन, संयोजक

किशनगढ़ में 6-7 अगस्त को स्वाध्याय शाला

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 6-7 अगस्त 2016 को उपासकदशांग सूत्र पर स्वाध्याय शाला का आयोजन होना है। विद्वज्जन अपना शोध आलेख प्रस्तुत करेंगे।

-डॉ. अशोक कवाड़, कार्याध्यक्ष, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

अजमेर में कार्यशाला एवं पुस्तक लोकार्पण सम्पन्न

पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के **आचार्य पदारोहण रजत साधना वर्ष की सम्पूर्ति के उपलक्ष्य में अजमेर में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में 27 मई, 2016 को** लक्ष्मी पैलेस, पुष्कर रोड़, अजमेर में दोपहर 1.30 बजे राष्ट्रीय संघ अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा की अध्यक्षता में **कार्यशाला आयोजित की गई।** कार्यशाला के विषय थे-1. 'मेरे सपनों का रत्नसंघ', 2. 'कार्यकर्ता की गुणवत्ता कैसे बढ़े?'। संघ कार्याध्यक्ष डॉ. अशोक जी कवाड ने इस विषय पर तैयार किए गए विजन का वाचन किया तथा सभा में उपस्थित श्रावकों से सुझाव आमंत्रित किए गए। इस विषय पर लगभग 25 श्रावकों से सुझाव प्राप्त हुए। इस विजन में संघ में संयम एवं वैराग्य की अभिवृद्धि पर विशेष बल दिया गया। सभा को संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत, शासन-सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना, राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा ने सम्बोधित किया।

इस अवसर पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित आचार्य भगवन्त पूज्य

श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा लिखित तथा श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा विवेचित एवं सम्पादित **'वीर गुण-गौरव गाथा'** पुस्तक का विमोचन किया गया तथा विवेचक श्री चौधरी साहब का माल्यार्पण एवं शाल से बहुमान किया गया। जिनवाणी मासिक पत्रिका के **'आचार्यपद विशेषांक'** एवं **'सामायिक दर्शन'** पुस्तक का भी लोकार्पण किया गया।

राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री बंसत जी जैन ने संघ सेवा सोपान के नये प्रारूप की जानकारी दी तथा संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने इस योजना से जुड़ने हेतु प्रेरणा की। उन्होंने बताया कि आज अजमेर से मध्य राजस्थान संभाग के क्षेत्रीय प्रधान **श्री अनिल जी दुधेड़िया** एवं अजमेर संघ के अध्यक्ष **श्री विवेक जी महनोत** ने गजेन्द्र निधि के ट्रस्टी बनने हेतु स्वीकृति प्रदान की है। दोनों ट्रस्टियों का शाल एवं माला से बहुमान किया गया।

शासनसेवा समिति के संयोजक **श्री रतनलालजी बाफना** ने कहा कि हम संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन को जाते हैं तो उनसे बातें वैराग्य की होनी चाहिए, न कि गृहस्थी की। **राष्ट्रीय संघ मंत्री श्री तरूणजी बोहरा** ने सभी सदस्यों को बताया कि राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय ने सभी शाखाओं में रविवारीय सामूहिक सामायिक कार्यक्रम के अभियान को गति प्रदान करने हेतु निवेदन किया है। अतः सभी सदस्यों को स्थानक में आकर सामायिक की आराधना करनी चाहिए। **संघाध्यक्ष महोदय सुराणा सा.** ने धोवन पानी की महत्ता पर प्रकाश डाला एवं उसके नियमित उपयोग हेतु प्रेरणा की। **संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी** ने अजमेर संघ द्वारा आयोजित आचार्य पदारोहण रजत साधना वर्ष सम्पूर्ति कार्यक्रम के सुन्दर व्यवस्था के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया तथा यह भी सूचित किया गया कि श्री कल्पेश जी कवाड़-चेन्नई, श्री विवेकजी लुंकड़-जोधपुर, श्री जिनेन्द्रजी बाफना-जलगाँव, सुश्री मधुजी कवाड़-चेन्नई तथा सुश्री हिमांक्षीजी कांकरिया-नागौर के आज्ञा-पत्र हो चुके हैं। इस पर सभी सदस्यों ने हर्ष व्यक्त किया।

निमाज में संघ व संघ की संस्थाओं की वार्षिक आमसभा, गुणी अभिनन्दन तथा कार्यकारिणी सभाओं का आयोजन

गुणी-अभिनन्दन समारोह

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा गुणी-अभिनन्दन एवं विशिष्ट सेवाभावी कार्यकर्त्ताओं का सम्मान-समारोह शनिवार, **17 सितम्बर 2016** को दोपहर 12.30 बजे निमाज, जिला-पाली (राज.) में रखा गया है, जिसमें सभी संघ सदस्य सादर आमन्त्रित हैं।

कार्यकारिणी सभाएँ

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सभी सहयोगी संस्थाओं की कार्यकारिणी सभाओं का आयोजन शनिवार, **17 सितम्बर 2016** को निमाज में रखा गया है, सम्बद्ध सभी कार्यकारिणी सदस्य सादर आमन्त्रित हैं।

वार्षिक आमसभा

संघ एवं संघ की सभी सहयोगी संस्थाओं की **वार्षिक साधारण सभा रविवार, 18 सितम्बर 2016 को दोपहर 12.30 बजे निमाज, जिला-पाली (राज.)** में रखी गई है, जिसमें सभी संघ सदस्यों की उपस्थिति सादर प्रार्थित है। वार्षिक साधारण सभा के विचारणीय विषय बिन्दु इस प्रकार हैं-

विचारणीय विषय बिन्दु-

1. गत बैठक की कार्यवाही का पठन
2. संचालन समिति/कार्यकारिणी की बैठक में लिए गये निर्णयों की जानकारी/ अनुमोदन।
3. संघ व संघ की सभी सहयोगी संस्थाओं के वार्षिक प्रतिवेदन एवं सदस्यों से प्राप्त सुझावों पर विचार।
4. संघ व संघ की संस्थाओं की कार्यकारिणियों द्वारा स्वीकृत वर्ष 2015-2016 के वास्तविक आय-व्यय एवं वर्ष 2016-2017 के प्रस्तावित बजट का अनुमोदन।
5. अंकेक्षक की नियुक्ति।
6. संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्ष/संयोजक द्वारा अभिव्यक्ति।
7. राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय द्वारा अभिव्यक्ति।
8. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से।

नोट:- निमाज पधारने पर आपको जिनशासन गौरव **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.**, महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 एवं व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 4 के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का लाभ भी प्राप्त होगा।

संघ के सभी सदस्यों से विनम्र अनुरोध है कि संघहित में अपने लिखित सुझाव संघ के प्रधान कार्यालय को **10 अगस्त 2016** तक भेजने की कृपा करें। संघहित के उपयोगी सुझावों पर यथोचित विचार व निर्णय करने का प्रयास रहेगा। संघ सदस्यों को साधारण सभा में भाग लेने की आप अपने क्षेत्र में सूचना करें।

आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान 2016 हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष जैन आगम, जैन धर्म-दर्शन, कला एवं संस्कृति तथा जैन जीवन-पद्धति के क्षेत्र में लेखन, शोध तथा जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान करने वाले विशिष्ट विद्वान् को **'आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान'** से सम्मानित किया जाता है। इस सम्मान हेतु लेखकों से सम्मान योग्य कृति की चार प्रतियाँ **10 अगस्त 2016** तक आमन्त्रित हैं। सम्मान हेतु नियम इस प्रकार हैं-

1. विद्वान् की एक कृति अथवा उनके सम्पूर्ण योगदान के आधार पर भी सम्मानित किया जा सकेगा।
2. सम्मान हेतु प्रकाशित अथवा अप्रकाशित (टंकित) कृति की चार प्रतियाँ प्रेषित की जानी चाहिए।
3. प्रकाशित कृति सन् 2012 से पूर्व की नहीं होनी चाहिए।
4. अन्य संस्थाओं द्वारा पूर्व में पुरस्कृत कृति पर यह सम्मान नहीं दिया जाएगा।
5. कृति का विशेषज्ञ विद्वानों से मूल्यांकन कराया जाएगा।
6. कृति के मौलिक एवं पूर्व में पुरस्कृत न होने का प्रमाण-पत्र संलग्न करना होगा।
7. सम्मान के रूप में 51 हजार की राशि प्रशस्ति-पत्र के साथ प्रदान की जाती है।

आवदेन-पत्र कृति की चार प्रतियों के साथ अपने बायोडेटा एवं सम्पर्क सूत्र सहित निम्नांकित पते पर प्रेषित करें। **सम्पर्क सूत्रः-** महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.),फोन नं. 0291-2636763/2641445, **Email-absjrhssangh@gmail.com**

संघ द्वारा सम्मानार्थ प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

युवा प्रतिभा- शोध-सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)-

1. **प्रशासनिक चयन-** राज्यस्तरीय व केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।
2. **प्रोफेशनल विशिष्ट-** डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, कम्पनी सचिव व अन्य प्रोफेशनल कोर्स में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।
3. **शोध-** वैज्ञानिक खोज (अहिंसा व जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली)

4. **संघ-सेवा**– चतुर्विध संघ सेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक लेखन इत्यादि।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (एक श्राविका, एक युवा, एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)– कम से कम 10 वर्ष स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधन) के रूप में सक्रिय सेवा। (युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष में छूट दी जा सकेगी।)

गुणी-अभिनन्दन–

1. **तपस्या**– कम से कम पाँच वर्ष तक एकान्तर, दीर्घ तपस्या, दीर्घ संवर-साधना या अन्य विशिष्ट तप।
2. **अन्य**– सेवा, साधना, संघ उन्नयन में योगदान, चतुर्विध संघ-सेवा, विद्वान्।

नोटः– उक्त सम्मान हेतु अपनी प्रविष्टियाँ **10 अगस्त 2016** तक संघ कार्यालय के पते पर भिजवाएं।-महामंत्री-अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.), फोनः 0291-2636763,**Email-absjrhssangh@gmail.com**

न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा प्रतिभा सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर संघ-संरक्षक न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती उगमकंवरजी लोढ़ा की पावन प्रेरणा से संघ द्वारा प्रदत्त **युवा शिक्षा-प्रतिभा सम्मान** हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित हैं। इसके अन्तर्गत उन छात्र-छात्राओं की प्रविष्टियाँ स्वीकार की जायेंगी, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की हो। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, विश्वविद्यालय आदि की परीक्षाओं में वरीयता सूची में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ छात्र को 21 हजार रुपये की राशि से सम्मानित किया जाएगा। प्रतियोगी एवं प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों में उच्च वरीयता प्राप्त छात्र-छात्रा को भी सम्मानित किया जा सकता है।

इच्छुक अभ्यर्थी आवेदन करते समय अंकतालिका की सत्यापित प्रतिलिपि संलग्न करें तथा सम्पर्क सूत्र सहित अपना बायोडेटा **10 अगस्त 2016** तक निम्नांकित सम्पर्क सूत्र पर प्रस्तुत करें। **सम्पर्क सूत्रः**-महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. 0291-2636763, **Email-absjrhssangh@gmail.com**

डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान हेतु आवेदन आमन्त्रित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व महामंत्री डॉ. बिमला जी

भण्डारी की पुण्य स्मृति में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में भण्डारी परिवार की ओर से जैन धर्म-दर्शन से सम्बद्ध विषय पर पी-एच्.डी एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्त करने वाले शोधकर्त्ताओं को **'डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान'** से सम्मानित किया जाएगा। इस सम्मान हेतु आवश्यक बिन्दु इस प्रकार हैं-

1. जिन शोधकर्त्ताओं ने **17 फरवरी 2015** के पश्चात् पी-एच्.डी/डी.लिट् उपाधि प्राप्त की है, उनमें से **5** पी-एच्.डी. उपाधिधारकों तथा **2** डी.लिट् उपाधिधारकों को क्रमशः 11 हजार रुपये एवं 15 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि से सम्मानित किया जाएगा।
2. **17 फरवरी 2015 से 31 जुलाई 2016** के मध्य जो भी पी-एच्.डी. एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्तकर्त्ता हों, वे इस सम्मान हेतु आवेदन कर सकते हैं। आवेदन-पत्र के साथ पी-एच्.डी./डी.लिट् उपाधि के समुचित सर्टिफिकेट एवं शोधकार्य का सारांश संलग्न करना होगा।
3. प्राप्त आवेदन-पत्रों का निर्णायक समिति द्वारा मूल्यांकन कर सम्मान हेतु अनुशंसा की जाएगी।
4. सम्मान राशि 'श्री सरदारमल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर' के सौजन्य से प्रदान की जाएगी।
5. सभी आवेदन-पत्र निम्नांकित पते पर **10 अगस्त 2016** के पूर्व प्राप्त हो जाने चाहिए।- **महामंत्री,** अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन : 0291-2636763

-पूरणराज अबानी, महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

श्राविका मण्डल द्वारा दक्षिण भारत में प्रचार-प्रसार कार्यक्रम सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा दक्षिण भारत में कार्यशाला के रूप में प्रथम प्रवास कार्यक्रम 17 से 19 जून, 2016 तक आयोजित किया गया। श्राविका मण्डल की परामर्शदाता श्रीमती मंजूजी भण्डारी-बैंगलोर, अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर, महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर, कार्याध्यक्ष श्रीमती मीनाजी गोलेच्छा-जयपुर, श्रीमती प्रमिलाजी दुगड़-चेन्नई ने भाग लेकर इस कार्यक्रम को उत्साह पूर्वक सम्पन्न किया। 17 जून, 2016 को **हैदराबाद** में बालिका मण्डल का गठन किया गया। श्री श्रीपालजी देशलहरा एवं श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती ललिताजी बरड़िया, सचिव श्रीमती शकुंतलाजी गुन्देचा एवं हैदराबाद संघ द्वारा सहयोग प्राप्त हुआ। 18 जून,

2016 को शांतिनगर, शूले, **बैंगलोर** में दो सत्रों में कार्यशाला आयोजित की गई। बैंगलोर श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती वैजयन्तीजी मेहता, सचिव श्रीमती प्रभाजी गुलेच्छा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री यशवन्तराजजी सांखला, वीतराग ध्यान-साधना केन्द्र के संयोजक श्री नवरत्नमलजी भंसाली का अपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ। द्वितीय सत्र में श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित गतिविधियाँ एवं आपसी चर्चा द्वारा समस्या का समाधान किया गया।

19 जून , 2016 को स्वाध्याय भवन, साहूकार पेट, **चेन्नई** में कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. अशोकजी कवाड़, शासन सेवा समिति के सदस्य श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, श्राविका मण्डल परामर्शदाता श्रीमती मधुजी सुराणा, चेन्नई श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती संगीताजी बोहरा, सचिव श्रीमती शशिजी कांकरिया, श्री नरेंन्द्रजी कांकरिया आदि एवं स्थानीय संघ द्वारा सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यशाला के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार रहे:- 1. देव-गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धा। 2. संघ एवं संघनायक के प्रति समर्पण। 3. संघ वर्धापन में समय दान। 4. स्वयं की निर्बलता को दूर करने का एकमात्र साधन संघ से जुड़ना। 5. संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के सभी कार्यक्रमों व गतिविधियों का क्रियान्वयन एवं संघ का वर्धापन। 6. संख्या बल पर विशेष जोर। 7. 365 दिन सभी घरों में धोवन पानी बनाने की प्रेरणा। 8. रजत वर्ष सम्पूर्णता पर वर्ष भर में 50 बियासना करने की विशेष प्रेरणा। *-बीना मेहता, महासचिव*

अजमेर में आस्था-अनुशास्ता-2016 आवासीय शिविर सम्पन्न

आचार्य पदारोहण रजत वर्ष के उपलक्ष्य में पंच-दिवसीय आस्था-अनुशास्ता शिविर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा राजस्थान में प्रथम बार दिनांक 21 मई से 25 मई, 2016 तक आराधना भवन, पुष्कर रोड़, अजमेर में आयोजित किया गया।

शिविर के मुख्य लक्ष्य थे-(1) देव-गुरु-धर्म के प्रति आस्था (2) जीवन का लक्ष्य कैसे निर्धारित करें। (3) पाप आस्रव से हटकर संवर में प्रवेश कर किस प्रकार आत्मा की विशुद्धि कर सकते हैं। शिविर में जोधपुर, जयपुर, अजमेर, दूदू, मेड़ता, गोटन, भोपालगढ़, ब्यावर, सवाईमाधोपुर, आलनपुर, हिण्डौनशहर, अलीगढ़-रामपुरा, कोटा, बस्सी, खेरली, खोह, भरतपुर, शिरपुर (होलनाथां), गंगापुरसिटी, पीपाड़शहर, लक्ष्मणगढ़, अलवर, जलगाँव आदि विभिन्न 25 क्षेत्रों से 189 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त के प्रेरणास्पद उद्बोधन सहित श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी

म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा., महासती श्री भावनाजी म.सा., महासती श्री लक्षिताजी म.सा., महासती श्री अरिहाश्रीजी म.सा. ने अपना अमूल्य समय निकालकर विभिन्न दृष्टान्तों के माध्यम से शिविरार्थियों को संस्कारित करने का प्रयास किया। वैरागिन बहिनों सुश्री मधुजी कवाड़-चेन्नई, सुश्री प्रीतिजी, सुश्री सोनमजी ने बालिकाओं को माला बनाना, मुंहपत्ति कवर बनाना, प्रतिदिन प्रतिलेखना एवं वंदना के माध्यम से जैन धर्म की गहराइयों को समझाने का प्रयास किया।

संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. अशोकजी कवाड़-चेन्नई, श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता, बहू बालिका समिति की मंत्री श्रीमती विनीताजी सुराणा-चेन्नई, अजमेर श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया, मंत्री श्रीमती ममताजी भण्डारी, अजमेर की सुश्राविका श्रीमती स्नेहाजी (रियां वाला), कुसुमजी साण्ड, सुशीलाजी मेड़तवाल, मेघाजी कोठारी, कल्पनाजी, उषाजी, आशाजी, पिंकीजी एवं लताजी कटारिया ने सराहनीय सेवाएँ देकर शिविर को सफल बनाया।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अजमेर के आवास, भोजन आदि की सुन्दर व्यवस्था एवं शिविरार्थियों को पुरस्कार दिए जाने हेतु संघ का आभार ज्ञापित किया गया।

-पूर्णिमा लोढ़ा, अध्यक्ष

आवश्यक सूत्र पर 'खुली पुस्तक प्रतियोगिता' 02 जुलाई से

अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा **'बने आगम अध्येता (6)'** के अन्तर्गत आवश्यक सूत्र की परीक्षा **02 जुलाई 2016** से प्रारम्भ की जा रही है। मूल्यांकन प्रश्न-पत्र भरकर भेजने की अन्तिम तिथि **20 अक्टूबर 2016** व समापक परीक्षा **18 दिसम्बर 2016** को रखी गई है। प्रतियोगिता हेतु पुस्तक का मूल्य 60/- रुपये रखा गया है। सम्पर्क सूत्रः- श्रीमती बीनाजी मेहता-97727-93625, श्री राकेशजी जैन-94616-63545 एवं आवश्यक सूत्र की पुस्तक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोनः 0141-2575997, 4068798 से मंगवा सकते हैं।

चेन्नई एवं जोधपुर में स्वाध्यायी शिक्षक-निर्माण शिविर सम्पन्न

चेन्नई- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 2 से 3 अप्रैल, 2016 तक

तमिलनाडु क्षेत्र के स्वाध्यायियों का स्वाध्यायी शिक्षक-निर्माण शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें तमिलनाडु क्षेत्र के 75 स्वाध्यायियों (35 श्राविका एवं 40 श्रावक) ने भाग। शिविर में विद्वान प्रशिक्षक एवं अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. अशोकजी कवाड़-चेन्नई, श्री त्रिलोकजी जैन-जयपुर, श्री विनोदजी जैन-चेन्नई की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुई। 'एक उत्तम शिक्षक कैसे बनें' इस हेतु स्वाध्यायियों को कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु बताए गए। भविष्य में प्रशिक्षण सेवाएं प्रदान करने हेतु 31 स्वाध्यायियों ने अपनी स्वीकृति प्रदान की। चेन्नई संघ की सुंदर व्यवस्था हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

जोधपुर- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 9 से 12 जून, 2016 तक स्वाध्यायी शिक्षक-निर्माण शिविर परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में सामायिक-स्वाध्याय भवन घोड़ों का चौक में आयोजित किया गया। इस शिविर में जलगांव, जयपुर, माझलगांव, इन्दौर, पीपाड़, सवाई माधोपुर, गंगापुर आदि क्षेत्रों से पधारे हुए लगभग 34 तथा स्थानीय 20 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। शिविर में मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र की एवं तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने सात नय, चार निक्षेप की बहुत ही सुन्दर व्याख्या की। श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रजी म.सा. ने तत्त्वार्थसूत्र की एवं श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ने कर्म ग्रन्थ भाग-1 की विवेचना की। शिविर में विद्वान प्रशिक्षक श्री प्रकाशचन्दजी जैन- जयपुर, श्री धर्मचंदजी जैन-जोधपुर, डॉ. धर्मचंदजी जैन-जोधपुर, श्रीमती सुनीताजी मेहता-जोधपुर, श्री सुशीलकुमारजी जैन-जयपुर की महनीय प्रशिक्षण सेवाएं प्राप्त हुई। शिविर में 'एक उत्तम शिक्षक कैसे बनें' इस हेतु मार्गदर्शन किया गया। जोधपुर संघ को आवास, भोजन आदि की सुन्दर व्यवस्था हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया गया। रविवार 12 जून 2016 को संयोजक श्री ओमप्रकाशजी बांठिया की सन्निधि में स्वाध्याय संघ की कार्यकारिणी की बैठक आयोजित की गई, जिसमें स्वाध्याय संघ की गतिविधियों एवं 'स्वाध्याय-शिक्षा' पत्रिका के सम्बन्ध में विचार-विमर्श हुआ।

-गोपालराज अबानी, सचिव

जलगांव में आयोजित ग्रीष्मकालीन शिविर सम्पन्न

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव द्वारा 7 से 10 अप्रैल, 2016 तक ग्रीष्मकालीन स्वाध्यायी शिविर कोठारी मंगल कार्यालय में आयोजित किया गया। इस शिविर में घोटी, फत्तेपुर, चालीसगांव, वरणगांव, धरणगांव, मुकटी, चांदुर रेलवे, भड़गांव, बोदवड़, जलगांव आदि क्षेत्रों से लगभग 125 शिविरार्थियों ने भाग लिया। तीन कक्षाओं के माध्यम से श्री प्रकाशचंदजी जैन-जयपुर, श्री धर्मचंदजी जैन-जोधपुर, श्रीमती

मंगलाजी चोरडिया-जलगांव, श्री मनोजजी संचेती-जलगांव एवं श्री हीरालालजी मंडलेचा-जलगांव ने अपनी अध्यापन सेवाएँ प्रदान की। शिविर में आगम, थोकड़े प्रतिक्रमण, 25 बोल, 67 बोल एवं जीवन निर्माण पर विशेष जोर दिया गया। शिविर के अन्तर्गत श्री रतनलाल जी बाफना, श्री दलीचंदजी चोरडिया एवं श्री कंवरलाल जी सिंघवी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। *-गोपालराज अबानी, सचिव*

मारवाड़ क्षेत्र में प्रचार-प्रसार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 06 मई 2016 को मारवाड़ के भोपालगढ़, पीपाड़, गोटन, मेड़ता सिटी तथा नागौर क्षेत्र में प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के संयोजक श्री हर्षवर्धनजी ललवाणी-जोधपुर, श्री राजेशजी भण्डारी-सचिव, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के सचिव श्री नवरतनजी गिडिया, स्वाध्याय संघ के कार्यालय प्रभारी- श्री धीरजजी डोसी एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर की उपाध्यक्ष श्रीमती सरलाजी भण्डारी की महनीय सेवाएं प्राप्त हुई।

12 मई 2016 को मारवाड़ के दूदू, किशनगढ़, अजमेर, ब्यावर तथा बिलाड़ा क्षेत्र में प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के सचिव श्री राजेशजी भण्डारी-जोधपुर, श्री गोपालराजजी अबानी-सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, श्री सुनीलजी संकलेचा- सहसचिव, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड एवं सरलाजी भण्डारी-उपाध्यक्ष, जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर की महनीय सेवाएं प्राप्त हुई। दोनों प्रचार-प्रसार यात्राओं में पयुर्षण पर्वाराधन, पाठशाला एवं रविवारीय संस्कार शिविर की प्रेरणा की गई। शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा की जानकारी देते हुए परीक्षा फॉर्म भरवाये गए एवं संघ में चल रही विभिन्न गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी गई। *-गोपालराज अबानी, सचिव*

स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर जुलाई में

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा स्वाध्यायियों की गुणवत्ता अभिवर्द्धन एवं पर्युषण तैयारी हेतु स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर 27 से 31 जुलाई, 2016 तक परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में निमाज में आयोजित किया जा रहा है। इस वर्ष पर्युषण महापर्व 30 अगस्त से 6 सितम्बर, 2016 में सेवा देने वाले स्वाध्यायी ही इस शिविर में भाग ले सकेंगे। स्वीकृति प्राप्त स्वाध्यायी 26 जुलाई सायंकाल तक निमाज, जिला-पाली (राज.) पहुँचने का लक्ष्य रखें।

शिविर में भाग लेने वाले इच्छुक स्वाध्यायी पत्र एवं फोन के माध्यम से स्वाध्याय संघ, जोधपुर से सम्पर्क कर स्वीकृति प्राप्त कर सकते हैं। शिविर सम्बन्धी जानकारी के लिए निम्नांकित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं:- 1. श्री गोपालराजजी अबानी, सचिव-80036-15215, 2. श्री धीरजजी डोसी-कार्यालय प्रभारी-94625-43360, 3. स्वाध्याय संघ कार्यालय, जोधपुर-0291-2624891(कार्यालय समय 10:00 से 5:00 तक)

पल्लीवाल क्षेत्र में प्रचार-प्रसार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 23 से 26 जून, 2016 तक पल्लीवाल क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार यात्रा कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रचार-प्रसार यात्रा में स्वाध्याय संघ के प्रचार-प्रसार संयोजक श्री सुभाषजी हुण्डीवाल, जोधपुर, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के क्षेत्रीय संयोजक श्री अशोककुमार जी जैन महुआ, स्वाध्याय संघ कार्यालय प्रभारी श्री धीरजजी डोसी, जोधपुर, पल्लीवाल क्षेत्र शाखा संयोजक, श्री महेन्द्र जी जैन, खेरली, पल्लीवाल क्षेत्र सह-संयोजक श्री महावीर प्रसाद जी जैन, गंगापुर सिटी, स्वाध्याय संघ के प्रचारक, श्री राजेश जी जैन हिण्डौन की महनीय सेवाएं प्राप्त हुईं। कार्यक्रम के अन्तर्गत करौली, नसिया गंगापुर, गंगापुर सिटी, सैमाला, बरगमा, हिण्डौन सिटी, वर्द्धमान नगर हिण्डौन, बौंल, महुआ, रसीद्पुर, मण्डावर, परबेणी, बीचगांवा, हरसाना, खौह, कठुमर, खेरली, नदबई, पहरसर, भरतपुर, गोपालगढ़-भरतपुर आदि क्षेत्रों में प्रवास कार्यक्रम हुआ। प्रचार-प्रसार कार्यक्रम में पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी बुलाने की पुरजोर प्रेरणा की गई जिसके फलस्वरूप 20 क्षेत्रों की मांगे प्राप्त हुईं। नये स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा से 9 महानुभावों ने स्वाध्यायी सदस्यता ग्रहण की तथा पुराने स्वाध्यायियों की पर्युषण सेवा हेतु स्वीकृति प्राप्त की गई। प्रचार-प्रसार कार्यक्रम के अन्तर्गत परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन का लाभ भी प्राप्त हुआ।

-ओमप्रकाश जी बांठिया, संयोजक

आ.शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 24 जुलाई को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 24 जुलाई, 2016, रविवार को दोपहर 12.30 बजे से आयोजित की जाएगी। परीक्षा में प्रश्नों के उत्तर हिन्दी व अंग्रेजी तथा गुजराती इन तीनों में से किसी भी भाषा में लिखे जा सकते हैं।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- अशोक चोरड़िया, संयोजक-

94141-29162, नवरतन गिड़िया, सचिव-94141-00759, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-93515-89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर-0291-2630490, फैक्स: 2636763, Website: jainratnaboard.com, E-mail: Shikshanboard jodhpur@ gmail. com, info@jainratnaboard.com

-नवरतन गिड़िया, सचिव

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर के बढ़ते चरण

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के जोधपुर में 13 एवं जोधपुर के बाहर 34 दैनिक केन्द्र संचालित हैं, जिनमें जोधपुर में 174 तथा जोधपुर के बाहर 186 छात्र-छात्राएँ नियमित संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। अप्रेल-2016 में आगोलाई, जोधपुर, उखलाना (अलीगढ़), पाली, सूरत व कोटा में कतिपय संस्कार केन्द्र प्रारम्भ किए गए हैं।

-राजेश भण्डारी, सचिव

युवक परिषद् का वृहद् अधिवेशन 25 सितम्बर को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की स्थापना का यह 25 वाँ वर्ष गतिमान है। इस रजत जयन्ती वर्ष में 25 एवं 26 सितम्बर 2016 को वृहद् अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है। प्रथम दिवस का कार्यक्रम जोधपुर में एवं द्वितीय दिवस का कार्यक्रम निमाज में आयोजित होगा। सभी से निवेदन है कि आप अपने क्षेत्र में आने वाले युवा साथियों का नाम एवं उनके फोटो युक्त परिचय-पत्र की प्रतिलिपि संघ कार्यालय में आगामी एक माह के भीतर भिजवाने का श्रम करावें, ताकि उनके प्रवास को सुविधायुक्त बनाया जा सके। यात्रा कार्यक्रम की पूर्व सूचना मिलने पर आवास-निवास एवं आवागमन की व्यबस्था में सुविधा रहेगी। विस्तृत कार्यक्रम प्रेषित किया जा रहा है। सम्पर्क सूत्रः- मनीष लोढ़ा, महासचिव-094144-17817, कार्यालय-0291-2641445, E-mail-yuvaratna17@gmail.com

तीन शहरों में युवा सशक्तीकरण एवं व्यसनों से मुक्ति कार्यक्रम आयोजित

बैंगलोर- श्री जैन रत्न युवक परिषद् बैंगलोर द्वारा सीतादेवी रतनचन्द नाहर आदर्श कॉलेज के ऑडिटोरियम में युवा सशक्तीकरण एवं व्यसनमुक्त जीवन विषयक कार्यशाला का 10 अप्रेल 2016 को उत्साहपूर्वक आयोजन किया गया। प्रमुख वक्ता श्री राजेन्द्र जी लुंकड़-ईरोड़, कार्याध्यक्ष अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् ने पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के संदेश 'व्यसनमुक्त हो हर इंसान' अभियान की जानकारी देते हुए

व्यसन मुक्त होने की प्रभावी प्रेरणा की। श्री लुंकड़ ने उपस्थित युवक-युवतियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि युवावर्ग आत्मचिन्तन करे कि मेरे अपने जीवन का लक्ष्य क्या है? मेरे जीवन के सिद्धान्त क्या है? हमारा जीवन निर्व्यसनी होना चाहिए। हम माह में चार सामायिक अवश्य करें एवं यह संकल्प करना है कि जीवन भर तम्बाखू युक्त वस्तुओं का सेवन नहीं करेंगे। जीवन में कभी नशीली वस्तुओं का प्रयोग नहीं करेंगे। क्लब आदि में जाकर जुआ नहीं खेलेंगे। होटल आदि से बचने का प्रयास करेंगे। टी.वी. व पिक्चर देखने में संयम एवं मर्यादा रखेंगे। गन्दा साहित्य एवं गन्दी फिल्में कभी नहीं देखेंगे। जीवन को ऊँचाइयाँ प्रदान करेंगे। इस अवसर पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अतिरिक्त महामंत्री श्री कैलाशमल जी भण्डारी-जोधपुर, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ बैंगलोर के संघप्रमुख श्री चेतनप्रकाश जी डुंगरवाल, स्थानीय रत्नसंघ के अध्यक्ष श्री पदमराजजी मेहता, कार्याध्यक्ष श्री धनरूपचन्दजी मेहता, मंत्री श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल, पूर्व अध्यक्ष श्री यशवन्तराजजी सांखला, श्राविका मण्डल मंत्री श्रीमती प्रभाजी गुलेछा, युवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्रकुमारजी दुधेड़िया, क्षेत्रीय प्रधान श्री संतोष जी डोसी सहित युवक परिषद् के पदाधिकारीगण, सदस्यगण गणवेश में उपस्थित थे। लगभग 350 श्रोताओं की उपस्थिति में यह कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। अतिथियों का स्वागत श्री प्रमोदजी सिंघवी, अध्यक्ष श्री जैन रत्न युवक परिषद्-बैंगलोर ने एवं कार्यक्रम का संचालन श्री वेदान्तजी सांखला ने किया।

बीजापुर- 4 जून 2016 को बीजापुर में युवक संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी दुधेड़िया के सान्निध्य में युवक परिषद् बीजापुर शाखा ने जैन सोशल ग्रुप एवं पी.टी. एलेक्जेंडर फाउण्डेशन के साथ मिलकर 'युवा सशक्तीकरण सुरक्षित पर्यावरण' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यशाला में वृक्षों की अंधाधुंध कटाई पर चिंता जताई गई एवं जल का विवेक से प्रयोग करने पर बल दिया गया। संघ के श्री नितिन जी रूणवाल, श्री महावीरजी पारख, श्री गणपतजी रूणवाल, श्री सुभाष जी रूणवाल, श्री रमणिकजी रूणवाल एवं कई गणमान्य व्यक्तियों सहित इस कार्यक्रम में लगभग 300 की उपस्थिति रही।

मैसूर- 20 जून 2016 को युवा सशक्तीकरण एवं व्यसनों से परे कार्यक्रम मैसूर में आयोजित किया गया। यहाँ शताधिक श्रावक-श्राविकाओं एवं युवाओं ने भाग लिया। गुरु हीरा के निर्व्यसनी सामायिक के संदेश को जीवन में आत्मसात् करते हुए लगभग 70 से अधिक श्रोताओं ने संकल्प-पत्र भरकर श्रद्धा की अभिव्यक्ति की।

सामूहिक सामायिक का आयोजन- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् सामूहिक सामायिक के आयोजन में भी सक्रिय है। जोधपुर, बालोतरा, पीपाड़, चेन्नई,

बीजापुर, बैंगलोर आदि स्थानों पर समय-समय पर सामूहिक सामायिक आयोजन किया जा रहा है। महावीर जयन्ती के अवसर पर जोधपुर के महावीर कॉम्पलेक्स में प्रतिवर्ष की भाँति सामूहिक सामायिक की गई, जिसमें 1200 से भी अधिक संख्या में स्वधर्मी बन्धु उपस्थित थे।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा युवा सशक्तीकरण-व्यसनों से परे (Empower the Youth for a Happy & Blissful Life) कार्यक्रम भारत के कुछ शहरों में आयोजित किया गया है। इस कार्यक्रम को अधिक स्थानों पर आयोजित करने एवं अपनी बात को प्रखर रूप से एक रूप में रखने के लिए एक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन रविवार, 07 अगस्त 2016 को चेन्नई में किया जा रहा है। इस कार्यशाला में भाग लेकर प्रशिक्षित स्वधर्मी बंधु अपने-अपने क्षेत्र में ऐसे कार्यक्रम को आयोजित कर गुरु हीरा के संदेश को जन-जन में पहुँचाने में अपना अहम् योगदान कर सकते हैं। इस कार्यशाला में भाग लेने के इच्छुक भाई-बहन राजेन्द्रजी लुँकड़, कार्याध्यक्ष-युवक परिषद्-093600-25001 एवं राजेन्द्रजी दुधेडिया, बैंगलोर-098866-71221 से सम्पर्क कर अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। *-मनीष लोढ़ा, महासचिव-94144-17817*

शिरपुर में Life Designing शिविर आयोजित

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. एवं श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.आदि ठाणा 12 की सन्निधि में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अन्तर्गत स्वर्णनगरी शिरपुर में 12 वर्ष से अधिक उम्र की अविवाहित युवतियों का 5 से 7 जून 2016 तक आवासीय Life Designing शिविर पहली बार आयोजित हुआ। इस शिविर में "मंजिल मिलती नहीं, माइण्ड डिस्टर्ब रहता है, मन अशान्त एवं निराश रहता है, विचार मम्मी-पापा नहीं समझ पाते, आत्मविश्वास गायब हो गया है, क्रोध और आवेश को मैनेज नहीं कर पाते, लड़कियों को ही रोका जाता है लड़कों को नहीं" इन सबका समाधान महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. ने तीन दिवसीय शिविर में किया। इस शिविर में बोरिवली-मुम्बई निवासी निपुणजी (एम.बी.ए.) एवं नमन जी डागा (सी.ए) ने अनेक उदाहरण देकर अच्छा मार्गदर्शन किया। इस शिविर में शिरपुर एवं अनेक ग्राम नगरों की लगभग 120 युवतियों ने भाग लेकर आनन्द का अनुभव किया। शिविर में 12 ग्रुप बनाये गये तथा उनकी एक्टिविटी प्रभावी रही। शिविर को सफल बनाने में चन्दन कन्या मण्डल तथा युवारत्न साथियों एवं श्री शिरपुर के श्रावक-श्राविकाओं का सराहनीय सहयोग रहा। *-मुकेश हंसराजजी बुरड़, शिरपुर*

जयपुर एवं जोधपुर में ग्रीष्मकालीन धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

जोधपुर-श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में 22 मई से 05 जून तक 22वां ग्रीष्मकालीन धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर अजित कॉलोनी स्थित महावीर पब्लिक स्कूल में प्रातः 7.15 से 11.30 बजे तक आयोजित किया गया। शिविर में लगभग 350 बालक-बालिकाओं ने भाग लेकर सूत्रों एवं तत्त्वों का ज्ञान अर्जित करने के साथ संस्कार प्राप्त किए। शिविर की यह विशेषता रही की 20 प्रतिशत शिविरार्थी अजैन थे और वरीयता सूची में भी उनका 25 प्रतिशत स्थान रहा। इस प्रमुख केन्द्रीय शिविर के अतिरिक्त जोधपुर के 10 केन्द्रों पर लगभग 300 बालक-बालिकाओं ने ज्ञानार्जन किया। शिविर में मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रजी म.सा., श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. ने उपयोगी प्रेरणा की। शिविर में व्यक्तित्व विकास की शिक्षा के लिए प्रसिद्ध अभिप्रेरकों, श्रावकों एवं प्रखर वक्ताओं को आमंत्रित किया गया। शिविर के संयोजक श्री नवरतनजी डागा, सह-संयोजक श्री राकेश जी मेहता, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अमरचन्दजी चौधरी ने अपनी टीम के साथ शिविर को सफल बनाया। शिविर का समापन शहर विधायक श्री कैलाशमलजी भंसाली, मुख्य प्रायोजक श्री मोहनलालजी जीरावला, डॉ. चंचलमल जी चोरडिया की सन्निधि तथा युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेछा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। श्रेष्ठ छात्र-छात्राओं को शिविर में पुरस्कृत किया गया। जल संरक्षण एवं प्रबन्धन पर पोस्टर प्रतियोगिता प्रेरक रही। धार्मिक नाटकों के माध्यम से अच्छा संदेश गया। परिषद् के सचिव श्री गजेन्द्र जी चौपड़ा, संघ कार्यालयप्रभारी श्री कमलेशजी मेहता, सुश्री नेहल जी लोढ़ा का नाटिकाओं के मंचन एवं शिविर संचालन में पूरा सहयोग रहा।

-नवरतन डागा, शिविर संयोजक

जयपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के द्वारा 15 मई से 05 जून 2016 तक नैतिक एवं धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन जयपुर सेण्ट्रल शाखा के तीन केन्द्रों सुबोध स्कूल-सांगानेरी गेट, महावीर साधना केन्द्र-जवाहरनगर, वर्द्धमान भवन-लाल कोठी पर किया गया। 200 बालक-बालिकाओं के इस शिविर में भजन प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आदि के आयोजन के साथ विशेष दिवसों पर छोटे-छोटे प्रत्याख्यान कराये गए। 25 अध्यापकों ने अपनी सेवाएँ दी। 04 जून को शिशुओं की मौखिक परीक्षा तथा 05 जून को संयुक्त रूप से सभी बच्चों की मौखिक एवं लिखित परीक्षा सुबोध स्कूल में ली गई। प्रतिदिन एक कहानी के माध्यम से जीवों पर अनुकम्पा, दान, बड़ों के प्रति आदर-सत्कार

एवं नैतिक मूल्यों के बारे में समझाया गया। अन्तर्जातीय विवाह पर एक लघु नाटिका तैयार की गई। श्रेष्ठ बालक-बालिकाओं को पुरस्कृत किया गया। शिविर संयोजक श्री आकाश जी लोढ़ा एवं आशीषजी बोथरा का प्रभावशाली प्रबन्धन रहा। तीनो केन्द्रों के क्षेत्रीय संयोजक एवं उनकी टीम का सहयोग उल्लेखनीय रहा। *-रितेश बोथरा, शाखा सचिव*

समग्र जैन चातुर्मास सूची 2016 का प्रकाशन

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी समग्र जैन सम्प्रदायों (श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी एवं दिगम्बर) के चातुर्मास की सूची का प्रकाशन किया जा रहा है। आपके गाँव/शहर/कस्बे/उपनगरों में जिन पूज्य जैन गच्छ नायक आचार्यों, साधु-साध्वियों के 2016 वर्ष के चातुर्मास स्वीकृत हुए हैं, उन सभी संत-सतियों के चातुर्मास की जानकारियाँ शीघ्र भिजवाने की कृपा करावें, ताकि चातुर्मास प्रारम्भ होने तक इनका प्रकाशन हो सके। चातुर्मास की जानकारी ई-मेल से भी प्रेषित कर सकते हैं। **सम्पर्क सूत्र-** बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल' संपादक, 105, तिरुपती अपार्टमेंन्ट्स, आकुर्ली क्रॉस रोड़ नं.1, रेलवे स्टेशन के सामने, कांदिवली(पूर्व), मुम्बई-400101(महा.), टेलीफैक्स-022-28871278, मोबाइल-093245-21278, E-mail:ujjwalprakashan@gmail. com

आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार

समताविभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की पावन स्मृति में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा एच.एस. रांका फाउण्डेशन, मुम्बई के सौजन्य से 'आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार' प्रत्येक दो वर्षों में प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत संघ की ओर से स्मृतिचिह्न, सम्मान-पत्र एवं 2 लाख रुपये की राशि का चैक प्रदान किया जाता है।

यह पुरस्कार शिक्षा, समाज-सेवा, अध्यात्म, स्वास्थ्य, आर्थिक-उत्थान, कृषि, पशुपालन, वन संरक्षण, पर्यावरण, व्यसनमुक्ति, जल संरक्षण आदि जनसेवा क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित करने वाले व्यक्ति को दिया जाता है। इस पुरस्कार हेतु किसी भी वर्ग, वर्ण या समाज का व्यक्ति व संस्था जो भारत में जनसेवा में कार्यरत हो, पात्र है।

आवेदन-पत्र में नाम, पता, मोबाइल नं., ईमेल, कार्यक्षेत्र, सेवाक्षेत्र आदि का पूर्ण उल्लेख आवश्यक है। जिस व्यक्ति अथवा संस्था को नामांकित किया जा रहा है, उसके द्वारा प्रदत्त सेवाओं का रिकार्ड अर्थात् समाचार पत्र की कटिंग, फोटोग्राफ, प्रमाण-पत्र, सम्मान-पत्र आदि की फोटोग्राफ अवश्य भिजवायें। आवेदन-पत्र 15 अगस्त 2016 के पूर्व निम्नांकित पते पर प्रेषणीय हैं- श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री

नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोनः 0151-2270261, 2270359, E-mail: absjsbkn@yahoo.co.in

-करणसिंह सेठिया-चित्तौड़गढ़, चेयरमेन, आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार

सेठ श्री चम्पालाल साण्ड स्मृति उच्च प्रशासनिक पुरस्कार

यह पुरस्कार भारत सरकार की प्रशासनिक सेवाओं में कार्यरत जैन धर्मावलम्बी एवं विशेष ख्याति अर्जित करने वाले शीर्षस्थ पदाधिकारी को प्रदान किया जायेगा। चयनित पुरस्कार विजेता को संघ की ओर से स्मृति चिह्न, सम्मान-पत्र एवं एक लाख रुपये की राशि प्रदान की जायेगी। जिस व्यक्ति को नामांकित किया जा रहा है, उसका पूरा नाम, पता, प्रशासनिक पद, सम्पर्क विवरण, सेवा क्षेत्र, निष्पादन रिकार्ड आदि का विस्तृत उल्लेख अपेक्षित है। यह पुरस्कार 'अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस' के रूप में परिकल्पित हुआ है। आवेदन-पत्र 15 अगस्त, 2016 के पूर्व निम्नांकित पते पर पहुँचाने का कष्ट करें। **सम्पर्क सूत्रः-** श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोनः 0151-2270261, 2270359, E-mail: absjsbkn@yahoo.co.in *-उत्तमचन्द नाहटा, चेयरमैन-सेठ श्री चम्पालाल साण्ड स्मृति उच्च प्रशासनिक पुरस्कार समिति*

भगवान महावीर फाउण्डेशन द्वारा पुरस्कार घोषित

महावीर जयन्ती के पूर्व 16 अप्रेल 2016 को भगवान महावीर फाउण्डेशन द्वारा वृहद् स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें **महावीर निबन्ध पुरस्कार** विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। निबन्ध प्रतियोगिता तमिल एवं अंग्रेजी भाषा में आयोजित हुई थी। श्रेष्ठ विजेता एस. दिव्या-वेलचेरी को 50000 की राशि से पुरस्कृत किया गया है। इस प्रतियोगिता में कुल 48 निबन्ध पुरस्कृत हुए हैं।

इस अवसर पर फाउण्डेशन द्वारा 19 वें **महावीर पुरस्कार** की भी घोषणा की गई। प्रत्येक विजेता को 10 लाख की राशि, प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किया जाता है। सम्पूर्ण भारत वर्ष में 158 प्रस्तावों में से चयन समिति द्वारा विजेताओं का चयन किया गया। समिति के अध्यक्ष भारत के पूर्व न्यायाधीश श्री एम.एन. वेंकटचेलैया हैं। पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं के क्षेत्र एवं नाम इस प्रकार हैं- **1. अहिंसा व शाकाहार के क्षेत्र में-** कम्पेशन अनलिमिटेड प्लस एक्शन, बेंगलुरु (कर्नाटक), **2. शिक्षा के क्षेत्र में-** डॉ. सपम नाबाकिशोर सिंह, पो. सिलचर, जिला-कचर (असम), **3. चिकित्सा के क्षेत्र में-** डॉ. आर.वी. रमणी, शंकर आई केयर इंस्टिट्यूशन, कोयम्बतुर (तमिलनाडु), **4. सामाजिक**

उत्थान व विकास के क्षेत्र में– श्रीमती शमशाद बेगम, गुंडरदेही, ग्रामीणीक, दुर्ग (छत्तीसगढ़)। *-क. नन्दकिशोर*

जैनविद्या में उच्च शिक्षा का स्वर्णिम अवसर

मद्रास विश्वविद्यालय में पिछले 32 वर्षों से जैनविद्या विभाग संचालित है। यह विभाग रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनोलोजी के द्वारा स्थापित हुआ और वर्तमान में विश्वविद्यालय में पूर्ण स्वतंत्र विभाग है। विभाग में अंग्रेजी और तमिल माध्यम से एम.ए., एम.फिल. और पी-एच्.डी. होती है। किसी भी विषय में किसी भी विश्वविद्यालय से कोई भी स्नातक (ग्रेजुएट) एम.ए. में प्रवेश ले सकता है। उम्र की कोई सीमा नहीं है। एम.फिल. और पी-एच्.डी. के लिए जैनविद्या, प्राकृत या दर्शन में अधिस्नातक (पोस्ट ग्रेजुएट) होना आवश्यक है। स्कालरशिप का भी प्रावधान है। विश्वविद्यालय की वेबसाइट **www.unom.ac.in** पर आवेदन कर सकते हैं।

पी-एच्.डी. के लिए कैलेण्डर वर्ष की हर तिमाही के शुरू में प्रवेश व्यवस्था है। वर्तमान में साध्वी और मुमुक्षु भी शोधकार्य में संलग्न है। विशेष जानकारी के लिए विभागाध्यक्ष डॉ. प्रियदर्शना जैन (08124127774 अथवा 09840368851) से सम्पर्क किया जा सकता है। *-डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़िया*

श्वेताम्बर जैन समाज के छात्रों को छात्रवृत्ति

श्वेताम्बर जैन समाज के जरूरतमन्द परिवारों के मेधावी, होनहार, प्रतिभावान छात्र-छात्राएँ, जिन्होंने 8 वीं एवं इससे उच्च कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है तथा जिनके परिवार की मासिक आय 15000/- रुपये से अधिक नहीं है, छात्रवृत्ति हेतु आवेदन कर सकते हैं:-

1. छात्र-छात्रा का एक फोटो।
2. इस वर्ष की प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कक्षा की मार्कशीट की एक प्रतिलिपि साथ भेजें। इन्टरनेट पर आया गुण-पत्र (अंकतालिका, मार्कशीट) भी स्वीकार है।
3. दो लिफाफों पर अपना पूरा नाम, पूरा पता, तहसील, जिला, राज्य एवं पिनकोड, मोबाइल/फोन नं. लिखें, आवेदन-पत्र में भी लिखें, लिफाफे पर लिखना काफी (पर्याप्त) नहीं है।
4. दोनों लिफाफों में दस-दस रुपये रोकड़ी (कैश) रखें।
5. आवेदन-पत्र में आपके परिवार की आय की जानकारी (तफसील) विस्तार से खुलासा करें। आप व्यापरी हैं तो किस चीज का व्यापार करते हैं। अगर आप नौकरी

करते हैं तो महीने का वेतन (पगार) कितना है?

6. आप अपना मोबाइल, फोन नं. एवं पिनकोड सुन्दर अंकों में अंग्रेजी में लिखें।

नोटः- यह योजना आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिये है, कृपया सम्पन्न लोग आवेदन नहीं करें।

सम्पर्क सूत्र- श्री लाभचन्द जी कोठारी, सन्तोक तारा जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, डी-120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापूनगर, जयपुर-302015-06, मोबाइल नं. 93140-03637

विधवाओं एवं जरूरतमंदों को आर्थिक सहयोग

1. श्वेताम्बर ओसवाल जैन समाज की आर्थिक रूप से कमजोर, निःसन्तान, बेसहारा, वृद्ध, अशक्त, विधवा महिलाएँ एवं पुरुष जो स्वयं नहीं कमा सकते और परिवार में कोई कमाने वाला नहीं है, किराणे के लिये आर्थिक सहयोग प्राप्त करने हेतु आवेदन कर सकते हैं।
2. आर्थिक रूप से कमजोर, परित्यक्ता (पति द्वारा छोड़ी), तलाकशुदा (घटविस्फोट) एवं युवा विधवा बहनें जिनके 10 साल से छोटे बच्चे हैं, वे भी आवेदन कर सकती हैं।
3. परिवार को पालने पुरुषार्थी बहनें जो घर से बाहर कामकाज, मेहनत, मजदूरी करती हैं, वे भी आवेदन कर सकती हैं।
4. आवेदन के लिये अर्जीपत्र भेजें, जिसमें आपकी आर्थिक और पारिवारिक स्थिति की जानकारी हो। अभी आपके रोटी, कपड़ा, मकान की व्यवस्था कैसे हो रही है?

आवेदन इस प्रकार करें:-

1. आपका एक फोटो।
2. दो लिफाफों पर आपका नाम, मकान मालिक का नाम, पूरा पता, तहसील, जिला, राज्य, आपकी जगह का पोस्ट का पिनकोड, मोबाइल नं./फोन नं. लिखें, आवेदन-पत्र में भी पूरा पता, मोबाइल नं. अवश्य लिखें। सिर्फ लिफाफों पर लिखना पर्याप्त नहीं है।
3. दोनों लिफाफों में 10-10 रुपया रोकड़ी (कैश) रखें।
4. वर्तमान में सहयोग राशि किराणे के लिये ही है। मेडिकल, चिकित्सा, विकलांग भत्ता, लोन, उधार आदि के आवेदन स्वीकार्य नहीं है।
5. किराणे के लिये सहयोग राशि का चेक किराणा स्टोर के नाम से बनेगा, अर्जीदार के नाम से नहीं बनेगा।

सहयोग हेतु आवेदन करें- श्री लाभचन्द जी कोठारी 'एम.ए.', गोठी चेरिटेबल ट्रस्ट, डी-120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापूनगर, जयपुर-302015-06, मो. नं. 93140-03536

संक्षिप्त-समाचार

जयपुर- आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री सोहन कंवरजी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री सिद्धिप्रभाजी की रीढ़ की हड्डी का ऑपरेशन 04 जून, 2016 को एपेक्स अस्पताल, मालवीय नगर, जयपुर में सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया। 07 जून को उन्हें अस्पताल से मौजी कॉलोनी स्थित डागा जी के मकान पर श्राविकाओं द्वारा स्ट्रेचर पर लाया गया। *-सुरेशचन्द कोठारी*

मुम्बई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मुम्बई की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया है, जिसके अनुसार श्री महेन्द्रजी कुम्भट को अध्यक्ष, श्री विरेन्द्रकुमारजी डागा (सोनूजी) को कार्याध्यक्ष, श्री नरेन्द्रकुमारजी डागा को मंत्री, श्री सुरेशजी जैन को सहमंत्री एवं श्री पुखराजजी महता को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया है। श्री जैन रत्न युवक परिषद् में श्री सुरेन्द्रजी चौधरी को अध्यक्ष एवं श्री विक्कीजी मेहता को सचिव तथा श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल में श्रीमती हेमलताजी सांखला को अध्यक्ष एवं श्रीमती सुनन्दाजी जैन को मंत्री मनोनीत किया गया है। *-नरेन्द्रकुमार डागा, मंत्री*

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में 25-26 जून को स्वाध्याय भवन में स्वाध्यायी संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें नवरतनमल जी भंसाली-बैंगलोर, श्री विनोदजी जैन, श्री विरेन्द्र जी कांकरिया, डॉ. दिलीप जी धींग, श्रीमती शकुन्तलाजी संकलेचा ने सम्बोधित किया। स्वाध्यायी समिति के संयोजक श्री प्रकाशचन्दजी मुथा, श्री प्रकाशचन्दजी ओस्तवाल, श्री सुमेरचन्दजी बाघमार, श्री दुलीचन्द जी नाहर, श्री सुधीरजी सुराणा का संगोष्ठी को सफल बनाने में विशेष सहयोग रहा।

-आर.नरेन्द्र कांकरिया

सूरत- अक्षयतृतीया 09 मई को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सूरत द्वारा श्री जैन रत्न धार्मिक पाठशाला का शुभारम्भ किया गया है। पाठशाला का समय सोमवार से शनिवार तक प्रातः एवं सायं तथा रविवार को प्रातः 09 बजे से 11 बजे तक रखा गया है। 65 विद्यार्थियों का पंजीकरण हो चुका है।

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में स्वाध्याय-भवन साहुकारपेठ में 08 से 22 मई 2016 तक ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 180 शिविरार्थियों ने ज्ञानार्जन किया। संस्कार शिविर में Wings To Fly के रूप में विभिन्न शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं ने अपनी सेवाएँ दी। शिविरार्थियों ने सुदर्शन सेठ, अर्जुन माली, एवन्ता मुनिवर की जीवनी पर सुन्दर नाटिका प्रस्तुत की। *-आर.नरेन्द्र कांकरिया*

जयपुर- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान एवं शिविर संचालक सुश्री नेहाजी चोरड़िया के नेतृत्व में वीतराग ध्यान-साधना शिविर पूर्व साधक महिलाओं हेतु कोठारी गढ़, जयपुर में 30 जून से 07 जुलाई 2016 तक कार्यशाला के रूप में आयोजित हो रहा है। *-जगदीश जैन*

जलगाँव- युवारत्न श्री विक्रमजी रमेशजी मुणोत को श्री जैन रत्न युवक परिषद् की नई कार्यकारिणी का गठन करते हुए अध्यक्ष बनाया गया है। श्री आकाशजी पारसजी कांकरिया को सचिव मनोनीत किया गया है।

भोपालगढ़- श्री जैन रत्न विद्यालय के छात्रावास में प्रवेश हेतु आवेदन आमंत्रित हैं। जरूरतमंद जैन छात्रों को यथायोग्य छात्रवृत्ति प्रदान की जायेगी। **सम्पर्क सूत्रः**- श्री अजीत मेहता, कोर्डिनेटर, श्री जैन रत्न विद्यालय संस्थान, भोपालगढ़-342603, जिला-जोधपुर (राज.), मो. 9414564545 एवं 02920-240777

विल्लुपुरम् (तमिलनाडु)- श्री एस.एस. जैन संघ-विल्लुपुरम् द्वारा 01 से 07 मई 2016 तक महावीर भवन में धार्मिक संस्कार शिविर आयोजित किया गया। *-एन. पदमचन्द दुगड़*

बैंगलोर- श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ के द्वारा पंचदिवसीय धार्मिक शिविर का आयोजन किया गया, जिसका समापन 22 मई 2016 को श्री छगनमलजी लुणावत की अध्यक्षता एवं श्री रामपुरम् संघ के अध्यक्ष श्री देवराजजी कोठारी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। शिविर में 357 शिविरार्थियों ने भाग लिया। *-शांतिलाल बोहरा, संयोजक*

दिल्ली- श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के जैन दर्शन विभाग द्वारा 04 अप्रेल 2016 को ऋषभदेव संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता डॉ. जयकुमार जैन-मुजफ्फरनगर ने 'तीर्थंकर ऋषभदेव का अवदान' विषय पर अनेक प्रमाणों के साथ सारगर्भित व्याख्यान देते हुए उनकी सार्वभौमिकता पर प्रकाश डाला। *-डॉ. अनेकान्तकुमार जैन*

वैशाली- प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान वैशाली ने 16 फरवरी 2016 को आचार्य कुंदकुंद व्याख्यानमाला एवं डॉ. हीरालाल जैन स्मृति व्याख्यानमाला का आयोजन किया। पण्डित अरुणकुमार जैन-प्राचार्य श्रमण संस्कृति जयपुर ने कुंदकुंद व्याख्यानमाला के अन्तर्गत आचार्य कुंदकुंद के दार्शनिक योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ. हीरालाल जैन स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत डॉ. जिनेन्द्र जैन-उदयपुर ने प्राचीन पाण्डुलिपि के संरक्षण, सम्पादन और अनुवाद आदि कार्यों में समकालीन विद्वानों के योगदान की चर्चा की।

17 फरवरी 2016 को डॉ. राजेन्द्रप्रसाद स्मृति व्याख्यानमाला में डॉ. जयकुमार उपाध्ये-दिल्ली ने भारतीय वास्तु नियमों की विस्तार से चर्चा की। प्रो. कमलेशकुमार जैन वाराणसी ने डॉ. गुलाबचन्द स्मारक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत जैन अध्यात्म और योग विद्या के महत्त्व पर प्रकाश डाला। *-ऋषभचन्द्र जैन, निदेशक*

फुलियाकलाँ- श्री आनन्द यश जैन छात्रालय में प्रवेश हेतु आवेदन-पत्र आमन्त्रित है। यहाँ 12 वीं कक्षा तक के विधार्थी अध्ययन कर सकते हैं। **सम्पर्क सूत्रः**-सुरेन्द्रकुमार चौधरी-मंत्री-9982341255, कार्यालय-01484-225050

हैदराबाद- श्री जैन सेवा संघ-हैदराबाद के द्वारा भगवान महावीर जन्म-कल्याणक के अवसर पर श्री राजेन्द्रकुमारजी कीमती को जीवदया, जनकल्याण, चिकित्सा, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक क्षेत्रों में योगदान हेतु जैन रत्न की उपाधि से गृहमंत्री श्री नायनी नरसिम्हा रेड्डी के हाथों अलंकृत किया गया। *-अशोक संकलेचा*

लासलगाँव- श्री महावीर जैन विद्यालय के वसतीगृह (हॉस्टल) में प्रवेश चालू है। **सम्पर्क सूत्रः**- श्री महावीर जैन विद्यालय, महावीर नगर, कॉलेज रोड़, लासलगाँव-422306, ता. निफाड़, जिला-नाशिक (महा.), फोनः 02550-266358

मुम्बई- जैन इण्टरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन (जीतो) के अन्तर्गत गुड गवर्नेस कमेटी के द्वारा जैन समुदाय के विभिन्न राजनैतिक क्षेत्रों में कार्यरत कार्यकर्ताओं का विवरण तैयार किया जा रहा है। सम्बद्ध नाम polemp@jito.org पर भिजवाये जा सकते हैं।

-शांतिलाल कवाड़, कॉर्डिनेटर, 022-42877777

जोधपुर- श्री कुशल जैन छात्रावास, 30 धर्मनारायणजी का हत्था, प्रथम पोलो, पावटा, जोधपुर में विगत 25 वर्षों से साधारण शुल्क लेकर आवास, नाश्ता, भोजन की सुन्दर व्यवस्था चल रही है। जोधपुर में अध्ययनरत छात्र छात्रावास सुविधा हेतु सम्पर्क करें-भागचन्दजी कांकरिया-98291-27379, सुगनचन्दजी छाजेड़-0291-2618434

बधाई

जलगांव- शासनसेवा समिति के संयोजक, सदाचार एवं शाकाहार के प्रबल प्रचारक,

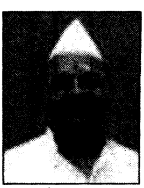

अहिंसा तीर्थ, कुसुम्बा के संस्थापक-संचालक के रूप में गोसेवा हेतु तत्पर, आचार्य हस्ती अहिंसा अवार्ड प्रदाता श्रावकरत्न श्री रतनलाल जी बाफना को अक्षय तृतीया के अवसर पर 09 मई 2016 को जोधपुर के संबोधिधाम में 'संबोधि-सेवा रत्न' सम्मान से सम्मानित किया गया है। श्री बाफना साहब ने संबोधि धाम को पाँच लाख रुपये की राशि प्रदान की।

जोधपुर- न्यायाधिपति डॉ. विनीत कोठारी ने कर्नाटक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में 18 अप्रेल 2016 को शपथ ग्रहण की है। जस्टिस कोठारी 11 वर्ष राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रहे। उन्हें कर्नाटक के मुख्य न्यायाधीश शुभ्रो कमल मुखर्जी ने शपथ दिलाई।

जयपुर- भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति, जयपुर के संस्थापक एवं मुख्य

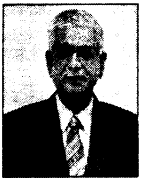

संरक्षक, पद्मभूषण डॉ. डी.आर. मेहता को संयुक्त राज्य अमेरिका के सांता बारबरा में हाउ इंटरनेशनल द्वारा आयोजित एक समारोह में लाइफटाइम ह्यूमेनिटी अवार्ड से सम्मानित किया गया। समारोह में विकलांग सहायता समिति जयपुर से लाभान्वित मोजाम्बिक महिला फ्लोरेन्सिया के जीवन पर आधारित डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'फ्लोरेन्सिया एन एक्सीडेंट्स स्टोरी' का भी प्रदर्शन किया गया। भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति, जयपुर द्वारा भारत सहित विश्व के 27 अन्य देशों में अब तक 15 लाख से अधिक दिव्यांगों को पुनर्वास सहायता कार्यक्रमान्तर्गत लाभान्वित किया जा चुका है।

चेन्नई- सुराणा एण्ड सुराणा इण्टरनेशनल एटोर्नी के मैनेजिंग पार्टनर एवं सी.ई.ओ.

युवारत्न डॉ. विनोद जी सुराणा को अमेरिका से प्रकाशित विधि पत्रिका Lexis Nexis ने "100 legal luminaries of India" में समाविष्ट कर सम्मानित किया है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा के सुपुत्र डॉ. विनोदजी सुराणा प्रतिभासम्पन्न वरिष्ठ विशेषज्ञ लॉयर हैं।

जलगांव- करुणा अंतरराष्ट्रीय के संस्थापक अध्यक्ष और वर्तमान चेयरमेन श्री दुलीचन्द

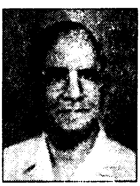

जैन (साहित्यरत्न), चेन्नई 10 अप्रेल 2016 को आचार्य हस्ती अहिंसा अवार्ड से नवाजे गये। रतनलाल सी. बाफना फाउंडेशन की ओर से जलगाँव में आयोजित भव्य समारोह में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा, उद्योगपति श्री मोफतराजजी मुणोत, राज्यसभा सांसद श्री ईश्वरलाल जी जैन, श्री महावीर सहकारी बैंक के चेयरमेन श्री दलुभाऊ जैन सहित लगभग सात सौ व्यक्तियों की मौजूदगी में श्री दुलीचन्दजी को एक लाख रुपये की सम्मान-राशि, स्मृति-चिह्न, प्रशस्ति-पत्र, शॉल और मुक्ताहार से सम्मानित किया गया। दुलीचन्दजी ने सम्मान राशि को जरूरतमंद विद्यार्थियों के शैक्षणिक उत्थान के लिए समर्पित करने की घोषणा की। शाकाहार के प्रबल प्रचारक श्री दुलीचन्दजी ने करुणा अंतरराष्ट्रीय के माध्यम से देशभर में शाकाहार, करुणा और मानवीय मूल्यों का

उत्साहवर्द्धक और प्रेरणास्पद वातावरण बनाया है। देश की लगभग 2250 शिक्षण संस्थाओं में करुणा क्लबों के जरिये अब तक लगभग 16 लाख विद्यार्थियों और 55 हजार अध्यापकों को जीवदया और शाकाहार का ज्ञान कराया गया है, जो बड़ी उपलब्धि है।

-सुरेश कांकरिया, महासचिव

जोधपुर- राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर के द्वारा 24 मई 2016 को राजस्थान

सरकार के शिक्षा मंत्री श्री कालीचरण सर्राफ के मुख्य आतिथ्य में अकादमी संकुल, जयपुर में आयोजित सम्मान एवं पुरस्कार समारोह में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर एवं जिनवाणी मासिक पत्रिका के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन को पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी दर्शन-सम्मान 2014-2015 से सम्मानित किया गया है। डॉ. जैन को यह सम्मान उनके दार्शनिक क्षेत्र में लेखन के लिए प्रदान किया गया है। सम्मान स्वरूप उन्हें उत्तरीय एवं श्रीफल के साथ ग्यारह हजार का चैक दिया गया है।

दिल्ली- अपर महा सॉलिसिटर एवं चंडीगढ़ के पूर्व सांसद और भाजपा के सीनियर नेता सत्यपाल जैन को 11 जून 2016 को भारत के 21वें विधि आयोग का अंशकालिक (पार्ट टाईम) सदस्य नियुक्त किया गया है।

उदयपुर- मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग की शोध छात्रा एवं जैनाचार्य श्री देवेन्द्र महिला मण्डल की अध्यक्षा सुधा जी भण्डारी को मानविकी संकाय में पी-एच्.डी. की उपाधि प्राप्त हुई है। डॉ. सुधा जी को यह उपाधि जैन आगमिक कथाओं में अंकित जीवन मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन विषय पर शोध करने पर प्रदान की गई। यह शोध कार्य प्रो. एच.सी. जैन के निर्देशन में किया गया।

उदयपुर- विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (मध्यप्रदेश) द्वारा श्रीमती अल्पना बाकलीवाल को 'जैन इतिहासपरक उपन्यासों की परम्परा में आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि का प्रदेय' विषय पर अपना शोध प्रस्तुत करने पर विद्यावाचस्पति (पी-एच्.डी.) की उपाधि प्रदान की गई है। उन्होंने हिन्दी विभाग अध्यक्षा डॉ. प्रज्ञा थापक के निर्देशन एवं हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा के सह निर्देशन में अपना शोध कार्य सम्पन्न किया है।

यश डागा

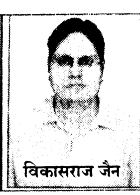
विकासराज जैन

खुशी भण्डारी

सागर बाघमार

रोशनी लोढ़ा

शीतलकुमार संचेती

पुलकित जैन

आयुष जैन

सम्यक भण्डारी

रिषभ बोहरा

रूहान मेहता

जयपुर- संघ के सेवाभावी श्रावक श्री विमलचन्दजी डागा के सुपौत्र **श्री यश डागा** सुपुत्र श्री जितेन्द्र जी डागा ने सी.बी.एस.ई. बोर्ड (वाणिज्य संकाय) में 95.5 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं। यश ने लघु दण्डक, जीवधड़ा इत्यादि थोकड़ों को समझकर कण्ठस्थ किया है और चार कर्मग्रन्थों का भी अध्ययन किया है।

जयपुर- श्री विकासराज जैन (शाखा प्रमुख, श्री जैन रत्न युवक परिषद्, मानसरोवर शाखा, जयपुर) सुपुत्र अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय मंत्री श्री राजेन्द्रजी जैन 'राजा' की राजस्थान स्टेट इन्डस्ट्रियल डवलपमेन्ट एण्ड इन्वस्टमेन्ट कॉरपोरेशन लिमिटेड (रीको), जयपुर में असिस्टेन्ट टाउनप्लानर के पद पर नियुक्ति हुई है।

जोधपुर- सुश्री खुशी भण्डारी सुपुत्री श्री सुरेशजी-श्रीमती रचनाजी भण्डारी सुपौत्री श्री बदेचन्दजी-श्रीमती पुष्पाजी भण्डारी एवं दौहित्री श्री देवेन्द्रनाथजी-श्रीमती कमला जी मोदी ने सी.बी.एस.ई. से सीनियर सैकण्डरी (वाणिज्य) परीक्षा 93 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की है।

बालोतरा- श्री सागर बाघमार सुपुत्र श्री जवेरीलालजी बाघमार (पाटोदी वाले) का संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा में 454 वीं रेंक के साथ चयन हुआ है। आपका पूरा परिवार धार्मिक कार्यों से जुड़ा हुआ है। *-सोहनलाल श्रीश्रीमाल*

मुम्बई- चि. राहुल भण्डारी सुपौत्र श्रीमती शोभादेवी-स्व. श्री भंवरलाल जी भण्डारी (भोपालगढ़ वाले) सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकलाजी-श्री महावीर जी भण्डारी ने Masters Managements Information System (MS-MIS) Texas A & M University - U.S.A. से करके American International Group (AIG), Houston-U.S.A. में कार्य ग्रहण किया है।

जयपुर- सुश्री रोशनी लोढ़ा सुपुत्री श्रीमती रीता-श्री राजेश जी लोढ़ा ने सी.बी.एस.ई. की बारहवीं परीक्षा (वाणिज्य) में 94.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर अपनी विशेष योग्यता का प्रदर्शन किया।

इचलकरंजी- श्री शीतलकुमार संचेती सुपुत्र श्रीमती नंदाजी-श्री राजेन्द्रकुमारजी एवं सुपौत्र स्व. श्री नेमीचन्दजी संचेती ने एस.एस.सी. बोर्ड द्वारा आयोजित 10 वीं कक्षा में 91.80 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

सवाईमाधोपुर- श्री पुलकित जैन सुपुत्र श्री दिनेशजी-श्रीमती भारती जी जैन एवं सुपौत्र श्री हरकचन्दजी जैन (बिलोता वाले), ने MNIT जयपुर से B.Teh. कर 'सोलर 91' में कार्य ग्रहण किया है।

सवाईमाधोपुर- श्री आयुष जैन सुपुत्र श्री सुधीरजी-श्रीमती अनीता जी जैन एवं सुपौत्र श्री हरकचन्द जी जैन (बिलोता वाले) ने MNIT जयपुर से B.Teh. कर 'केयर्न इण्डिया' में कार्य ग्रहण किया है।

जोधपुर- श्री सम्यक् भण्डारी सुपुत्र श्री कमलराजजी-श्रीमती सुनीताजी भण्डारी ने सी.बी.एस.ई. से सीनियर सैकण्डरी (वाणिज्य) परीक्षा तीसरे स्थान के साथ 96 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की है।

मुम्बई- श्री रिषभ बोहरा सुपुत्र शोभा मनीषजी बोहरा ने आई.सी.एस.ई. की दसवीं की परीक्षा में 95.17 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।

जोधपुर- रूहान मेहता (डुग्गु) सुपुत्र श्रीमती बिन्दू मेहता ने चार वर्ष की अल्पायु में प्रतिक्रमण विधि सहित, दशवैकालिक के दो अध्ययन एवं 25 बोल कंठस्थ किए हैं। आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता के दौहित्र हैं।

श्रद्धाञ्जलि

संघनायक शास्त्री श्री पदमचन्द्र जी महाराज का देवलोकगमन

दिल्ली- संघशास्ता, शासनप्रभावक श्री सुदर्शनलालजी महाराज के पाट पर विराजित संघ नायक शास्त्री श्री पदमचन्द्रजी महाराज का 29 अप्रेल को शालीमार बाग, दिल्ली में देवलोकगमन हो गया। आप पूज्य श्री मायारामजी महाराज, व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी महाराज की परम्परा के संत थे। 18 वर्ष की उम्र में सन् 1958 में दीक्षित होकर उन्होंने 58 वर्ष की संयम साधना के साथ समाधिमरण प्राप्त किया। पंजाब एवं हरियाणा के साथ दिल्ली, उत्तरप्रदेश आदि में भी उनका विचरण विहार रहा। पार्थिव देह की अन्त्येष्टि के समय हजारों श्रावक उपस्थित थे। अहिंसा, संयम एवं तप को जीवन में आत्मसात् कर उन्होंने संत जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया। आपके देहावसान के पश्चात् अनेक स्थानों पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी महाराज की सन्निधि में बड़ौत में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में विभिन्न संतों एवं श्रावकों ने उनकी साधना एवं प्रभावकता का कथन किया।

चेन्नई- अनन्य गुरुभक्त श्राविकारत्न श्रीमती पारसबाईजी हुण्डीवाल धर्मसहायिका श्री

सोहनलाल जी हुण्डीवाल का 14 अप्रेल 2016 को देहावसान हो गया। बुजुर्ग, अनुभवी श्राविका का स्वास्थ्य कुछ अरसे से समीचीन नहीं था, किन्तु घर-परिवारजनों के सहयोग से उनका स्मरण, भजन और जप-तप अंत समय तक बना रहा। सुश्राविका में गुरुभक्ति, संघसेवा और सबके साथ समन्वय बनाये रखने की अद्भुत क्षमता थी। उन्होंने आचार्यश्री हस्ती के मुखारविन्द से वर्ष 1970 में नंगे पाँव चलने का संकल्प लिया, वहीं भोपालगढ़ चातुर्मास में शीलव्रत का खंध लिया। प्रकृति से सहज, शान्त एवं सरल श्राविकारत्न ने स्वयं धर्माराधना करते हुए परिवारजनों में सेवा धर्म की भावना संजोयी, जिसका सुफल है कि सुपुत्र श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल सहित समस्त परिवार संघ-सेवा एवं संत-सती सेवा में अग्रणी है। नित्य प्रति सामायिक, रात्रिभोजन त्याग के साथ कई व्रत प्रत्याख्यान का वे पालन करती थीं।

बजरिया (सवाईमाधोपुर)- वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री चौथमलजी जैन, सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक का 05 मई को 84 वर्ष की वय में समाधिभाव के साथ देवलोकगमन हो गया। बचपन से ही अपनी माता श्रीमती केशरबाई की प्रथम पाठशाला से जो ज्ञानार्जन किया, उसे आपने पाथर्डी बोर्ड अहमदनगर की परीक्षाओं के माध्यम से अभिवर्धित किया। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के आशीर्वाद से आप स्वाध्याय सेवा से जुड़े तथा सन् 1969 से 32 वर्षों तक स्वाध्यायी सेवा प्रदान की। 15 वर्ष तक आप स्वाध्याय संघ शाखा सवाईमाधोपुर के संयोजक रहे। इस दौरान शताधिक स्वाध्यायी तैयार हुए। बारह व्रतधारी श्रावक बनकर आपने संयमित, अनुशासित एवं स्वावलम्बी जीवन जीया। आपके सुपुत्र श्री सागरजी, पदमजी, वर्द्धमानजी आदि भी धर्मनिष्ठ हैं तथा पदमचन्दजी जैन भी स्वाध्याय संघ शाखा सवाईमाधोपुर के संयोजक के रूप में सेवाएँ देते रहे हैं।

नदबई (भरतपुर)- अनन्य गुरुभक्त, संघसेवी श्री ज्ञानचन्दजी जैन (पूर्व व्याख्याता एवं

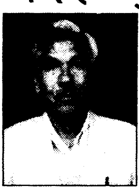

पूर्व ग्राम सरपंच) का 03 अप्रेल 2016 को स्वर्गगमन हो गया। संघ व समाज की सेवा में समर्पित श्रावकरत्न की गुरुभक्ति प्रशंसनीय रही। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील वरिष्ठ स्वाध्यायी थे। आपने लगभग 25 वर्षों तक अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला जी जैन के साथ पर्युषण पर्व में सेवाएँ प्रदान की। त्याग-तप एवं नियमित दया, संवर, पौषध करने वाले श्रावकरत्न अन्तिम समय माला फेरते हुए गए। आप श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-नदबई के वर्षों तक मंत्री रहे। अखिल भारतीय पल्लीवाल महासभा के आप कार्यकारिणी सदस्य एवं शीर्ष पदों पर रहे। आपके पिताश्री रतनलालजी जैन ने डहरा ग्राम में संघ को जैन

स्थानक भेंट किया था। आप अपने पीछे सुपुत्र स्वाध्यायी श्री नरेशचन्दजी जैन, मंत्री नदबई संघ सहित भरापूरा परिवार संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

जलगांव- सुश्राविका श्रीमती उषाजी बोथरा धर्मपत्नी संघसेवी, श्रावकरत्न श्री महावीरचन्द जी बोथरा (पूर्व कार्याध्यक्ष अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं पूर्व अध्यक्ष श्री जैन रत्न युवक परिषद्-जलगांव) एवं पुत्रवधू श्री सोहनलाल जी बोथरा-भोपालगढ़ का 16 अप्रेल को 44 वर्ष की युवावय में कैंसर के कारण असामयिक देहावसान हो गया। नित्य प्रति सामायिक, प्रतिक्रमण करने वाली श्राविकारत्न रात्रिभोजन त्यागी थीं। पन्द्रह दित्रस पहले तक आप स्वयं सामायिक-प्रतिक्रमण करती थीं एवं बाद में शक्ति न होते हुए भी धर्मश्रवण मनोयोग से करते हुए होठ हिलाती थी।

जयपुर- संघसेवी सुश्रावक श्री कुशलचन्दजी हीरावत का 03 अप्रेल को देहावसान हो गया। प्रतिदिन दया, संवर एवं पौषध करने वाले श्रावकरत्न की आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सती मण्डल के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आपके सुपुत्र डॉ. राकेश जी, नवीनजी एवं मनीष जी हीरावत धर्मनिष्ठ हैं तथा संघ की सेवा में तत्पर रहते हैं।

अलवर- सुश्राविका श्रीमती मंजूजी पालावत धर्मसहायिका संघमंत्री श्री योगेशजी पालावत

एवं सुपुत्री श्री घेवरचन्दजी लोढ़ा ने 52 वर्ष की उम्र में संथारा ग्रहण कर 17 अप्रेल 2016 को देह त्याग करते हुए जीवन सार्थक किया। वे वर्षों से धार्मिक पाठशाला एवं शिविरों का संचालन कर बालकों का जीवन निर्माण कर रही थीं। विगत 10 वर्षों से वर्षीतप कर रही थीं तथा ध्यान-शिविरों में भाग लिया। बाल्य अवस्था से ही धर्म की रुचि रही एवं अनेक व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार किये। तेले, अठाई आदि की तपस्या आप प्रायः करती रहती थीं। सन् 1995 में अल्पआयु में आपने शीलव्रत ग्रहण कर लिया था। गत वर्ष तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के अलवर चातुर्मास में महावीर भवन के पास चौका कर धर्म-लाभ लिया। असाध्य बीमारी में भी वे साधना के प्रति सजग रहीं।

जोधपुर- विधिवेत्ता, न्यायाधिपति ओर मानवाधिकार आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री राजेश

जी बालिया का 2 अप्रेल, 2016 को देहान्त हो गया। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी एवं न्यायायिक क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान कायम करने वाले सत्यान्वेषी सुज्ञ श्रावक ने मानवीय मूल्यों के संरक्षण एवं अभिवृद्धि हेतु कार्य किया। वे सन् 1991 से 2007 तक राजस्थान उच्च न्यायालय न्यायाधिपति रहे तथा 2008 में पटना उच्च न्यायालय मुख्य न्यायाधीश पद पर पदोन्नत किए गए। सेवानिवृत्ति के पश्चात् आप राजस्थान मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष बने। धर्मसंघ

एवं समाज के प्रति आपका सकारात्मक चिन्तन रहता था तथा जब कभी भी धार्मिक समारोह में आपको आमन्त्रित किया गया, आप सहर्ष पधारे।

दूदू (जिला-जयपुर)- सुश्रावक श्री ताराचन्दजी नाहर का 13 जून को मदनगंज में संथारा पूर्वक देहावसान हो गया। प्रतिदिन सामायिक करने वाले श्रावकरत्न को संथारा के प्रत्याख्यान विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. द्वारा कराये गये। श्रद्धानिष्ठ, गुरुभक्त श्री नाहर साहब समाज सेवा एवं जीवदया के प्रति समर्पित रहने के साथ उपवास, आयंबिल, एकाशन आदि तपस्याओं में भी सन्नद्ध रहते थे। *-विनोद मेहता, अध्यक्ष*

सूरत- सुश्राविका श्रीमती नीरूजी बाफना धर्मपत्नी श्री शान्तिलालजी बाफना, कोषाध्यक्ष श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सूरत का 11 मई, 2016 को अल्प आयु में देहान्त हो गया। वे श्राविका मण्डल की सक्रिय सदस्य थीं एवं प्रत्येक धार्मिक गतिविधि में उत्साहपूर्वक योगदान करती थीं। धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ श्राविकरत्न सामायिक-स्वाध्याय आदि गतिविधियों में तत्पर रहती थीं।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती कंचनजी धारीवाल धर्मपत्नी श्री सुशीलजी धारीवाल का 18

अप्रेल 2016 को देहावसान हो गया। आपके पिता स्व. श्री सोहनलाल जी नाहर (पूर्व अध्यक्ष, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-पाली) एवं माताजी श्रीमती विजयकंवरजी नाहर से प्राप्त धार्मिक संस्कारों को आपने जीवन्तपर्यन्त जीया। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धाभक्ति थी। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं समाजसेवी श्राविकारत्न के दोनों पुत्र धर्माराधना कार्य में सदैव अग्रणी रहते हैं।

कोलकाता- सुश्राविका श्रीमती फूलकुमारीजी कांकरिया धर्मपत्नी धर्मनिष्ठ एवं

समाजसेवी श्री सरदारमलजी कांकरिया का 83 वर्ष की उम्र में 12 अप्रेल को स्वर्गवास हो गया। परिवारजनों ने मरणोपरान्त दोनों नेत्रों का दान कर दिया, जिससे दो नेत्रहीनों को दृष्टि प्राप्त हुई। श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा कोलकाता के प्रमुख श्री सरदारमलजी कांकरिया के बहुमुखी कार्यों में श्रीमती कांकरिया का पूरा सहयोग रहा। श्रीमती कांकरिया को साधर्मी वात्सल्य एवं समाजसेवा में आनन्द प्राप्त होता था।

बम्बोरा (उदयपुर)- श्राविकारत्न श्रीमती उमरावदेवी जी धींग धर्मपत्नी स्व. श्री कन्हैयालाल जी धींग का 16 अप्रेल को धर्ममय वातावरण में स्वर्गगमन हो गया। साहित्यकार डॉ. दिलीपजी धींग की माताजी 'बाईजी' के नाम से प्रसिद्ध थीं। धर्मध्यान के साथ उन्होंने जीवन-व्यवहार और

कौटुम्बिक मूल्यों को महत्त्व दिया। उनका जीवन व्रत-नियमों से अनुप्राणित था। रात्रिभोजन त्याग रखने के साथ में वर्षों से उभयकाल सामायिक एवं पाक्षिक प्रतिक्रमण करती थीं। उन्हें हिन्दी और राजस्थानी के सैंकड़ों धर्म गीत, लोक गीत, भजन, स्तुतियाँ, काव्य और पद्य कठस्थ थे। *-सुरेशचन्द्र धींग*

पाली- वरिष्ठ श्रावक श्री पारसमल जी कुकुंलोल (बांतावाला) का 18 मार्च 2016 को

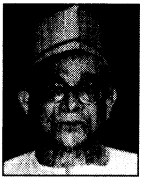

78 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। नियमित रूप से सामायिक, स्वाध्याय, प्रवचन-श्रवण एवं प्रतिक्रमण करने वाले श्रावकरत्न का जीवन सरलता, विनम्रता एवं उदारता से युक्त था। विशेष पर्व-तिथियों पर उपवास, पौषध एवं पाँचों बड़ी तिथियों पर दया-संवर करने वाले श्रावकरत्न समाज हित में सदैव समर्पित रहे। *-रूपकुमार चौपड़ा*

हैदराबाद- श्री भंवरलाल जी डोसी का 84 वर्ष की वय में 21 मार्च 2016 को निधन हो

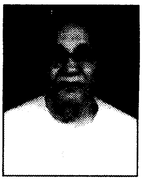

गया। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ, ग्रेटर हैदराबाद के आप मार्गदर्शक, जैन सेवा संघ के सदस्य तथा ब्यावर वेलफेयर एसोशिएशन के चेयरमेन थे। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हैदराबाद के वे अध्यक्ष/उपाध्यक्ष भी रहे। आपके दोनों सुपुत्र श्री प्रदीप जी एवं पारसजी डोसी संघ सेवा में समर्पित हैं।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पुष्पा जी चौधरी धर्मसहायिका श्री चन्द्रसिंह जी

चौधरी (बदनोर वाले) का 02 जून 2016 को स्वर्गवास हो गया। नियमित सामायिक-स्वाध्याय, व्रत-प्रत्याख्यान आदि के साथ आपके जीवन में सरलता एवं उदारता थी। संत-सतियों के प्रति सेवा-भावना से युक्त श्राविका सुपुत्र श्री जितेन्द्र जी एवं पुत्रवधू स्वाध्यायी श्रीमती आस्थाजी सहित धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गई हैं।

छोटी कसरावद (म.प्र.)- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती ताराबाईजी मांडोत धर्मपत्नी स्व. श्री केशरीमलजी मांडोत का 27 जून 2016 को 85 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। नियमित पाँच सामायिक एवं छोटे-बड़े प्रत्याख्यान करने वाली श्राविका अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं। *-प्रमोद तातेड़, देवास (मध्यप्रदेश)*

जोधपुर- सुश्री प्रणिता जी मेहता सुपुत्री डॉ. राखीजी-डॉ. सुनीलजी मेहता एवं सुपौत्री श्रीमती कमलेशजी-डॉ. कानसिंहजी मेहता का 22 वर्ष की वय में असामयिक देहावसान हो गया। राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, जोधपुर की प्रतिभासम्पन्न छात्रा का गोवा में आकस्मिक निधन हो गया।

मूट कोर्ट प्रतियोगिता में उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए हाँगकाँग में स्वर्णपदक, तेहरान में रजत पदक प्राप्त किया। अमेरिका में उनकी टीम तृतीय स्थान पर रही।

कवर्धा (म.प्र.)- सुश्राविका श्रीमती रत्नीबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री बस्तीमलजी नाहर का 84 वर्ष की उम्र में संलेखना-संथारापूर्वक देवलोक गमन हो गया। आचार्यश्री रामलालजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री चंचलकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के द्वारा आपको नियमित मांगलिक प्रदान की जाती रही। *-जेठमल चोरड़िया*

सतारा (महा.) - ज्येष्ठ श्रावकरत्न डॉ. औंकारलाल दि. बनवट का 02 मार्च को 95 वर्ष

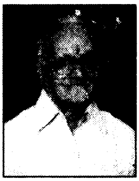

की वय में जलगांव में संथारा समाधिपूर्वक परलोकगमन हो गया। वैद्यकीय ज्ञान से समाज की सेवा करने वाले श्रावकरत्न की शास्त्रों में गहरी रुचि थी तथा वर्षों तक स्वाध्यायी सेवा भी प्रदान की। आपकी प्रेरणा से समस्त बनवट परिवार (मलकापुर, जलगांव एवं सतारा) धर्म से जुड़ गया है।

जोधपुर- संघसेवी गुरुभक्त श्री आदर्शजी भण्डारी का 06 मई को देहावसान हो गया। संघसेवी स्व. श्री सरदारचन्दजी भण्डारी के सुपुत्र श्री आदर्शजी भण्डारी की आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सती के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती हुकुमकंवरजी धारीवाल का 11 मई को निधन हो गया। आप चारित्रनिष्ठ संत-सतियों के प्रति श्रद्धा-समर्पित थीं। आपके सुपुत्र डॉ. अशोकजी, कैलाश जी धारीवाल की सेवा भक्ति सराहनीय है।

जोधपुर- श्री आशीष जी सुपुत्र श्री रतनजी जीरावला का अल्पवय में असामयिक निधन हो गया। शरीर से अशक्त होते हुए भी उनके मुख से 'अरिहन्तदेव अरिहन्तदेव' के शब्द सदा उच्चरित होते रहते थे।

-धनपत सेठिया

पीपाड़सिटी- सुश्राविका श्रीमती बसन्तीदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री देवराजजी बरड़िया का 09 जून को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। सरलता, उदारता एवं सेवाभावना से सम्पन्न श्राविका पीपाड़सिटी में पधारने वाले संत-सतियों की सेवा में तत्पर रहती थी।

जयपुर- सुश्रावक श्री कल्याणमल जी दुगड़ का 15 मई को निधन हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं कर्त्तव्यपरायण होने के साथ देव,गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पित थे।

जयपुर- सुश्रावक श्री माणकचन्दजी कर्णावट का मई माह में निधन हो गया। आप कर्त्तव्यपरायण एवं धर्मनिष्ठ थे। बचपन से ही दादी द्वारा प्राप्त संस्कारों के कारण निरन्तर धर्मध्यान में लगे रहते थे।

खेतिया- धर्मनिष्ठ सुश्राविका सौ. सुरजबाईजी धर्मसहायिका श्री भंवरलालजी

विनायकिया का 04 अप्रेल को 78 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आप नित्य सामायिक-प्रतिक्रमण करती थीं एवं संत-सतियों के प्रति श्रद्धाभाव से ओतप्रोत थीं।

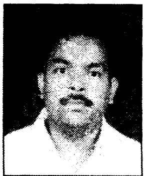

दिल्ली- सेवाभावी श्री सुनीलकुमारजी लोढ़ा सुपत्र स्व. श्री मिश्रीलाल जी लोढ़ा का 49 वर्ष की आयु में 15 मई को निधन हो गया। मरणोपरान्त उनकी भावनानुसार नेत्र दान किए गए।

जयपुर- श्रीमती प्रेमलता जी जामड़ धर्मपत्नी श्री मानसिंहजी जामड़ (मूल निवासी किशनगढ़) का 60 वर्ष की वय में 12 मई को निधन हो गया। परिवार की एकता और अखण्डता को बनाये रखने में उन्होंने उत्साह एवं आत्मविश्वास का परिचय दिया। श्रीमती जामड़ के जीवन का लक्ष्य था- सुकृत की अनुमोदना करना, आडम्बर रहित जीवन जीना, परमात्मा एवं गुरुभगवन्त के प्रति समर्पण रखना। -*अनिल चोरडिया*

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती उमरावकंवरजी धर्मसहायिका श्री रतनलाल जी रांका का 08 अप्रेल को निधन हो गया। आपका सम्पूर्ण परिवार धार्मिक संस्कारों से युक्त है।

पंढरपुर-वालुज (महा.)- सुश्राविका सौ. कमलाबाई रंगलालजी छाजेड़ का संथारा संलेखनापूर्वक को 12 अप्रेल को परलोकगमन हो गया। वे पंढरपुर में 30 वर्षों से धार्मिक पाठशाला चला रही थीं। उन्हें लोगस्स पाठ पर प्रगाढ़ श्रद्धा थी तथा नियमित सामायिक प्रतिक्रमण आदि के साथ उनके अनेक व्रत-प्रत्याख्यान थे।

जोधपुर- धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती भंवरीकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री गणपतचन्दजी गाँधी का 23 अप्रेल को समाधिभावों के साथ 102 वर्ष की आयु में निधन हो गया। मानवीय संवेदना के कारण वे सबके सुख-दुःख को अपना मानती थीं। विगत 45 वर्षों से रात्रि चौविहार त्याग के साथ नियमित पाँच सामायिक, दया, संवर, पौषध आदि की आराधना घोड़ों का चौक स्थानक में आकर करती थीं। आप रत्नसंघीया साध्वी कौशल्या जी म.सा. के सांसारिक भुआ जी थे।

पाली- सुश्रावक श्री धनपतराजजी सिंघवी (सोजत वाले) का 22 अप्रेल को 79 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आप उदारमना, सरल एवं सकारात्मक सोच के धनी थे। कैंसर जैसी बीमारी में भी आपने अपना मनोबल दृढ़ बनाये रखा।

बांसवाड़ा- श्री कानसिंहजी रांका का 80 वर्ष की आयु में 30 अप्रेल को स्वर्गवास हो गया। वे समाज के 10 वर्षों तक कोषाध्यक्ष रहे।

बारां- सुश्रावक श्री अश्विनभाई सेठ का 59 वर्ष की वय में 04 जून, 2016 को देहान्त हो गया। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती सुजाताजी 'जैन पाठशाला' बारां में बालकों को धार्मिक ज्ञान एवं सुसंस्कार देती हैं।

जोधपुर- मधुर गायक सुश्रावक श्री लूणकरण जी कोटडिया का 55 वर्ष की वय में 19 जून

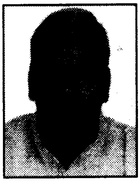

2016 को स्वर्गारोहण हो गया। नियमित सामायिक एवं स्वाध्याय करने के साथ आपने समता युवा संघ के अध्यक्ष एवं संरक्षक पद पर अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। आप स्वयं भजन रचकर अपने मधुर कण्ठ से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे। समर्थ गच्छ में साध्वी रत्ना कमलेशश्री जी आपकी बहिन हैं। आपकी इच्छानुसार नेत्रदान किए गए।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

स्वाध्यायियों हेतु सूचना

सभी स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता है कि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा आगम प्रकाशन योजना के अन्तर्गत आवश्यक सूत्र का प्रकाशन किया गया है। यह संस्करण प्रतिक्रमण सम्बन्धी पाठों के अर्थ, भावार्थ, प्रश्नोत्तर आदि की विशेष जानकारी प्राप्त करने हेतु सभी स्वाध्यायियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अतः इसका स्वाध्याय करके प्रतिक्रमण सम्बन्धी अपनी जानकारी को परिपूर्ण बनाएँ। आवश्यक सूत्र की प्राप्ति हेतु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं संयोजक/सचिव- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोनः 0291-2624891 पर सम्पर्क करें।

-ओमप्रकाश बांठिया, संयोजक

आवश्यक सूचना

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित सत्साहित्य घोड़ों का चौक स्थानक में उपलब्ध है, जो भी स्वधर्मी बन्धु सत्साहित्य का स्वाध्याय करना चाहें वे सत्साहित्य स्थानक से स्वाध्याय करने हेतु प्राप्त कर सकते हैं। स्वाध्याय करने के पश्चात् पुस्तक पुनः जमा करा दिरावें।

-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

संघ हेतु आधार- सूचना संग्रहण-कार्यक्रम

अपेक्षित है आपका सहयोग

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के निर्देशन में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा रत्नसंघीय परिवारों के सम्बन्ध में सूचना का संग्रह ऑनलाइन किया जा रहा है, जिसके उद्देश्य हैं- 1.संघ सदस्यों की धार्मिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक जानकारी एकत्रित करना, 2. संघ के सभी कार्यक्रमों की सूचना अपने सदस्यों को पहुँचाने के लिए सूचनातंत्र विकसित करना, 3. संघ सदस्यों से प्राप्त जानकारी एकत्रित कर उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग करना, 4. प्राप्त आंकड़ों के आधार पर संघ के भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय करना, 5. संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं से सम्बन्धित सभी जानकारी एक ही जगह पर संकलित करना, 6. संघ के सभी सदस्यों में सक्रियता का संचरण करना। इस हेतु पंजीकरण 4 जनवरी 2016 से प्रारम्भ हो चुका है। आप WWW.RATNASANGH.COM पर अपनी सूचना दे सकते हैं।

- यह फार्म परिवार के तीन वर्ष से अधिक वय के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा भरा जाना है। इसे आप आधार कार्ड की भाँति व्यक्तिगत सूचनातंत्र भी समझ सकते हैं।
- इससे संघ का सूचनातंत्र विकसित होगा। आगे चलकर चिकित्सा के क्षेत्र में अन्य समाज की भाँति ग्रुप मेडिकल बीमा हेतु प्रयास कर उसे मूर्त रूप प्रदान किया जा सकता है।
- आप संघ की वेबसाइट www.ratnasangh.com पर जाकर अपना फार्म स्वयं ही भर सकते हैं। फार्म भरना शुरू करते समय आपके मोबाइल नम्बर पर एक संदेश आयेगा, जिसमें फार्म नम्बर एवं फार्म भरने की तारीख रहेगी। आप स्वयं अपना फार्म पूर्ण भर सकते हैं या उसमें आवश्यक सुधार कर सकते हैं। यदि आपके पास फार्म नम्बर या तारीख का संदेश सुरक्षित न हो तो आप वेबसाइट पर जाकर एडिट फार्म पर क्लिक करें, वहाँ पर आपको फोरगोट पासवर्ड का विकल्प प्राप्त होगा, उस पर क्लिक करके अपने नाम एवं मोबाइल नम्बर की जानकारी प्रदान करें। दोनों जानकारी सही होने पर आपके मोबाइल पर फार्म नम्बर एवं फार्म भरने की दिनाँक का संदेश आपको पुनः प्राप्त हो जायेगा। इसकी सहायता से आप अपना फार्म एडिट कर सकते हैं।
- इस सूचना संग्रहण कार्यक्रम से आपको यथासमय चातुर्मास, दीक्षा महोत्सव, विशिष्ट पर्व तिथि आदि एवं आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त होंगी।
- आशा है आप संघ के इस भागीरथी प्रयास से रीते नहीं रहेंगें एवं अपने परिवार सहित सभी स्वधर्मी भाई-बहनों की सूचना संगृहीत कराने में पूरा प्रयास करेंगे।

-विकास गुंदेचा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पुस्तकालय एवं श्रुत सेवा,
मोबाइल नं. 099283-63581

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष)

सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15608 से 15650 तक 43 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

51000/- श्रीमती सुशीलाजी धर्मपत्नी स्व. श्री कैलाशचन्दजी मेहता, जयपुर, सुपौत्री सुश्री प्रतीक्षाजी (सुपुत्री श्रीमती निशाजी एवं प्रदीपजी मेहता) का शुभविवाह चि. उत्कर्षजी सुपौत्र स्व. श्रीमती लाडकँवरजी एवं स्व. श्री जयवंतमलजी ओसवाल एवं सुपुत्र श्रीमती हेमलताजी-राजेन्द्रजी ओसवाल के साथ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

51000/- श्रीमती हेमलताजी-राजेन्द्रजी ओसवाल, जयपुर, चि. उत्कर्षजी सुपौत्र स्व. श्रीमती लाडकँवरजी एवं स्व. श्री जयवंतमलजी ओसवाल का शुभविवाह सौ.कां. प्रतीक्षाजी सुपौत्री श्रीमती सुशीलाजी धर्मपत्नी स्व. श्री कैलाशचन्दजी, सुपुत्री श्रीमती निशाजी एवं प्रदीपजी मेहता का शुभविवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

10000/- श्री सरदारमलजी, मनोहरजी, ललितजी कांकरिया, कोलकात्ता, पूज्य श्रीमती फूलकँवरजी कांकरिया का 12 अप्रेल 2016 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

5100/- श्रीमती सुशीलाजी कर्णावट एवं समस्त कर्णावट परिवार, जयपुर, श्री माणकचन्दजी कर्णावट की पुण्यस्मृति में भेंट।

5000/- श्री पी. शांतिलालजी, सुरेश कुमारजी, मुकेश कुमारजी गुंदेचा, तिलकनगर-हैदराबाद, श्री पी. शांतिलालजी-कमलादेवीजी गुंदेचा के वैवाहिक जीवन के 46 वर्ष सम्पन्न होने के प्रसंग पर सप्रेम भेंट।

2500/- श्रीमती दाखादेवीजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, पुत्रवधू एवं सुपुत्र श्रीमती उर्मिलादेवी एवं सोहनलालजी जैन की शादी की 25वीं सालगिरह 24 जून 2016 को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री नरेन्द्र कुमारजी, अभय कुमारजी, अजय कुमारजी, अक्षय कुमारजी मरलेचा, चेन्नई, श्रीमती माँगीकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री लालचन्दजी मरलेचा का 21 जनवरी 2016 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

2100/- श्री अभिषेक गांग, सूरत, श्रीमती ललितादेवीजी धर्मसहायिका श्री महेन्द्रमलजी गांग-सूरत के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री शांतिलालजी, सुरेशजी, अनिलजी, डा. दिलीपजी धींग, बम्बोरा-उदयपुर, श्रीमती उमरावदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री कन्हैयालालजी धींग का 16 अप्रेल 2016 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

2100/- श्री हेमन्त कुमारजी सुपुत्र श्री बजरंगलालजी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर, सुपुत्र श्री

विकास कुमारजी का शुभविवाह सौ.कां. मीनाक्षीजी के संग 17 अप्रेल 2016 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री हर्षजी जैन, मुम्बई की ओर से सप्रेम भेंट।

2100/- श्री उम्मेदमलजी, नरेन्द्र कुमारजी जैन, जयपुर, चि. नीरज (सुपुत्र श्रीमती वीणाजी-नरेन्द्रजी जैन) संग सौ.कां. चाँदनीजी (सुपुत्री श्रीमती त्रिशलाजी-मुकेश कुमारजी जैन) का शुभविवाह 19 अप्रेल 2016 को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री हरकचन्दजी जैन (बिलोता वाले), सवाईमाधोपुर, सुपौत्र श्री पुलकितजी (सुपुत्र श्री दिनेशजी-भारतीजी) का सोलर-91 में तथा श्री आयुषजी (सुपुत्र श्री सुधीरजी-अनिताजी) का केयर्न इण्डिया में चयन होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री संतोषकुमारजी, आनन्दकुमारजी वैदमुथा, रायचूर।

2100/- श्री प्रसन्नराजजी, दिनेशकुमारजी, राजकुमारजी बोथरा मेहता-चेन्नई।

2100/- श्री आनन्दकुमारजी, बसंतकुमारजी, पुष्पराजजी, लाभचन्दजी कुंकुलोल (बांता वाला), पाली, पूज्य पिताश्री स्व. श्री पारसमलजी कुंकुलोल का 18 मार्च, 2016 को देहावसान होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

2100/- श्रीमती कंचनजी धर्मपत्नी श्री रूपराजजी जीरावला, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री हितेशजी जीरावला का विवाह सानन्द सम्पन्न होने पर।

2100/- श्री सुरेशजी जीरावला, जोधपुर, श्रीमती सविताजी धर्मपत्नी श्री सुरेशजी जीरावला के वर्षीतप पारणा सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

2000/- श्री माँगीलालजी हिरण, बैंकॉक की ओर सप्रेम भेंट।

1500/- श्री मोहनलालजी-उगमाबाईजी बोहरा, तिरूवन्नैमलै।

1500/- श्री पारसमलजी-मदनबाईजी बोहरा, तिरूवन्नैमलै।

1500/- श्री सुशील कुमारजी-सरोजादेवीजीजी बोहरा, तिरूवन्नैमलै।

1500/- श्री आनन्द कुमारजी-चन्द्राबाईजी बोहरा, तिरूवन्नैमलै।

1151/- श्री सुरेशजी लोढ़ा (टोनीजी), जयपुर एवं अशोकजी (बॉबी) दिल्ली, प्रिय भ्राता श्री सुनीलजी (बंटी) सुपुत्र स्व. श्री मिश्रीलालजी लोढ़ा (दिल्ली निवासी) का 15 मई 2016 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

1111/- श्रीमती ललिताजी महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, सुपौत्र आरवजी सुपुत्र श्रीमती प्रियदर्शिनाजी-अभिषेकजी गांग, मुम्बई के तृतीय जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1111/- श्री जगदीशजी, हनुमानजी, रविन्द्रजी, आनन्दजी जैन (चकेरी वाले), सवाईमाधोपुर, श्रीमती सत्यवती-जगदीशजी की सुपौत्री सौ.कां. निकिताजी सुपुत्री श्रीमती मंजुजी-रविन्द्रजी जैन का शुभविवाह चि. नितिनजी सुपुत्र श्रीमती निर्मलाजी-धर्मचन्दजी जैन (बाबई वाले) सवाईमाधोपुर के संग 17 अप्रेल 2016 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1111/- श्री गौतमजी, पारसजी, रिखबजी, धर्मचन्दजी जैन, इन्दौर, पूज्य माताजी श्रीमती गोरधनीबाई धर्मपत्नी स्व. श्री परमानन्दजी जैन (एण्डवा-श्यामपुरा वाले) का 23 मई 2016 को देहावसान होने पर पुण्यस्मृति में।

1111/- श्रीमती इचरजबाईजी-फूलचन्दजी एवं श्रीमती सुशीलाजी-बस्तीमलजी बोहरा, मुम्बई, श्री

रिषभजी बोहरा, आई.सी.एस.ई. सैकण्डरी परीक्षा 95.17% से उत्तीर्ण होने की खुशी में।

1101/- श्री गजेन्द्रजी (राजू), अनिलजी जैन, मानसरोवर-जयपुर, पूज्य माताजी श्रीमती धापूदेवीजी जैन की पुण्यस्मृति 25 मार्च 2016 के प्रसंग पर भेंट।

1101/- श्री धर्मचन्दजी जैन (बूंदी वाले), सुपुत्र श्री पंकजजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री सुरेशजी, गौतमजी, गौरवजी जैन, जैन साड़ी स्टोर-जयपुर, पूज्य श्री धर्मचन्दजी जैन की पुण्यस्मृति में भेंट।

1101/- श्री सुरेशचन्दजी जैन (देवली वाले), कोटा, चि. प्रदीपजी के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1101/- श्री चन्द्रसागरजी, पदमचन्दजी, विजय कुमारजी जैन (अलीगढ़ वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री चौथमलजी जैन (सेवानिवृत्त अध्यापक) का स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

1101/- श्री रामकरणजी, रामजसजी जैन (बाबई वाले), सवाईमाधोपुर, चि. विकास (सुपुत्र श्रीमती मुन्नाबाईजी-रामकरणजी जैन) सौ.कां. प्रीतिजी (सुपुत्री श्री नरेन्द्रजी-स्व. श्रीमती निर्मला जी जैन) के संग 14 मई 2016 को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री प्रेमचन्दजी, राजेशजी, मुकेशजी, नमनजी, नैतिकजी मोदी, मदनगंज-किशनगढ़।

1100/- श्री शान्तिलालजी, पदम कुमारजी जैन (एण्डबा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. जितेशजी (सुपुत्र स्व. श्री राजेन्द्रजी जैन) का शुभविवाह सौ.कां. प्रीतिजी सुपुत्री श्री महावीर जैन-कुश्तला के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री त्रिलोकचन्दजी जैन, फगवाडा-पंजाब, धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णावतीजी का 11 मार्च 2016 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

1100/- श्री सुभाषचन्दजी, सुमितजी, रौनकजी लोढ़ा (अजमेर वाले), चेन्नई, अक्षय तृतीय पारणा प्रसंग स्वीकृति अजमेर श्रीसंघ को मिलने की खुशी में।

1100/- श्रीमती शशिकांताजी धर्मपत्नी स्व. श्री मूलचन्दजी जैन, भरतपुर, चि. राहुलजी का शुभविवाह सौ.कां. चाँदनीजी के संग 26 अप्रैल 2016 को सुसम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री जम्बू कुमारजी जैन, मानसरोवर-जयपुर, सुपुत्र चि. गौरवजी का शुभविवाह सौ.कां. स्नेहाजी जैन के संग 16 अप्रेल 2016 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- डॉ. पारसमलजी एवं श्रीमती उर्मिलाजी जैन (चौथ का बरवाड़ा वाले), मानसरोवर-जयपुर, चि. रवि का शुभविवाह सौ.कां. रीनाजी जैन (सी.ए.) के संग 21 मई 2016 को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती कमलादेवीजी-प्रेमचन्दजी सुराणा, बेरला की ओर से सप्रेम भेंट।

1100/- श्री राजेन्द्रजी, अनिलजी, सुनीलजी गुप्ता (पोरवाल) दरी वाले, जयपुर, श्री हरीशचन्दजी गुप्ता (पोरवाल) का 17 मई 2016 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

1100/- श्री रामदयालजी, उम्मेदचन्दजी जैन-सर्राफ, सवाईमाधोपुर, श्री लोकेशजी सुपुत्र श्री उम्मेदचंदजी जैन का शुभविवाह 16 फरवरी 2016 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री घासीलालजी, रतनलालजी, रमेशचन्दजी, कमलेश कुमारजी जैन, उनियारा, माताजी श्रीमती बिलासीदेवी जैन की पुण्यस्मृति में भेंट।

1100/- दीपाली पारख, जयपुर, दीप्तिजी पारख के सी.बी.एस.ई. की सैकण्डरी परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती राजकुमारीजी मोदी, जयपुर की ओर से सप्रेम भेंट।

1100/- श्री कमलेश कुमारजी जैन, देई-बूंदी की ओर से सप्रेम भेंट।

1100/- श्री नाथूलालजी, मनोजजी, राजेन्द्रजी, मोहनजी नाहर, दूदू, पूज्य पिताश्री ताराचन्दजी नाहर का 13 जून 2016 को संथारे सहित महाप्रयाण हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती कंचनजी धर्मपत्नी श्री रूपराजजी जीरावला, जोधपुर, श्रीमती सविताजी धर्मपत्नी श्री सुरेशजी जीरावला के वर्षीतप पारणे के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती बीनाजी धर्मपत्नी श्री भागचन्दजी मेहता, जोधपुर, अपने दौहित्र श्री रूहानजी मेहता के चार वर्ष की अल्पायु में सामायिक सूत्र, दशवैकालिक सूत्र, प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करने के अनुमोदनार्थ।

आचार्यपद विशेषांक हेतु अर्थसहयोग

5100/- श्री उम्मेदराजजी, हुकुमराजजी ऐवंतकुमारजी डूंगरवाल (थॉवला वाले), जयपुर।

5100/- श्री पारसचन्दजी जैन, त्रिवेणीनगर-जयपुर।

5000/- श्री मोहनलालजी, उत्तमचन्दजी टपरावत, सेलीयुर-चेन्नई

5000/- श्रीमती किरणबाईजी-ललितजी बालिया, बेंगलोर।

5000/- श्री नेमीचन्दजी, प्रदीपजी भंसाली, बेंगलोर।

1100/- श्री गौतमचन्दजी एवं समस्त सुराणा परिवार, जयपुर।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को सत्साहित्य प्रकाशनार्थ अर्थसहयोग

180000/- श्री सम्पतराजजी चौधरी, दिल्ली, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल से प्रकाशित वीर गुण गौरव गाथा की 1500 प्रतियों के मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।

125000/- श्रीमती शांताजी लोढ़ा, जोधपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल से प्रकाशित आवश्यक सूत्र के मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

11000/- श्री सोहनलालजी, गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, चेन्नई, श्रीमती पारसबाईजी हुण्डीवाल का 14 अप्रेल 2016 को स्वर्गगमन होने पर उनकी पावन स्मृति में।

2500/- श्रीमती भंवरीदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री गणपतचन्दजी गाँधी, जोधपुर, अपने पौत्र श्री दिनेश जी गाँधी का वर्षीतप पूर्ण होने के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री पदमचंदजी, विजयराजजी, सौभाग्यचन्दजी, दुर्गाचन्दजी, राजेन्द्रजी गाँधी, जोधपुर, श्रीमती भंवरीदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री गणपतचंदजी गाँधी का 23 अप्रेल 2016 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

2100/- श्री पी.एम. चोरडिया, चेन्नई, सहयोगार्थ।

1175/- श्रीमती चन्द्रकलाजी धर्मपत्नी स्व. श्री इन्द्रचंदजी जैन, जोधपुर, 17 मई 2016 को 75 वें जन्मदिवस पर।

1100/- श्री शान्तिलालजी, पदम कुमारजी जैन (एण्डवा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. जितेशजी (सुपुत्र स्व. श्री राजेन्द्रजी जैन) का शुभविवाह सौ.कां. प्रीतिजी सुपुत्री श्री महावीर जैन-कुश्तला के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री ज्ञानराजजी अबानी सेवा ट्रस्ट, जोधपुर, सहयोगार्थ।

1100/- श्री चंचलमलजी गांग, जोधपुर, अपने तथा अपने सुपौत्र राहुल गांग सुपुत्र श्रीमती योगिता-राजेश जी गांग के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर हेतु साभार प्राप्त

21000/- श्री मुकेशजी, राकेशजी, हितेषजी, नरेशजी जैन, जयपुर, पूजनीया मातुश्री श्रीमती विमलाजी धर्मपत्नी श्री कस्तूरचन्दजी जैन के 09 जून 2016 को जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करने के उपलक्ष्य में।

5000/- श्रीमती पुष्पलताजी-प्रदीपजी जैन, जयपुर, वैवाहिक वर्षगांठ के उपलक्ष्य में।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

8000/- श्री प्रकाशचन्दजी चोरडिया, जयपुर।

7500/- श्रीमती रूपदेवीजी धर्मपत्नी श्री भागचन्दजी चोरडिया, जयपुर।

7500/- श्री राजनजी चोरडिया, जयपुर।

7000/- श्री अशोक जी चोरडिया, जयपुर, महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. की दीक्षा के 50 वें वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष्य में पुस्तक प्रकाशन हेतु सहयोग।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

600000/- श्री राजीवजी-नीताजी डागा-ह्यूस्टन

500000/- श्री मोफतराजजी मुणोत, मैसर्स कल्पतरू पॉवर ट्रांसमिशन लिमिटेड, मुम्बई।

500000/- श्री रिखबचन्दजी सुखानी, रायचूर-कर्नाटक।

108000/- श्री महावीरचन्दजी बोथरा, जलगाँव।

50000/- सुश्री प्रेक्षाजी सुपुत्री श्री प्रवीणजी कर्नावट, मुम्बई, स्व. सुश्रावक श्री चांदमलजी कर्नावट एवं स्व. सुश्राविका श्रीमती हुक्मकंवरीजी कर्नावट की पुण्यस्मृति में।

48000/- श्री दशरथजी भण्डारी, मुम्बई।

24000/- श्री भगवानमलजी, हरकमलजी सुराना, बीकानेर।

12000/- श्री राजीवजी, संजीवजी बापना, कोलकाता।

12000/- सुश्री समर्याजी कोठारी एवं श्री समीरजी कोठारी, ब्यावर।

12000/- श्री अशोकजी, अंकितजी हुण्डीवाल, जलगाँव।

12000/- श्री सुरेशमलजी गांग, अहमदाबाद, सुपुत्री सुश्री श्रद्धा गांग मेहता का इम्पीरियल कॉलेज लंदन में प्रवेश होने के उपलक्ष्य में।

12000/- श्रीमती कमलाबाईजी सम्पतलालजी बाघमार, जबलपुर (मध्यप्रदेश), स्व. सुश्रावक श्री सम्पतलालजी बाघमार की द्वितीय पुण्यस्मृति में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. M. Harish Kawad***, *No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व तिथि

आषाढ़ शुक्ला 14, सोमवार	18.07.2016	चतुर्दशी
आषाढ़ शुक्ला 15, मंगलवार	19.07.2016	चातुर्मासिक पर्व
श्रावण कृष्ण 8, बुधवार	27.07.2016	अष्टमी
श्रावण कृष्ण 14, सोमवार	01.08.2016	चतुर्दशी
श्रावण कृष्ण 30, मंगलवार	02.08.2016	आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. की 90 वीं पुण्यस्मृति तिथि, पक्खी
श्रावण शुक्ला 8, गुरुवार	11.08.2016	अष्टमी
श्रावण शुक्ला 14, बुधवार	17.08.2016	चतुर्दशी एवं पक्खी
भाद्रपद कृष्ण 8, गुरुवार	25.08.2016	अष्टमी
भाद्रपद कृष्ण 13, मंगलवार	30.08.2016	पर्युषण प्रारम्भ

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के अप्रेल-2016 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत **'रोगोपचार में अहिंसा का पालन कैसे?'** के प्रश्नों के उत्तर 14 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि-	नाम	
प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)	श्री चन्दनमल पालरेचा-जोधपुर (राज.)	(70/70)
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	श्रीमती शैली आदित्य मेहता-जोधपुर (राज.)	(69/70)
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	1. श्रीमती विजयाजी कोठारी-अजमेर (राज.)	(68.5/70)
	2. श्रीमती विद्या अशोकजी संघवी-बदनावर(म.प्र.)	(68.5/70)

तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले दो प्रतियोगियों के समान अंक होने से पुरस्कार की राशि उनमें समान रूप से बांट दी जायेगी। अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो श्री चंचलमल जी चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व फोन मय पूर्ण पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें। पता नहीं लिखे जाने पर उसे प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जाएगा।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

रत्न संघ के अष्टम पट्टधर परम पूज्य आचार्य भगवंत 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से गत 10 वर्षों से छात्रवृत्ति योजना निराबाध रूप से गतिशील है। वर्ष 2016-17 के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र योजना समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं। छात्र-छात्राएँ योजना समिति से आवेदन-पत्र मंगवा सकते हैं।

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के आवश्यक नियम

1 जो आवेदक अध्ययनरत हैं, उसके सत्यापन के लिए आवश्यक दस्तावेजों की प्रतिलिपि भेजना अनिवार्य हैं। आवेदक आवेदन पत्र के साथ निम्नलिखित दस्तावेज अवश्य भेजें- (1) उत्तीर्ण कक्षा की मार्कशीट की प्रतिलिपि। (2) आवेदक वर्तमान में जिस विद्यालय/कॉलेज/कोचिंग संस्थान में अध्ययन कर रहा है, उसके द्वारा वहाँ जमा कराये गये शुल्क की रसीद भेजना अनिवार्य हैं। (रसीद उपलब्ध न होने की दशा में विद्यालय/ कॉलेज/कोचिंग संस्थान के लैटरपेड पर सत्यापित करके भेज सकते हैं।)। (3) अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की मार्कशीट की प्रतिलिपि। (4) अपनी नई पासपोर्ट साइज फोटो। (5) मोबाइल नम्बर। योजना समिति द्वारा आवश्यक सूचना आदि मोबाइल पर मैसेज द्वारा भेज दी जाती है, इसका विशेष ध्यान रखावें। (6) आवेदक छात्र-छात्रा के बैंक खाते की पासबुक के प्रथम पृष्ठ की प्रतिलिपि भेजना अनिवार्य है। जिसका खाता खुला हुआ नहीं है, वह खुलवा लेवें। छात्रवृत्ति की राशि आवेदक के खाते में ही भेजी जायेगी।

2 छात्रवृत्ति राशि का निर्धारण विद्यालय/कॉलेज/कोचिंग के शुल्क के आधार पर या योजना की अधिकतम सीमा के आधार पर किया जायेगा। आवेदक को अपनी योग्यता के आधार पर बोनस के रूप में भी छात्रवृत्ति की राशि अतिरिक्त मिलेगी। छात्रवृत्ति के निर्धारण की प्रक्रिया इस प्रकार है-

विवरण	छात्रवृत्ति का प्रतिशत	योग्यता के कारण अतिरिक्त लाभ
1. आवेदक की शैक्षणिक शिक्षा पर	70 प्रतिशत	1. 75 प्रतिशत अंक लाने पर 10 प्रतिशत अतिरिक्त 2. 90 प्रतिशत अंक लाने पर 20 प्रतिशत अतिरिक्त
2. आवेदक के द्वारा अ.भा. श्री जैन रत्न आ. शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की परीक्षा देकर उत्तीर्ण होने पर	15 प्रतिशत	1. 75 प्रतिशत अंक लाने पर 10 प्रतिशत अतिरिक्त 2. 90 प्रतिशत अंक लाने पर 20 प्रतिशत अतिरिक्त
3. आवेदक के द्वारा शिविर में भाग लेने पर	15 प्रतिशत	-

3 छात्रवृत्ति योजना की छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है-

Class	Up to Class 10th	11th & 12th	Graduation & Post Graduation	Professional etc.
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

4 विशेष परिस्थिति में छात्रवृत्ति राशि अधिक भी भेजी जा सकती हैं, उसका अधिकार योजना समिति के पास है।

5 छात्रवृत्ति योजना समिति के द्वारा आयोजित किये जाने वाले शिविर में भाग लेना अनिवार्य है।

6 रत्नसंघ के प्रत्येक कार्यक्रम में सहयोग करना एवं उपस्थित रहना अपना कर्त्तव्य है। आपके द्वारा स्थानीय स्थल पर लगने वाले शिविर में भाग लेने, अध्यापन कार्य में सहयोग करने या अन्य रूप में सेवा करने का अलग से विवरण अवश्य संलग्न करें।

7 आवेदक को प्रतिदिन एक नवकार मंत्र की माला फेरने का संकल्प करना है।

8 सभी विद्यार्थियों को अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

9 योजना समिति का मूल लक्ष्य रत्नसंघ के आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. एवं वर्तमान आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के संदेश को नई पीढ़ी द्वारा अपनाने के लिए प्रेरित करना एवं संस्कारित करना है- "गुरु हस्ती के दो फरमान, सामायिक-स्वाध्याय महान्", "गुरु हीरा का यह संदेश- व्यसन मुक्त हो सारा देश"।

10. आवेदक रत्नसंघ का सदस्य होना चाहिये।

11. योजना समिति का निर्णय अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा।

आवेदक अपना आवेदन पत्र 31 अगस्त, 2016 तक निम्नलिखित पतों पर प्रेषित कर सकते हैं :-

(1) Acharya Hasti Scholarship Fund, "Poojaa Foundation", No. 921, 1st Floor, Poonamalle High Road, EVR 1st Lane, Chennai-600084(TN), Mob.-09543068382 , Email- guruhasti_scholarship@ yahoo.co.in, **(2) Mr. Harish Kavad, Acharya Hasti Scholarship Fund**, "Guru Hasti Thanga Maaligai", No. 5, Car Street, Poonamalle, Chennai-600056 (T.N.), Mob.-09543068382

आवेदक छात्रवृत्ति योजना के आवेदन पत्र को वेबसाइट **WWW.RATNASANGH.COM** से भी डाउनलोड कर सकते हैं। छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें- मनीष जैन-09543068382

विचारणीय बिन्दु

श्री पीरचन्द चोरडिया

1. धनवान बनने के लिए स्वास्थ्य को जोखिम में न डालें। स्वास्थ्य उन संपत्तियों से श्रेष्ठ सम्पत्ति है।
2. अच्छा क्या है, यह सीखने के लिए एक हजार दिन भी अपर्याप्त हैं, लेकिन बुरा क्या है, यह सीखने के लिए एक घण्टा भी ज्यादा है।

-सुतरखाना की गली, माणक चौक, जोधपुर-342001 (राज.)

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 70 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 30 अगस्त से 06 सितम्बर 2016** तक रहेंगे। अत: देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **05 अगस्त 2016** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम......................जिला.............प्रान्त................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता...
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं...
   ....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं..
   ....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन..
   ....
6. समस्त जैन घरों की संख्या..
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?......................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?........................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स-2636763, मो.-9461522309 (संयोजक),09422775692 (सह-संयोजक), 8003615215(सचिव), 9414267824(पर्युषण संयोजक), 9462543360(का. प्रभारी), ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail.com**

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री महेन्द्रजी कांकरिया (अध्यक्ष), फोन नं. 09710999990 (मोबाइल) 09884554801 (संयोजक) 044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचिये

काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को पर्याप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियाँ आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन के पास, न्यू पावर हाऊस रोड, जोधपुर (राज.)
Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525
सम्पर्क : धीरिन्द्र कुम्भट
93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है,
जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

- आचार्य श्री हस्ती

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

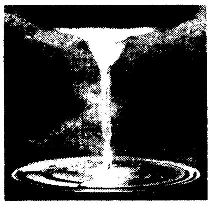
Electric Arc Furnace

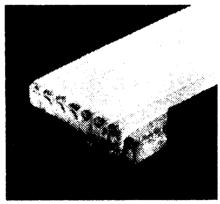
Billets

Rolling Mill

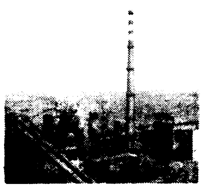
Captive Power Plant

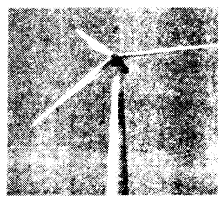
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय !   हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

Acharya Hasti Scholarship Fund

Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam..........

Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.

Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. - AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

- **For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)**

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस, चैन्नई।
युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई।
श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन	श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई।
श्रीमान् रिखबचंद सा सुखानी, रायचूर (कर्नाटक)	श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई।
	श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई।
	गुप्त सहयोगी, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

M. Harish Kumar Kavad - 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-600056** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई **(Mob. +91 95430 68382)**

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम्।।

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports
Paras Chand Hirawat
CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E), Mumbai-400 098 (MH)
Tel. : +91 22 4018 5000
Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
PACHPADRA-PALI-ERODE
K.L. ASSOCIATES
'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)
Mobile : 094141-22757
135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)
Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

BHANSALI GROUP
Dhanpatraj V. Bhansali
BHANSALI DEVELOPERS
Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E), Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O), E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS
Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)
FC51, Bharat-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex, Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)
Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429
Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates, C.A.
BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd.,
Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt.Ltd.
बसंत के जैन
अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai - 400020 (MH)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.
N.H. Studios ***Launches*** ***N.H. Jewells***
A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg, Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)
Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

।।श्री महावीराय नमः।।

।।जय गुरु हस्ती।। ।।जय गुरु हीरा-मान।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को आत्म-कल्याण के लिए स्वीकार करना चाहिए।
– भगवान महावीर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रात्रि भोजन त्याग के साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार करके ही अन्न ग्रहण करना चाहिए।
– आचार्य हस्ती

अहिंसा परमो धर्म

रात्रि भोजन सदोष व तामसी आहार होता है। समाधि का अभिलाषी साधक ऐसी तामसी आहार से दूर ही रहता है।
– आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या न करें, अगर त्याग नहीं है तो उसे दोष लग ही रहा है। अतः रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान करना आवश्यक है।
– उपाध्याय मान

सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ।।

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत – समस्त जैन समाज

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जुलाई, 2016
वर्ष : 74 ★ अंक : 07 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जुलाई, 2016 ★ आषाढ़, 2073

KALPA-TARU®

waterfront
at KALPATARU
riverside
PANVEL

Premium 2 & 3 BHK residences

022 3064 3065

Promoters: **M/S Kalpataru + Sharyans**
Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. I **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: + 91 22 3064 3065 I Fax: + 91 22 3064 3131 I Email: sales@kalpataru.com I visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी वाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, वापू वाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन